DEDICATED
with

ETERNAL, INFINITE & IMPERISHABLE
Divine **LOVE**

to

MOST BELOVED Incorporeal God Father **SHIVA**

and

Brahma Baba & Saraswati Mama

पुरूषार्थ

प्राप्ति
व
प्रालब्ध

Spiritual Research Index **Section B**

	Page
52 - लास्ट का पुरूषार्थ, वा लास्ट की सर्विस कौन सी है?	4
53 - कम्बाइन्ड रूप (combined form)	6
57 - फीचर्स (features) से फ्यूचर (future) दिखाना है	9
58 - बीज-रूप – बिन्दु-रूप स्थिति	13
59 - ‘नष्टो-मोह: स्मृति-स्वरूप’	16
60 - सम्पूर्ण स्टेज की परख	19
61 - रूहानी नशा और निशाना (spiritual intoxication and aim)	22
62 - महादानी बन, भिखारियों को महादान वा वरदान देने वाले बनो	25
63 - अखण्ड ज्योति	28
64 - ‘सन शोज फादर’ – ‘son shows Father’	31
65 - एकरस स्थिति – एकाग्रता	34
66 - संकल्प की शक्ति	36
67 - ‘मन जीते जगतजीत’ – ‘साइलेन्स की शक्ति’	39
68 - ‘नज़र से निहाल’ करने की विधि	42
69 - ज्वालामुखी योग	44
74 - ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता – Part 1	47
75 - फरिश्तेपन की निशानी - Part 2	50
76 – धर्मराजपुरी	52
77 - अति सो अन्त	54
80 - शान्ति स्वरूप के चुम्बक	55
81 - होली हंस बुद्धि, वृत्ति, दृष्टि और मुख	56
82 - अंगद समान अचल स्थिति	57
83 - अन्त:वाहक स्थिति	58
84 - देवता के 5 डिग्री	59
85 - शीतलता की शक्ति	60
86 - नष्टो-मोह: - चार बातों से न्यारे बनो	61
97 - अव्यक्त स्थिति स्वरूप द्वारा अव्यक्त मिलन का अनुभव	62
102 - ज्वालामुखी योग - संगठित स्वरूप की तपस्या	64
111 - स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी	66

लास्ट का पुरूषार्थ, वा लास्ट की सर्विस कौन सी है?

52] अन्तिम स्टेज का वरदानी रूप - अव्यक्ति स्थिति द्वारा साक्षात् मूर्त सो साक्षात्कार मूर्त; आजकल जो पुरूषार्थ चाहिए, वा सर्विस चाहिए, वह है वृत्ति से वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाना; एक ही सेकेण्ड में डबल कार्य हो, तब ही डबल ताज-धारी बनेंगे!

AV, Original 26.01.1971

तुम्हारी अन्तिम स्टेज है - साक्षात्कार मूर्त। **जैसा-जैसा साक्षात् मूर्त बनेंगे, वैसे ही साक्षात्कार मूर्त बनेंगे। जब सभी साक्षात् मूर्त बन जायेंगे, तो संस्कार भी सभी के साक्षात् मूर्त समान बन जायेंगे।** अपने को निमित्त समझकर कदम उठाना है। जैसे आप लोगों से ईश्वरीय स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों का साक्षात्कार होता है, वैसे अव्यक्ति स्थिति का भी उतना ही स्पष्ट साक्षात्कार हो। ऐसा प्लैन बनाना चाहिए, जो कोई भी महसूस करे - यह तो चलता फिरता फरिश्ता है। जैसे (ब्रह्मा बाप का) साकार रूप में, फरिश्तेपन का अनुभव किया ना। इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी होते भी, आकारी और निराकारी स्थिति का अनुभव कराते रहे। **आप लोगों का भी अन्तिम स्टेज का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देना चाहिए। कोई कितना भी अशान्त वा बेचैन घबराया हुआ आवे, लेकिन आपकी एक दृष्टि, स्मृति और वृत्ति की शक्ति, उनको बिल्कुल शान्त कर दे। भले कितना भी कोई व्यक्त भाव में हो, लेकिन आप लोगों के सामने आते ही, अव्यक्त स्थिति का अनुभव करे। आप लोगों की दृष्टि, किरणों जैसा कार्य करे।**

AV, Original 18.01.1975

अब तो समय-प्रमाण सप्ताह कोर्स के बजाय, अपने वरदानों द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों के द्वारा, सेकेण्ड का कोर्स बताओ; तब ही सर्व आत्माओं को रूहों की दुनिया में बाप के साथ ले जा सकेंगे। अशरीरी भव, निराकारी भव, निरहंकारी और निर्विकारी भव का वरदान, वरदाता द्वारा प्राप्त हो चुका है ना? अब ऐसे वरदान को साकार रूप में लाओ! अर्थात् **स्वयं को ज्ञान-मूर्त, याद-मूर्त और साक्षात्कार-मूर्त बनाओ। जो भी सामने आये, उसे - मस्तक द्वारा मस्तक-मणि दिखाई दे, नैनों द्वारा ज्वाला दिखाई दे, और मुख द्वारा वरदान के बोल निकलते हुए दिखाई दें।** जैसे अब तक बापदादा के महावाक्यों को साकार स्वरूप देने के लिए निमित्त बनते आये हो, अब इस स्वरूप को साकार बनाओ।

AV, Original 22.01.1976

वर्तमान लास्ट समय का फास्ट पुरूषार्थ यह है - एक ही समय में डबल कार्य करना है; वह कौनसा? अन्य के प्रति देना, अर्थात् स्वयं में भी वह कमी भरना, अर्थात् अन्य को बनाना ही बनना है। जैसे भक्ति-मार्ग में जिस वस्तु की कमी होती है, उसी वस्तु का दान करते हैं; तो दान देने से उस वस्तु की कभी कमी नहीं रहेगी। तो देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे ही जिस सब्जेक्ट में, जिस विशेषता में, जिस गुण की स्वयं में कमी महसूस करते हो, उसी विशेषता व गुण का दान करो अर्थात् अन्य आत्माओं के प्रति सेवा में लगाओ; तो सेवा का रिटर्न प्रत्यक्ष फल, वा मेवे के रूप में, स्वयं में अनुभव करेंगे। सेवा अर्थात् मेवा मिलना। अब इतना समय पुरूषार्थ का नहीं रहा है जो पहले स्वयं के प्रति समय दो, फिर अन्य की सेवा के प्रति समय दो। **फास्ट पुरूषार्थ अर्थात् स्वयं और अन्य आत्माओं की साथ-साथ सेवा हो। हर सेकेण्ड, हर संकल्प में स्वयं के कल्याण की, और विश्व के कल्याण की, साथ-साथ भावना हो। एक ही सेकेण्ड में डबल कार्य हो, तब ही डबल ताज-धारी बनेंगे।**

AV, Original 23.01.1976

मैजॉरिटी भक्तों की इच्छा सिर्फ एक सेकेण्ड के लिये भी लाइट देखने की है। तो वह इच्छा कैसे पूर्ण होगी? **वह इच्छा पूर्ण करने के साधन ब्राह्मणों के नयन हैं। इन नयनों द्वारा बाप के ज्योति-स्वरूप का साक्षात्कार हो। यह नयन, नयन नहीं दिखाई देंगे, अपितु लाइट का गोला दिखाई देंगे। जैसे आकाश में चमकते हुए सितारे दिखाई देते हैं, वैसे यह आंखों के तारे सितारे-समान चमकते हुए दिखाई दें।** लेकिन वह तब दिखाई देंगे, जब स्वयं लाइट-स्वरूप में स्थित रहेंगे। कर्म में भी लाइट अर्थात् हल्कापन, और स्वरूप भी लाइट - स्टेज भी लाइट हो। जब ऐसा पुरूषार्थ व स्थिति व स्मृति-स्वरूप विशेष आत्माओं का रहेगा, तो विशेष आत्माओं को देख, सर्व पुरूषार्थियों का भी यही पुरूषार्थ रहेगा।

AV, Original 07.01.1977

जितना लास्ट स्टेज़ (last stage) अथवा कर्मातीत स्टेज समीप आती जाएगी, उतना **आवाज़ से परे, शान्त स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी,** इस स्थिति में सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी। इसी अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं का सहज ही आह्वान कर सकेंगे। **यह पॉवरफुल (powerful) स्थिति 'विश्व-कल्याणकारी स्थिति' कही जाती है।** जैसे आजकल साईन्स के साधनों द्वारा सब चीजें समीप अनुभव होती जाती हैं - दूर की आवाज़, टेलीफोन के साधन द्वारा समीप सुनने में आती है, टी.वी. (दूर दर्शन) द्वारा दूर का दृश्य समीप दिखाई देता है, ऐसे ही साईलैन्स की स्टेज द्वारा, कितने भी दूर रहती हुई आत्मा को सन्देश पहुँचा सकते हो। **वो ऐसे अनुभव करेंगे, जैसे साकार में सम्मुख किसी ने सन्देश दिया है। दूर बैठे हुए भी आप श्रेष्ठ आत्माओं के दर्शन, और प्रभु के चरित्रों के दृश्य, ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि सम्मुख देख रहे हैं।** संकल्प के द्वारा दिखाई देगा, अर्थात् आवाज़ से परे संकल्प की सिद्धि का पार्ट (part) बजाएंगे। लेकिन **इस सिद्धि की विधि ज्यादा-से-ज्यादा अपने शान्त स्वरूप में स्थित होना है। इसलिए कहा जाता है – 'साइलेन्स इज़ गोल्ड' (silence is gold), यही गोल्डन ऐजड स्टेज (golden aged stage) कही जाती है।**

AV, Original 16.01.1977

शक्तियों को विशेष रूप में 'वरदानी' कह कर पुकारते हैं। तो **अभी अन्त के समय में महादानी से भी ज्यादा, वरदानी रूप की सेवा होगी।** स्वयं की अन्तिम स्टेज पॉवरफुल होने के कारण, सम्पन्न होने के कारण, ऐसी प्रजा आत्माएं थोड़े समय में, थोड़ी-सी प्राप्ति में भी बहुत खुश हो जाती हैं। स्वयं की संतुष्ट स्थिति होने के कारण, वे आत्माएं भी जल्दी संतुष्ट हो जाती हैं, और खुश हो कर बार-बार महान आत्माओं के गुण गायेंगी। **'कमाल है' यही आवाज़ चारों ओर अनेक आत्माओं के मुख से निकलेगा।**

AV, Original 03.05.1977

लास्ट का पुरूषार्थ, वा लास्ट की सर्विस कौन सी है? आजकल जो पुरूषार्थ चाहिए वा सर्विस चाहिए, वह है वृत्ति से वायुमण्डल को पॉवरफुल (powerful - शक्तिशाली) बनाना। क्योंकि मैजारिटी अपने पुरूषार्थ से आगे बढ़ने में असमर्थ होते हैं। तो ऐसे असमर्थ व कमज़ोर आत्माओं को अपने वृत्ति द्वारा बल देना, यह अति आवश्यक है। **अभी यह सर्विस चाहिए। क्योंकि वाणी से बहुत सुनकर समझते - अभी हम सब फुल हो गए हैं - कोई नई बात नहीं लगेगी। वाणी से नहीं लेने चाहते।** वृत्ति का डायरेक्ट (direct) कनेकशन वायुमण्डल से है। वायुमण्डल पॉवरफुल होने से, सब सेफ हो जाएंगे। **यही आजकल की विशेष सेवा है। वरदानी का अर्थ ही है - 'वृत्ति से सेवा करने वाले।'**

AV, Original 04.02.1980

कोर्स कराने का समय अभी गया, अभी फोर्स का कोर्स कराना है। कोर्स कराने वाले दूसरे भी तैयार हो गये हैं। इसलिए आप वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाने की सेवा करो। क्योंकि **दुनिया का वायुमण्डल दिन-प्रतिदिन मायावी बनता जायेगा, माया भी लास्ट चान्स में अपने यन्त्र-मन्त्र और जन्त्र, जो भी हैं वह सब यूज़ करेगी। अटैक (attack) तो करेगी ना? ऐसे विदाई नहीं लेगी। इसलिए ऐसे वायुमण्डल के बीच अपने सेवा स्थानों का वायुमण्डल बहुत ही अव्यक्त और शक्तिशाली बनाओ।** जैसे आपके जड़ मन्दिरों का वायुमण्डल कैसी भी आत्मा को अपनी तरफ खींचता है, अल्पकाल के लिए अशान्त, शान्त हो जाते हैं। **जब जड़ चित्रों के स्थान पर ऐसा वायुमण्डल है, तो चैतन्य सेवा स्थानों पर कैसा पॉवरफुल वायुमण्डल चाहिए? तो चेक करो - आज का वायुमण्डल शक्ति शाली रहा? जो भी आये वह व्यक्त और व्यर्थ बातों से परे हो जाए।**

कम्बाइन्ड रूप (combined form)

53] 'शिव-शक्ति' के कम्बाइन्ड रूप की स्थिति से सदा सेफ (safe) रहेंगे; महारथी - अर्थात् सदा साथ रहने वाले; संगमयुग कम्बाइण्ड रहने का युग है - इस समय तो बाप के साथ व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है - फिर सारे कल्प में नहीं होगा; सदा बाप के साथ कम्बाइन्ड, अर्थात् निरन्तर योगी!

AV, Original 13.09.1975
मैं फीमेल (female – कमज़ोर - बिना मेल के) हूँ, उस समय यह स्मृति भी राँग (wrong - गलत) है - अपने को अकेला कभी नहीं समझना चाहिए। अपने कम्बाइन्ड रूप, शिव-शक्ति के रूप की स्मृति में रहना चाहिए। सिर्फ शक्ति भी नहीं - शिव शक्ति। **कम्बाइन्ड रूप की स्थिति से - जैसे स्थूल में, दो को देखते हुए वार करने के लिए संकोच होता है - वैसे ही कम्बाइन्ड स्थिति का प्रभाव, उस समय के प्रकृति और व्यक्ति के ऊपर पड़ेगा, अर्थात् किसी भी प्रकार के वार करने में संकोच होगा। न सिर्फ व्यक्ति, लेकिन प्रकृति का तत्व भी संकोच करेगा, अर्थात् वह भी वार नहीं कर सकेगा। एक कदम की दूरी पर भी सेफ (सुरक्षित) हो जायेंगे।** शस्त्र होते हुए भी, शस्त्र शक्तिवान् होते हुए भी, निर्बल हो जायेंगे। लेकिन **उस सेकेण्ड परिवर्तन करने की शक्ति यूज़ (प्रयोग) करो कि मैं अकेली नहीं, मैं फीमेल नहीं, शिव-शक्ति हूँ और कम्बाइन्ड हूँ।**

AV, Original 25.01.1976
जब डायरेक्ट साथ निभाने का वायदा है, तो वायदे का फायदा उठाओ। इस समय तो बाप के साथ व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है, फिर सारे कल्प में नहीं होगा। जो सिर्फ अभी की ही प्राप्ति है, फिर होगी ही नहीं, तो उसका पूरा-पूरा लाभ उठाओ। **कोई भी बात हो, सदा बाबा ही याद रहे। इसको कहा जाता है 'निरन्तर योगी।'** हर कदम बाप की याद रहे, तो यह भी योग हुआ। ऐसे निरन्तर योगी हो - अथवा बनना है? **जब बाप स्वयं साथ देने का ऑफर (offer) कर रहे हैं, उस ऑफर को स्वीकार करना चाहिए ना? जब आधा कल्प, भक्ति-मार्ग में, बाप को मनाया, साथ देने के लिए; अभी तो बाप खुद ऑफर कर रहे हैं। तो ऑफर को स्वीकार करना चाहिये।** जैसे स्थूल में कोई किसी को कोई चीज़ ऑफर करे, वह स्वीकार न करे, तो इसको सभ्यता नहीं समझेंगे। यह इज्जत कहेंगे? **यह तो गॉड (God) की ऑफर है। सदा बाप के साथ, अर्थात् निरन्तर योगी।**

AV, Original 10.01.1979
महारथियों की अवस्था का यादगार चित्र भी है - **हरेक गोपी के साथ, गोपी वल्लभ का चित्र देखा है। हरेक गोपी के मुख से यही निकलता कि 'मेरा गोपी वल्लभ'। तो ऐसे सदा साथ का चित्र - यह है स्थिति का यादगार चित्र। एक दो से अलग नहीं - सदा साथ है।** बाप पर पूरा, हरेक का अधिकार है। ऐसे अधिकारियों का यह चित्र है, जिन्होंने सदा के लिए बाप को अपना साथी बना लिया है - यह है महारथियों की स्थिति का चित्र। **महारथी, अर्थात् सदा साथ रहने वाले।**

AV, Original 07.03.1981
जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं, लेकिल बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से, कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। **कभी भी कोई ऐसी बात सामने आवे, तो बापदादा की स्मृति रखते - अपना बोझ बाप के ऊपर रख दो, तो हल्के हो जायेंगे। क्योंकि बाप बड़ा है, और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया, तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे।**

AV, Original 16.11.1981
अगर याद निरन्तर और सम्पूर्ण स्नेह, सिवाए बाप के और कोई नजर ही नहीं आता, **सदा बाप और आप भी कम्बाइन्ड हैं, तो माला में भी कम्बाइन्ड दाने के साथ-साथ आप भी कम्बाइन्ड होंगे। अर्थात् साथ-साथ मिले हुए होंगे। सदा सब बातों में नम्बर वन**

(number one) होंगे। तो माला में भी नम्बरवन होंगे। जैसे लौकिक पढ़ाई में फर्स्ट डिवीजन, सेकेण्ड, थर्ड होती हैं, वैसे यहाँ भी महारथी, घोड़े सवार और पैदल, तीन डिवीजन हैं।

AV, Original 23.05.1983
सदा हल्के रहो। सदा युगल रूप हो - दूसरी युगल क्या करेंगे? कभी संकल्प आता है - बीमार पड़ते हो, तब आता है? **जिस सम्बन्ध की याद आये, उसी सम्बन्ध से बाप को याद करो - तो बीमारी में सोये-सोये भी, ऐसा अच्छा खाना बना लेंगे, जैसे दूसरा बना गया। तो सदा साथ रहना - अकेला हूँ नहीं - कम्बाइण्ड हूँ।** आप और बाप, दोनों कम्बाइण्ड हो - अलग कोई कर नहीं सकता, यह चैलेन्ज करो। चैलेन्ज करने वाले हो ना - कि घबराने वाले?

AV, Original 24.03.1985
संगमयुग कम्बाइण्ड रहने का युग है। **ऐसी वण्डरपुल जोड़ी तो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। चाहे लक्ष्मी नारायण भी बन जाएँ, लेकिन ऐसी जोड़ी तो नहीं बनेगी ना! इसलिए संगमयुग का कम्बाइण्ड रूप है। एक सेकण्ड भी अलग नहीं हो सकता! अलग हुआ और गया!** अनुभव है ना ऐसा? फिर क्या करते? कभी सागर के किनारे चले जाते, कब छत पर, कब पहाड़ों पर चले जाते। मनन करने के लिए जाओ, वह अलग बात है। लेकिन बाप के बिना, अकेले नहीं जाना है। **जहाँ भी जाओ साथ जाओ। यह ब्राह्मण जीवन का वायदा है। जन्मते ही यह वायदा किया है ना? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। ऐसे नहीं जंगल में, वा सागर में चले जाना है। नहीं! साथ रहना है, साथ चलना है।**

AV, Original 27.03.1985
संकल्प मात्र भी किसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव है, तो वह झुकाव सहारा बन जाता है। तो साकार रूप में सहयोगी होने के कारण, समय पर, बाप के बदले पहले वह याद आयेगा। दो चार मिनट भी अगर स्थूल सहारा स्मृति में आया, तो बाप का सहारा उस समय याद होगा? **दूसरी बात - अगर दो चार मिनट के लिए भी याद की यात्रा का लिंक टूट गया, तो टूटने के बाद जोड़ने की फिर मेहनत करनी पड़ेगी। क्योंकि निरन्तर में अन्तर पड़ गया ना!**

AV, Original 25.11.1985
निश्चयबुद्धि कभी भी किसी भी कार्य में अपने को अकेला अनुभव नहीं करेंगे। सभी एक तरफ हैं, मैं अकेला दूसरी तरफ हूँ - चाहे मैजारिटी दूसरे तरफ हों, और विजयी रत्न सिर्फ एक हो, फिर भी वह अपने को एक नहीं, लेकिन बाप मेरे साथ है, इसलिए **बाप के आगे अक्षौहिणी भी कुछ नहीं है। जहाँ बाप है, वहाँ सारा संसार बाप में है। बीज है, तो झाड़ उसमें है ही।** विजयी निश्चयबुद्धि आत्मा सदा अपने को सहारे के नीचे समझेंगे। सहारा देने वाला दाता मेरे साथ है - यह नैचरल अनुभव करता है। ऐसे नहीं कि जब समस्या आवे, उस समय बाप के आगे भी कहेंगे – 'बाबा आप तो मेरे साथ हो ना? आप ही मददगार हो ना? बस, अब आप ही हो!' मतलब का सहारा नहीं लेंगे। 'आप हो ना?' - यह 'हो ना' का अर्थ क्या हुआ? निश्चय हुआ? बाप को भी याद दिलाते हैं कि 'आप सहारा हो'! **निश्चयबुद्धि कभी भी ऐसा संकल्प नहीं कर सकते। उनके मन में जरा भी बेसहारे, वा अकेलेपन का संकल्प मात्र भी अनुभव नहीं होगा।**

AV, Original 20.02.1987
कई बच्चों को सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आगे बढ़ने में मेहनत लगती है। इसलिए बीच-बीच में कोई को कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है - और कम्पनी भी आवश्यक है, यह भी संकल्प आता है। संन्यासी तो नहीं बनना है, लेकिन **आत्माओं की कम्पनी में रहते, बाप की कम्पनी को भूल नहीं जाओ। नहीं तो समय पर उस आत्मा की कम्पनी याद आयेगी, और बाप भूल जायेगा।** तो समय पर धोखा मिलना सम्भव है - क्योंकि साकार शरीरधारी के सहारे की आदत होगी, तो अव्यक्त बाप और निराकार बाप पीछे याद आयेगा, पहले शरीरधारी आयेगा। **अगर किसी भी समय पहले साकार का सहारा याद आया, तो नम्बरवन वह हो गया, और दूसरा नम्बर बाप हो गया! जो बाप को दूसरे नम्बर में रखते, तो उसको पद क्या मिलेगा - नम्बर वन (एक) वा टू (दो)? सिर्फ सहयोग लेना, स्नेही रहना, वह अलग चीज़ है - लेकिन सहारा बनाना, अलग चीज़ है। यह बहुत गुह्य बात है।**

AV, Original 13.03.1990

जैसे शरीर के अंदर नस-नस में ब्लड समाया हुआ है, ऐसे आत्मा में निश-पल - अर्थात् हर पल याद समाई हुई है। इसको कहते हैं दिल के स्नेह सम्पन्न, निरंतर याद। जैसे भक्त आत्माएं बाप के लिए कहती हैं – 'जहाँ देखते हैं, तू ही तू है'। ऐसे बाप के स्नेही समान आत्माओं को जो भी देखे कि - इन्हों की दृष्टि में, बोल में, कर्म में परमात्मा बाप ही अनुभव होता है।

AV, Original 02.12.1993

आप विशेष आत्मायें तो हैं ही कम्बाइन्ड ना। अलग हो ही नहीं सकते। लोग कहते हैं, 'जिधर देखते हैं, उधर तू ही तू है' - और आप कहते हो, 'जो करते हैं, जहाँ जाते हैं, बाप साथ ही है, अर्थात् तू ही तू है'। **जैसे कर्तव्य साथ है, तो हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। इसलिये गाया हुआ है करनकरावनहार। तो कम्बाइन्ड हो गया ना - करनहार और करावनहार।** तो आप सबकी स्थिति क्या है? कम्बाइन्ड है ना? **करनकरावनहार - करनहार के साथ है ही, करावनहार अलग नहीं है। इसको ही कम्बाइन्ड स्थिति कहा जाता है।**

फीचर्स (features) से फ्यूचर (future) दिखाना है

57] त्रिमूर्ति लाइट्स (lights) का साक्षात्कार एक-एक से होना है; तीसरे नेत्र का साक्षात्कार मस्तक से होगा; स्पष्ट साक्षात्कार कराने के लिए स्थिर बुद्धि, 'एकटिक' स्थिति आवश्यक है; फीचर्स से फ्यूचर दिखाना - यही अलौकिक आत्माओं की अलौकिकता है!

AV, Original 06.12.1969
और म्यूज़ियम (museum) तो बहुत बनाये, लेकिन अब एक-एक को अपने चेहरे को चैतन्य म्यूजियम बनाना है। इस चैतन्य चेहरे के म्यूज़ियम में कितने चित्र हैं? इस चेहरे के म्यूज़ियम में कौन-कौन से चित्र फिट (fit) करेंगे? म्यूज़ियम में पहले चित्रों की फिटिंग (fitting) करते हैं, बाद में डेकोरेशन (decoration) होता है, फिर उद्घाटन कराना होता है, फिर ओपीनियन (opinion) लेना होता है। **तो आप के इस चैतन्य म्यूज़ियम में तीन मुख्य चित्र हैं - भृकुटी, नयन और मुख। इन द्वारा ही आपकी स्मृति, वृत्ति, दृष्टि, और वाणी का मालूम पड़ता है। जैसे त्रिमूर्ति, लक्ष्मी नारायण, और सीढ़ी - यह तीन मुख्य चित्र हैं ना। इसमें सारा ज्ञान आ जाता है। वैसे ही इस चेहरे के अन्दर, यह चित्र अनादि फिट हैं। इनकी ऐसी डेकोरेशन हो, जो दूर से यह चित्र अपने तरफ आकर्षण करें।** आकर्षण होने के बिना रह नहीं सकेंगे। आप लोग म्यूज़ियम बनाते हो, तो कोशिश करते हो ना कि चित्र ऐसे डेकोरेट (decorated) हो जो दूर से आकर्षण करे? किसको बुलाना भी न पड़े। वैसे ही, आप हरेक को अपना म्यूज़ियम ऐसा तैयार करना है।

AV, Original 19.06.1970
त्रिमूर्ति वंशी, त्रिमूर्ति बच्चों की तीन प्रकार की लाइट्स (lights) का साक्षात्कार होता है। वह कौन सी लाइट्स हैं?
एक तो लाइट का साक्षात्कार होता है, नयनों से। कहते हैं ना कि नयनों की ज्योति। नयन ऐसे दिखाई पड़ेंगे, जैसे नयनों में दो बड़े बल्ब जल रहे हैं।
दूसरी होती है, मस्तक की लाइट।
तीसरी होती है, माथे पर लाइट का क्राउन।
अभी यह कोशिश करना है, जो तीनों ही लाइट्स का साक्षात्कार हो। **कोई भी सामने आये तो उनको यह नयन बल्ब दिखाई पड़े। ज्योति ही ज्योति दिखाई दें। जैसे अंधियारे में सच्चे हीरे चमकते हैं ना। जैसे सर्च-लाइट (search-light) होती है, बहुत फ़ोर्स से और अच्छी रीति फैलाते हैं – इस रीति से मस्तक के लाइट्स का साक्षात्कार होगा। और माथे पर जो लाइट का क्राउन है, वह तो समझते हो। ऐसे त्रिमूर्ति लाइट्स का साक्षात्कार एक-एक से होना है।** तब कहेंगे, यह तो जैसे फ़रिश्ता है। साकार में नयन, मस्तक, और माथे के क्राउन के साक्षात्कार स्पष्ट होंगे। नयनों तरफ देखते-देखते लाइट देखेंगे। तुम्हारी लाइट को देख दूसरे भी जैसे लाइट (हल्का) हो जायेंगे। **कितनी भी मन से, वा स्थिति में, भारीपन हो, लेकिन आने से ही हल्का हो जाए। ऐसी स्टेज अब पकडनी है। क्योंकि आप लोगों को देखकर और सभी भी अपनी स्थिति ऐसी करेंगे।**

AV, Original 29.06.1970
जैसी एम (aim), वैसा ऑब्जेक्ट (object) होता है। तो एम को श्रेष्ठ रखेंगे ताकि प्राप्ति भी श्रेष्ठ होगी। **अब तीसरी आँख सदैव ऊपर निशाने पर एकटिक लटकी हुई होनी चाहिए। जैसे कोई मग्न अवस्था में होता है, तो उनके नयन एकटिक हो जाते हैं ना। वैसे यह तीसरा नेत्र, दिव्य बुद्धि का - यह नेत्र भी सदैव एकटिक, एकरस रहे।** 'एकटिक' अर्थात् एक में ही टिका हुआ, मग्न-रूप देखने में आये। तीसरे नेत्र का साक्षात्कार कैसे होगा? मस्तक से। मस्तक में झलक, नयनों में फलक देखने में आएगी। इससे भी पता पड़ेगा कि इनका तीसरा नेत्र मग्न है, या युद्धस्थल में है। **जब आँख थोड़ी ठीक नहीं होती है, तो पलक घड़ी-घड़ी नीचे ऊपर होती रहती है।** यह भी तीसरा नेत्र अगर यथार्थ रीति से ठीक होगा, अर्थात् दिव्य बुद्धि यथार्थ रीति से स्वच्छ होगी, तो एकटिक होगा। आँख में कोई किचड़ा आदि पड़ जाता है, तो क्या होता है? पलकें हिलने लगती हैं। **कीचड़े की निशानी है हिलना। यथार्थ तंदुरुस्ती की निशानी है स्थिर हो जाना। वैसे यह तीसरा नेत्र सदैव एकटिक हो।** यह साक्षात्कार आप के मस्तक से होगा, नयनों से होगा। तो चेक करो हमारा तीसरा नेत्र जल्दी-जल्दी बन्द होता है और खुलता है, व सदैव खुला ही रहता है!

AV, Original 29.06.1970 (continued)
कोई भी याद में मस्त हो जाते हैं, तो भी आंखें एकटिक हो जाती हैं - तो यहाँ भी सम्पूर्ण स्थिति में वही टिक सकेगा, जो एक ही याद में मग्न होगा। नहीं तो नयनों के माफिक बंद होते खुलते रहेंगे - एकटिक नहीं हो सकेंगे। अगर कोई किचड़ा हो तो जल्दी निकालो। नहीं तो हंसी की बात सुनाएं। समझो, आपका कोई साक्षात्कार करता है, और आपकी मूर्त नीचे ऊपर होती रहेगी तो क्या साक्षात्कार करेंगे? **जैसे फोटो निकालने के समय हिलना बंद कराते हैं ना? अगर हिला तो फ़ोटो ख़राब। वैसे ही आपकी अवस्था हिलती रहेगी तो क्या साक्षात्कार होगा? जैसे फोटो निकालते समय अपने को कितना स्थिर करते हो, वैसे ही सदैव समझो कि हमारे भक्त हर समय हमारा साक्षात्कार कर रहे हैं। तो साक्षात्कार मूर्त अर्थात् स्थिर मूर्त होंगे।** नहीं तो भक्तों को साक्षात्कार स्पष्ट नहीं होगा। स्पष्ट साक्षात्कार कराने के लिए स्थिरबुद्धि, एकटिक स्थिति आवश्यक है। समझा?

AV, Original 31.11.1971
नैन रूहानियत का अनुभव करायें, चलन बाप के चरित्रों का साक्षात्कार कराये, मस्तक मस्तक-मणि का साक्षात्कार कराये; यह अव्यक्ति सूरत दिव्य, अलौकिक स्थिति का प्रत्यक्ष रूप दिखाये, आपकी अलौकिक वृत्ति, कोई भी तमोगुणी वृत्ति वाले को, अपने सतोगुणी वृत्ति की स्मृति दिलाये। इसको कहा जाता है परिवर्तन, वा इसको ही सर्विसएबल कहा जाता है।

AV, Original 27.04.1972
अगर चियरफुल (cheerful) नहीं होता, तो सक्सेसफुल (successful) भी नहीं होंगे। केयरफुल (careful) और चियरफुल है, तो सक्सेसफुल अर्थात् लक्की (lucky) है। तो यह तीन बातें अपने आप में देखो। अगर तीनों ही ठीक परसेन्टेज में हैं, तो समझो हम लक्की और लवलीएस्ट (luckiest) दोनों हैं; अगर परसेन्टेज में कमी है तो फिर यह स्टेज नहीं हो सकती है। अब समझा, निशानी क्या है? मुख से ज्ञान सुनाना, इतना प्रभाव नहीं डाल सकता है!

AV, Original 09.05.1972
किसी भी आत्मा को अपने फीचर्स (features) से उस आत्मा का, वा अपना, फ्यूचर (future) दिखा सकते हो? **लेक्चर (lecture) से फीचर्स दिखाना तो आम बात है, लेकिन फीचर्स से फ्यूचर दिखाना - यही अलौकिक आत्माओं की अलौकिकता है।** ऐसे मेरे फीचर्स बने हैं - यह दर्पण में देखते हो? **जैसे स्थूल सूरत है, श्रृंगार से अगर सूरत में कोई देखे, तो पहले विशेष अटेन्शन बिन्दी के ऊपर जायेगा। वैसे, जो बिन्दी-स्वरूप में स्थित रहते हैं, अर्थात् अपने को इन धारणाओं के श्रृंगार से सजाते हैं, ऐसे श्रृंगारी हुई मूरत के तरफ देखते हुए, सभी का ध्यान किस तरफ जायेगा? मस्तक में आत्मा बिन्दी तरफ।** ऐसे ही कोई भी आत्मा आप लोगों के सम्मुख जब आती है, तो उन्हों का ध्यान आपके अविनाशी तिलक की तरफ आकर्षित हो। **वह भी तब होगा जब स्वयं सदा तिलकधारी हैं। अगर स्वयं ही तिलकधारी नहीं, तो दूसरों को आपका अविनाशी तिलक दिखाई नहीं दे सकता!**

AV, Original 25.05.1973
अपने फीचर्स (features) द्वारा फ्यूचर (future) का साक्षात्कार करने के लिए, जैसे भिन्न-भिन्न पॉइन्ट्स (points) सोचते हुए, स्टेज तैयार करते हो - वैसे ही **इस सूरत के बीच, जो भी मुख्य कर्मेन्द्रियाँ हैं, उन कर्मेन्द्रियों द्वारा बाप के चरित्र, बाप के कर्त्तव्य का साक्षात्कार हो, बाप के गुणों का साक्षात्कार हो।** यह भिन्न-भिन्न पॉइन्ट्स तैयार करनी पड़े।
नयनों द्वारा नजर से निहाल कर सको। अर्थात् नयनों की दृष्टि द्वारा उन आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और कृति चेन्ज कर दो।
मस्तिष्क द्वारा अपने व सभी के स्वरूपों का स्पष्ट साक्षात्कार कराओ।
होंठों द्वारा रूहानी मुस्कराहट से अविनाशी खुशी का अनुभव कराओ।
सारे **चेहरे द्वारा** वर्तमान श्रेष्ठ पोजीशन और भविष्य पोजीशन (position) का साक्षात्कार कराओ।
अपने श्रेष्ठ **संकल्प द्वारा** अन्य आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों, व विकल्पों की बहती हुई बाढ़ से, और अपनी शक्ति से, अल्प समय में किनारा कर दिखाओ। व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तित कर डालो।
अपने एक **बोल द्वारा** अनेक समय की तड़पती हुई आत्माओं को अपने निशाने का, अपनी मंजिल के ठिकाने का अनुभव कराओ। वह एक बोल कौन-सा? 'शिव बाबा'। शिव बाबा कहने से ही ठिकाना व निशाना मिल जाय।

AV, Original 23.09.1973

पहले तो अपनी मूर्त की चैतन्य प्रदर्शनी लगानी पड़ेगी। जिसमें **नैन कमल समान दिखाई दें, होठों पर रूहानी मुस्कराहट दिखाई दे, और मस्तक से आत्मा की सूरत दिखाई दे।** तो क्या ऐसी अपनी मूर्त को सजाया है? यह प्रदर्शनी भी तैयार कर रहे हो, या सिर्फ स्टॉल (stall) की प्रदर्शनी तैयार कर रहे हो? इसका इनाम भी मिलेगा ना? **आप आपस में एक-दो को स्टॉल की सजावट का इनाम देंगे, और बापदादा इनाम देंगे चैतन्य प्रदर्शनी की सजावट का, इसलिये अब डबल इनाम मिलेगा।** किस-किस ने अपनी चैतन्य प्रदर्शनी, व अपने मस्तक के बैनर (banner) द्वारा सर्विस की - उसका इनाम देंगे। अब रिजल्ट (result) देखेंगे। रिजल्ट तो आनी है ना? **तीन नम्बर्स को इनाम मिलेगा - फर्स्ट, सेकेण्ड और थर्ड।**

AV, Original 05.09.1975

हद के एक्टर्स जब हद के अन्दर अपने एक्ट करते दिखाई देते हैं, तो लाइट के कारण अति सुन्दर स्वरूप दिखाई देते हैं। वही एक्टर, साधारण जीवन में, साधारण लाइट के अन्दर पार्ट बजाते हुए कैसे दिखाई देते हैं? रात-दिन का अन्तर दिखाई देता है ना? **लाइट का फोकस (focus) उनके फीचर्स (features) को ही परिवर्तित कर देता है। ऐसे ही बेहद ड्रामा के आप हीरो-हीरोइन एक्टर्स, अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट (act) करने से क्या दिखाई देंगे? अलौकिक-फरिश्ते!** साकारी की बजाय सूक्ष्म वतनवासी नजर आयेंगे। साकारी होते हुए भी आकारी अनुभव होंगे। हर एक्ट हरेक को स्वत:ही आकर्षित करने वाला होगा!

AV, Original 26.11.1979

जैसे फोटो निकालते हैं, अगर बादल आगे आ जाएं, तो फोटो ठीक निकलेगा? फीचर्स ही नहीं दिखाई देंगे - ऐसे ही अगर चमकते हुए सितारे के आगे बादल आ जाएं, तो साक्षात्कार कैसे कराएंगे? आप तो बाप को प्रत्यक्ष कराने वाले, अर्थात् स्वयं द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाले हो। बादलों के बीच से कैसे साक्षात्कार होगा? तो साक्षात्कार कब करायेंगे? क्या जब विनाश होगा तब? अभी ही ऐसा बनना पड़ेगा! **अगर बहुत समय का बादलों को दूर करने का अभ्यास नहीं होगा, तो बादल भी उसी समय लास्ट (last) घड़ी आयेंगे। साक्षात्कार के लिए खड़े हों, और बादल आ जाएं, तो सारा प्रोग्राम ही अपसेट (upset) हो जायेगा।** अब ऐसे अभ्यासी बनो जो दूर से ही बादल भाग जाएं।

AV, Original 24.12.1979

आँख खोली तो अब भी है - लेकिन अभी बीच-बीच में माया की धूल पड़ जाती है, तो आँखें हिलती रहती हैं। **जैसे स्थूल आँखों में भी धूल पड़ जाती है, तो आँख का क्या हाल होता है? एकाग्र रीति से दृष्टि नहीं दे सकेंगे।** सारा विश्व आप जहान के आँखों की एक सेकेण्ड की दृष्टि लेने के लिए इन्तज़ार में है कि कब हमारे इष्ट देवों वा देवियों की हमारे ऊपर दृष्टि पड़ेगी - जो हम नज़र से निहाल हो जायेंगे। **ऐसे नज़र से निहाल करने वाले अगर स्वयं अपनी आँख मलते रहेंगे, तो नज़र से निहाल कैसे करेंगे? नज़र से निहाल होने वालों की लम्बी क्यू (queues) हैं। इसलिए सदा सम्पूर्णता की आँख खुली रहे।** बाप दादा जहान के नूरों का वन्डरफुल दृश्य देखते हैं। जहान के नूर भी अपने नयनों को एकाग्र नहीं रख सकते। **कोई निहाल करते-करते हल्के से झुटके भी खा लेते हैं। अब झुटके वाले नज़र से निहाल कैसे करेंगे? संकल्पों का घुटका ही झुटका है। आपके भक्त आपको देख रहे हैं - और दर्शनीय मूर्त झुटके खा रहे हैं - तो भक्तों का क्या हाल होगा?** इसलिए आँखों का मलना और झुटका खाना बन्द करना पड़े, तब दर्शनीय मूर्त बन सकते हो।

AV, Original 01.03.1990

बोलने की सेवा तो यथाशक्ति समय प्रमाण ही करेंगे, लेकिन फ़रिश्ता फ्यूचर के फीचर्स हों। संगमयुग का फ्यूचर फ़रिश्ता है, वह फीचर्स में दिखाई दे, तो कितनी अच्छी सेवा होगी? जब जड-चित्र फीचर्स द्वारा अंतिम जन्म तक भी सेवा कर रहे हैं, तो आप चैतन्य श्रेष्ठ आत्माएं, अपने फीचर्स द्रारा सेवा सहज कर सकते हो। आपके फीचर्स में सदा सुख की, शान्ति की, ख़ुशी की झलक हो। कैसी भी दुखी, अशांत आत्मा, परेशान आत्मा, आपके फीचर्स द्वारा अपना श्रेष्ठ फ्यूचर बना सकती है। ऐसा अनुभव है ना? अमृतवेले अपने फीचर्स को चेक करो। **जैसे शरीर के फीचर्स को चेक करते हो ना, वैसे फ़रिश्ता फीचर्स में खुशी का, शान्ति का, सुख का शृंगार ठीक है - यह चेक करो तो स्वत: और सहज सेवा होती रहेगी।**

AV, Original 14.12.1997

टीचर्स अर्थात् सदा अपने फीचर्स द्वारा हर आत्मा की सेवा करे। बोलने का टाइम नहीं हो, कोई हर्जा नहीं। **एक सेकण्ड में अपने हर्षित दिल से, हर्षित मन से, परमात्म स्नेह से (आत्मा का स्नेह नहीं), परमात्म स्नेह द्वारा, दृष्टि द्वारा उसको भी हर्षित बना दे।** टीचर्स अगर कभी परेशान होते भी हो, गलती से - होना नहीं चाहिए - लेकिन गलती से हो भी जाते हो, तो फौरन बापदादा से कनेक्शन जोड़कर, रूहरिहान करके उसी समय अपने को ठीक करो।

AV, Original 17.03.2007

टीचर्स कच्चे नहीं बनना। **टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स से फ्यूचर दिखाने वाली। अभी संगमयुग का फ्यूचर है - फरिश्ता भव। और भविष्य का फीचर्स है - देवता भव।** तो जो भी सेवाधारी ग्रुप आया है, उनको डबल नशा है कि फरिश्ता सो देवता बनना ही है!

बीज-रूप – बिन्दु-रूप स्थिति

58] स्वयं भी बिन्दु रूप बनो, याद भी बिन्दु बाप को करो; बिन्दु बाप के साथ, बिन्दु बनकर अब घर जाना है; अनादि, अविनाशी है ही बिन्दु; एक बाप बिन्दू में सारा संसार समाया हुआ है; बिन्दु थे, और अब बिन्दु स्थिति में स्थित हो, बिन्दु बाप समान बन, रूहानी मिलन मनाना है!

AV, Original 24.07.1969
अब सब बच्चे अपने को आत्मा समझ कर बैठो - सामने किसको देखें? आत्माओं के बाप को। इस स्थिति में रहने से, व्यक्त से न्यारे होकर, अव्यक्त स्थिति में रह सकेंगे। **मैं आत्मा बिन्दु रूप हूँ, क्या यह याद नहीं आता है? बिन्दी रूप होकर बैठना नहीं आता? ऐसे ही अभ्यास को बढ़ाते जाओगे, तो एक सेकेण्ड तो क्या कितने ही घंटों इसी अवस्था में स्थित होकर, इस अवस्था का रस ले सकते हो। इसी अवस्था में स्थित रहने से फिर बोलने की जरूरत ही नहीं रहेगी। बिन्दु होकर बैठना कोई जड़ अवस्था नहीं है।** जैसे बीज में सारा पेड़ समाया हुआ है, वैसे ही मुझ आत्मा में बाप की याद समाई हुई है? ऐसे होकर बैठने से सब रसनायें आयेंगी। और साथ ही यह भी नशा होगा कि हम किसके सामने बैठे हैं! बाप हमको भी अपने साथ कहाँ ले जा रहे हैं! बाप तुम बच्चों को अकेला नहीं छोड़ता है।

AV, Original 07.06.1970
बिन्दु रूप में अगर ज्यादा नहीं टिक सकते, तो इसके पीछे समय न गंवाओ। बिन्दी रूप में तब टिक सकेंगे, जब पहले शुद्ध संकल्प का अभ्यास होगा। अशुद्ध संकल्पों को, शुद्ध संकल्पों से हटाओ। जैसे कोई एक्सीडेंट होने वाला होता है - ब्रेक नहीं लगती, तो मोड़ना होता है। बिन्दी रूप है ब्रेक। अगर वह नहीं लगता, तो व्यर्थ संकल्पों से बुद्धि को मोड़कर, शुद्ध संकल्पों में लगाओ। कभी-कभी ऐसा मौका होता है जब बचाव के लिए ब्रेक नहीं लगायी जाती है, मोड़ना होता है। कोशिश करो कि सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सिवाए, कोई व्यर्थ संकल्प न चले। जब यह सब्जेक्ट पास करेंगे, तो फिर बिन्दी रूप की स्थिति सहज रहेगी।

AV, Original 10.12.1978
नज़र एक बिन्दु की तरफ ही हो - **जैसे यादगार रूप में भी दिखाया है कि मछली के तरफ नज़र नहीं थी, लेकिन आंख की भी बिन्दु में थी। तो मछली है विस्तार - और सार है बिन्दु।** तो विस्तार को नहीं देखा, लेकिन सार अर्थात् एक बिन्दु को देखा। इसी प्रकार, अगर कोई भी बातों के विस्तार को देखते, तो विघ्नों में आते - और सार अर्थात् एक बिन्दु रूप स्थिति बन जाती, और फुलस्टाप (full-stop) अर्थात् बिन्दु लग जाती। **कर्म में भी फुलस्टाप अर्थात् बिन्दु। स्मृति में भी बिन्दु अर्थात् बीजरूप स्टेज हो जाती। यह विशेष अभ्यास करना है।** विस्तार को देखते भी न देखें, सुनते हुए भी न सुनें - यह प्रैक्टिकल अभी से चाहिए। **तब अन्त के समय चारों ओर की हलचल की आवाज़ जो बड़ी दु:खदायी होगी, दृश्य भी अति भयानक होंगे - अभी की बातें उसकी भेंट में तो कुछ नहीं हैं - अगर अभी से ही देखते हुए न देखना, सुनते हुए न सुनना यह अभ्यास नहीं होगा - तो अन्त में इस विकराल दृश्य को देखते, एक घड़ी के पेपर में सदा के लिए फेल (fail) मार्क्स मिल जावेगी। इसलिए यह भी विशेष अभ्यास चाहिए।**

AV, Original 11.11.1981
सभी बच्चों को बापदादा सदा सहजयोगी भव का वरदान दे रहे हैं। सिर्फ एक बिन्दी को याद करो। सबसे सरल मात्रा बिन्दी है। तो बापदादा सिर्फ बिन्दी का ही हिसाब बताते हैं। **स्वयं भी बिन्दु रूप बनो, याद भी बिन्दु को करो - और ड्रामा के हर दृश्य को जाने, करने के बाद, बिन्दु की मात्रा लगा दो। एक बिन्दु की मात्रा में आप, बाप और रचना, सब आ जाता है। तो जानना ही क्या है - 'बिन्दु'! करना भी क्या है -'बिन्दु को याद'!** इसी बिन्दु की मात्रा के महत्व को जान सदा सहजयोगी बन सकते हो। कितना भी बड़ा विस्तार है, लेकिन समाया हुआ बिन्दु में है। बीज बिन्दु - उसी में सारा वृक्ष समाया हुआ है। आत्मा बिन्दु - उसी में 84 जन्मों के संस्कार समाये हुए हैं।

AV, Original 11.11.1981 (continued)
5 हजार वर्ष के ड्रामा को अब संगम के अन्त में समाप्त कर रहे हो, अब ड्रामा का चक्र पूरा हुआ - अर्थात् जो चक्र बीत चुका, उसको फुल स्टाप अर्थात् बिन्दी लगाये, बिन्दी बन, अब घर जाना है। बिन्दु के साथ बिन्दु बनकर जाना है। घर भी सर्व बिन्दुओं का घर है। संकल्प, कर्म, संस्कार सब मर्ज, अर्थात् बिन्दी लगी हुई है। समाप्ति की मात्रा है ही बिन्दु। सर्वगुण, सर्वज्ञान के खज़ानों के सागर … लेकिन सागर भी है - बिन्दु! सम्बन्ध और सम्पर्क में भी आओ, तो सर्व के मस्तक में क्या चमक रहा है – बिन्दु! सर्व कार्यकर्ता कौन हैं? बिन्दु ही हैं ना? चाहे धरनी से चन्द्रमा तक पहुँचे, तो भी बिन्दु पहुँचा। चाहे आप साइलेन्स की शक्ति से 3 लोकों तक पहुँचते, तो भी कौन पहुँचता - बिन्दु! साइंस की शक्ति या साइलेन्स की शक्ति, निमार्ण करने की शक्ति वा निर्वाण में जाने की शक्ति - है तो बिन्दु ना! बीज से इतना सारा वृक्ष विस्तार को पाता, लेकिन विस्तार के बाद समाता किसमे है? बीज अर्थात् बिन्दु में। **तो अनादि, अविनाशी है ही बिन्दु!**

AV, Original 06.04.1982
ऐसे विस्तार में न जाकर, विस्तार को बिन्दी लगाए, बिन्दी में समा दो। बिन्दी बन जाओ, बिन्दी लगा दो। बिन्दी में समा जाओ। तो सारा विस्तार, सारी जाल सेकण्ड में समा जायेगी। और समय बच जायेगा। मेहनत से छूट जायेंगे। बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन हो जायेंगे। तो सोचों जाल में, बेहोश होने की स्थिति अच्छी - वा बिन्दी बन, बिन्दी में लवलीन होना अच्छा?

AV, Original 17.04.1983
इतने सभी प्रकार के विस्तार को सार रूप में लाने के लिए समाने की, वा समेटने की शक्ति चाहिए। सर्व विस्तार को एक शब्द से समा देते। वह क्या? – 'बिन्दू'! **मैं भी बिन्दू, बाप भी बिन्दू। एक बाप बिन्दू में सारा संसार समाया हुआ है। यह तो अच्छी तरह से अनुभवी हो ना? संसार में एक है सम्बन्ध, दूसरी है सम्पत्ति। दोनों विशेषतायें बिन्दू बाप में समाई हुई हैं। सर्व सम्बन्ध एक द्वारा अनुभव किया है? सर्व सम्पत्ति की प्राप्ति सुख-शान्ति, खुशी - यह भी अनुभव किया है, या अभी करना है? तो क्या हुआ? विस्तार, सार में समा गया ना!**

AV, Original 28.02.1984
पूजा में, चित्रों में दो विशेषतायें विशेष हैं। एक तो है बिन्दू की विशेषता, और दूसरी है बूँद-बूँद की विशेषता। पूजा की विधि में बूँद-बूँद का महत्व है।
इस समय आप बच्चे 'बिन्दू' के रहस्य में स्थित होते हो। विशेष सारे ज्ञान का सार एक 'बिन्दू' शब्द में समाया हुआ है। **बाप भी बिन्दू, आप आत्मायें भी बिन्दू, और ड्रामा का ज्ञान धारण करने के लिए जो हुआ – फिनिश (finish) अर्थात् फुलस्टाप (full-stop) - बिन्दू लगा दिया। परम आत्मा, आत्मा, और यह प्रकृति का खेल अर्थात् ड्रामा - तीनों का ज्ञान प्रैक्टिकल लाइफ में 'बिन्दू' ही अनुभव करते हो ना? इसलिए भक्ति में भी प्रतिमा के बीच बिन्दू का महत्व है।**
दूसरा है - बूँद का महत्व। आप सभी याद में बैठते हो, या किसी को भी याद में बिठाते हो, तो किस विधि से कराते हो? **संकल्पों की बूँदों द्वारा – 'मैं आत्मा हूँ', यह बूँद डाली। 'बाप का बच्चा हूँ' - यह दूसरी बूँद। ऐसे शुद्ध संकल्प की बूँद द्वारा मिलन की सिद्धि को अनुभव करते हो ना? तो एक है शुद्ध संकल्पों की स्मृति की बूँद।** दूसरा - जब रूह-रूहान करते हो, बाप की एक-एक महिमा और प्राप्ति के शुद्ध संकल्प की बूँद डालते हो ना? … तीसरी बात - सभी बच्चे, अपने तन-मन-धन से सहयोग की बूँद डालते। … इसलिए पूजा की विधि में भी बूँद का महत्व दिखाया है।

AV, Original 02.04.1984
भाग्य विधाता बाप, सभी बच्चों को भाग्य बनाने की अति सहज विधि बता रहे हैं। **सिर्फ बिन्दु के हिसाब को जानो।** बिन्दु का हिसाब सबसे सहज है। बिन्दु के महत्व को जाना और महान बने। **सबसे सहज और महत्वशाली बिन्दु का हिसाब सभी अच्छी तरह से जान गये हो ना? बिन्दु कहना, और बिन्दु बनना। बिन्दु बन बिन्दु बाप को याद करना है। बिन्दु थे, और अब बिन्दु स्थिति में स्थित हो, बिन्दु बाप समान बन, मिलन मनाना है।** यह मिलन मनाने का युग, उड़ती कला का युग कहा जाता है।

AV, Original 02.03.1985

सदा बाप के नयनों में समाई हुई आत्मा स्वयं को अनुभव करते हो? नयनों में कौन समाता है? जो बहुत हल्का बिन्दु है। तो सदा हैं ही बिन्दु, और बिन्दु बन बाप के नयनों में समाने वाले। **बापदादा आपके नयनों में समाये हुए हैं, और आप सब बापदादा के नयनों में समाये हुए हो। जब नयनों में है ही बापदादा, तो और कुछ दिखाई नहीं देगा। तो सदा इस स्मृति से डबल लाइट रहो कि मैं हूँ ही बिन्दु। बिन्दु में कोई बोझ नहीं। यह स्मृति स्वरूप सदा आगे बढ़ाता रहेगा। आँखों में, बीच में देखो तो बिन्दू ही है। बिन्दु ही देखता है। बिन्दू न हो तो आँख होते भी देख नहीं सकते।** तो सदा इसी स्वरूप को स्मृति में रख, उड़ती कला का अनुभव करो।

AV, Original 10.01.1990

सेकण्ड से भी कम टाइम में फुलस्टाप (full-stop) लग जायें। **ऐसे नहीं - फुलस्टाप लगाओ अभी, और लगे पाँच मिनट के बाद। इसे पावरफुल ब्रेक (powerful brake) नहीं कहेंगे। पावरफुल ब्रेक का काम है, जहाँ लगाओ वहीं लगे। सेकण्ड भी देर से लगी, तो एक्सीडेंट (accident) हो जायेगा। फुलस्टाप अर्थात् ब्रेक पावरफुल हो।** जहाँ मन-बुद्धि को लगाना चाहे वहाँ लगा लें। यह मन-बुद्धि-संस्कार आप आत्माओं की शक्तियाँ है। इसलिए सदा वह प्रैक्टिस करते रहो कि जिस समय, जिस विधि से मन-बुद्धि को लगाना चाहते हैं, वैसा लगता है, या टाइम लग जाता है? चेक करते हो, या सारा दिन बीत जाता है, फिर रात को चेक करते हो? **बीच-बीच में चेक करो। जिस समय बहुत बुद्धि बिजी हो, उस समय ट्रायल करके देखो कि अभी-अभी अगर बुद्धि को इस तरफ से हटाकर, बाप की तरफ लगाना चाहें, तो सेकण्ड में लगती है? ऐसे तो सेकण्ड भी बहुत है। इसको कहते हैं – कंट्रोलिंग पावर (controlling power)।**

AV, Original 30.03.1999

सिर्फ छोटी सी बिन्दी लगानी है बस। बिन्दी लगाई, कमाई हुई। आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी - और ड्रामा फुलस्टाप लगाना, वह भी बिन्दी है। **तो बिन्दी आत्मा को याद किया, कमाई बढ़ गई। वैसे लौकिक में भी देखो, बिन्दी से ही संख्या बढ़ती है। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता? 10! दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार बिन्दी लगाओ - बढ़ता जाता है।** तो आपका साधन कितना सहज है! 'मैं आत्मा हूँ' - यह स्मृति की बिन्दी लगाना - अर्थात् खज़ाना जमा होना। **फिर 'बाप' बिन्दी लगाओ - और खज़ाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ड्रामा का फुलस्टाप लगाओ, बीती को फुलस्टाप लगाया - और खज़ाना बढ़ जाता!**

AV, Original 30.03.1999 (continued)

सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो। स्टॉप (stop) कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर (controlling power) सारे दिन में यूज़ करके देखो। ऐसे नहीं - आर्डर करो 'कन्ट्रोल' (control) - और दो मिनट के बाद कन्ट्रोल हो, 5 मिनट के बाद कन्ट्रोल हो - इसलिए बीच-बीच में कन्ट्रोलिंग पावर को यूज़ (use) करके देखते जाओ। सेकण्ड में होता है, मिनट में होता है, ज्यादा मिनट में होता है, यह सब चेक करते जाओ।

AV, Original 31.12.2010

अभी बापदादा चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं - सभी को एक सेकण्ड का कार्य देते हैं। सभी, अभी-अभी एक सेकण्ड में अपने आपको - और सभी संकल्पों से दूर कर - एक सेकण्ड में अपने को बिन्दू रूप में स्थित कर सकते हैं? … **एक सेकण्ड में 'मैं बिन्दू हूँ' - कोई संकल्प नहीं - बिन्दू हूँ!** …

सारे दिन में, हर घण्टे में, एक सेकण्ड में बिन्दू लगाओ - यह प्रैक्टिस हर एक करना, और वहाँ वातावरण में रहकर, अपने कार्य में रहते, चेक करना कि एक सेकण्ड में बिन्दू रूप में सफलता मिली? क्योंकि यहाँ (मधुबन में) तो वायुमण्डल भी है, लेकिन अपने-अपने स्थान में रहते सेकण्ड में बिन्दू स्वरूप में स्थित हो सकते हैं - यह अभ्यास करना - क्योंकि बापदादा ने बता दिया है जितना आगे चलते जायेंगे, उतना यह एक सेकण्ड में बिन्दू स्थिति में स्थित होने की आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए अपने आपको ही चेक करना …

‘नष्टो-मोह: स्मृति-स्वरूप’

59] स्मृति-स्वरूप तब बनते हैं, जब नष्टो-मोह: हो जाते हैं; लास्ट पेपर का क्वेश्चन है – स्मृति-स्वरूप किस स्टेज तक बने हो, और नष्टो-मोह: कहाँ तक बने हो? लास्ट पेपर का समय है - एक सेकेण्ड; सदा ‘मनमनाभव’ रहने वाले मन के बन्धन से भी मुक्त रहते हैं!

AV, Original 24.05.1972
बहुत समय, भूलने के संस्कारों को धारण किया - लेकिन अब भी, अगर बार-बार भूलने के संस्कार धारण करते रहेंगे, तो स्मृति-स्वरूप का जो नशा वा खुशी प्राप्त होनी चाहिए, वह कब करेंगे? **स्मृति-स्वरूप का सुख, वा स्मृति-स्वरूप की खुशी का अनुभव क्यों नहीं होता है? उसका मुख्य कारण क्या है? अभी तक सर्व रूपों से नष्टो-मोह: नहीं हुए हो। नष्टो-मोह: हैं, तो फिर भले कितनी भी कोशिश करो लेकिन स्मृति-स्वरूप में आ जाएंगे। तो प्हले - नष्टो-मोह: कहां तक हुए हैं - यह अपने आपको चेक करो।** बार-बार देह-अभिमान में आना यह सिद्ध करता है - देह की ममता से परे नहीं हुए हैं, वा देह के मोह को नष्ट नहीं किया है। नष्टो-मोह: ना होने कारण समय और शक्तियां, जो बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हो रही हैं, उन्हों को भी नष्ट कर देते हो, काम में नहीं लगा सकते हो!

AV, Original 22.07.1972
अपने को हरेक स्मृति-स्वरूप समझते हो? स्मृति-स्वरूप हो जाने से स्थिति क्या बन जाती है - और कब बनती है? **स्मृति-स्वरूप तब बनते हैं - जब नष्टो-मोह: हो जाते हैं।** तो ऐसे नष्टो-मोह: स्मृति-स्वरूप बने हो - कि अभी विस्मृति स्वरूप हो? स्मृति स्वरूप से विस्मृति में क्यों आ जाते हो? ज़रूर कोई-न-कोई मोह अर्थात् लगाव अब तक रहा हुआ है। तो क्या जो बाप से पहला-पहला वायदा किया है कि ‘और संग तोड़, एक संग जोड़ेंगे’ - क्या यह पहला वायदा निभाने नहीं आता है? **पहला वायदा ही नहीं निभायेंगे, तो पहले नंबर के पूज्य में, राज्य-अधिकारी, वा राज्य के सम्बन्ध में कैसे आवेंगे? क्या सेकेण्ड जन्म के राज्य में आना है? जो पहला वायदा ‘नष्टो-मोह: होने का’ निभाते हैं, वही पहले जन्म के राज्य में आते हैं।**

AV, Original 18.01.1976
जो चाहें, जिस घड़ी चाहें, वैसा अपना स्वरूप धारण कर सकते हो? इसको कहते हैं विल-पॉवर (will power)। प्रेम-स्वरूप में भी शक्तिशाली-स्वरूप साथ-साथ समाया हुआ हो। सिर्फ प्रेम-स्वरूप बन जाना - यह लौकिकता हो गई। **अलौकिकता यह है कि जो प्रेम-स्वरूप के साथ-साथ शक्तिशाली स्वरूप भी रहे। इसलिए शक्तिशाली स्वरूप का अन्तिम दृश्य ‘नष्टो-मोह: स्मृति-स्वरूप’ का दिखाया है। जितना ही अति स्नेह, उतना ही अति नष्टो-मोह:।** तो लास्ट पेपर क्या देखा? **स्नेह होते हुए भी नष्टो-मोह: स्मृति-स्वरूप। यही लास्ट पेपर, यादगार में भी, गायन रूप में है** - (ब्रह्मा बाप ने) यही प्रैक्टिकल कर्म करके दिखाया!

AV, Original 16.05.1973
तो लास्ट पेपर (last paper) का क्वेश्चन (question) कौन-सा है? स्मृति-स्वरूप किस स्टेज तक बने हो, और नष्टो-मोह: कहाँ तक बने हो - यही है लास्ट क्वेश्चन। इस लास्ट क्वेश्चन को पूर्ण रीति से प्रैक्टिकल में करने के लिए, यही दो शब्द प्रैक्टिकल में लाने हैं। अभी तो सभी ‘पास विद् ऑनर’ बन जायेंगे ना? **जबकि फाईनल रिजल्ट (final result) से पहले ही क्वेश्चन एनाउन्स (announce) हो रहा है। फिर भी 108 ही निकलेंगे!** इतना मुश्किल है क्या? पहले दिन से यह क्वेश्चन मिलता है। **जिस दिन जन्म लिया, उस दिन ही लास्ट क्वेश्चन (last question) सुनाया जाता है।**

AV, Original 23.06.1973
लास्ट पेपर का समय क्या मिलेगा - एक सेकेण्ड! लास्ट पेपर का टाइम भी फिक्स (fix) है, और पेपर भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना – ‘नष्टो-मोह: स्मृति स्वरूप’। एक सेकेण्ड में ऑर्डर हुआ - नष्टो-मोह: बन जाओ - तो एक सेकेण्ड में अगर ‘नष्टो-मोह: स्मृति स्वरूप’ न बने, **अपने को स्वरूप बनाने, अर्थात् युद्ध करने में ही समय गंवा दिया, और बुद्धि को ठिकाने लगाने में समय**

लगा दिया, तो क्या हो जायेंगे - फेल (fail)! तो समय भी एक सेकेण्ड का मिलना है। यह भी पहले ही सुन रहे हैं। पेपर भी पहले सुन रहे हैं, तो कितने पास होने चाहिये?

AV, Original 08.07.1974
नष्टो-मोह: बनने के लिए सहज युक्ति कौन-सी है? इसके तो अनुभवी हो ना? सदैव अपने सामने सर्व-सम्बन्धों से बाप को देखना, और सर्व-सम्बन्धों द्वारा सर्व-प्राप्तियों को देखना। अब सर्व-सम्बन्ध और सर्व प्राप्तियाँ एक द्वारा अनुभव हो रही हैं - तो फिर और कोई सम्बन्ध व प्राप्ति रह जाती है क्या, जहाँ मोह अर्थात् लगाव है? **तो क्या सहज व स्वत: ही, अनेक तरफ से तोड़, एक तरफ से जोड़ने का अनुभव नहीं होता है? अब तक भी कहीं, और किसी के साथ लगाव व मोह है, तो सिद्ध होता कि सर्व-सम्बन्ध और सर्व प्राप्तियों का अनुभव नहीं कर रहे हैं।**

AV, Original 05.06.1977
नष्टो-मोह: बनने की सहज युक्ति कौनसी है? सदैव अपने घर की स्मृति में रहो। आत्मा के नाते, आपका घर 'परमधाम' है, और ब्राह्मण जीवन के नाते, साकार सृष्टि वृक्ष में, यह 'मधुबन' आपका घर है - क्योंकि ब्रह्मा बाप का घर मधुबन है। यह दोनों ही घर स्मृति में रहे, तो नष्टो-मोह: हो जायेंगे। क्योंकि जब अपना परिवार, अपना घर कोई बना लेते, तो उसमें मोह जाता - अगर उसको दफ्तर समझो, तो मोह नहीं जाएगा।

AV, Original 22.06.1977
मेरापन है तो देहभान आता है। अगर तन के भी ट्रस्टी है, तो देह का भान हो नहीं सकता। जब से जन्म हुआ तो पहला वायदा क्या किया? 'जो मेरा, सो बाप का'। मरजीवा हो गए ना? फिर मेरापन कहां से आया? दी हुई चीज़ कभी वापिस नहीं ली जाती। **तो सदा देही-अभिमानी बनने का अर्थात् नष्टो-मोह: बनने का सहज साधन क्या हुआ? ट्रस्टी हूँ – 'मैं ट्रस्टी हूँ'। कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का जो यादगार दिखाया है, उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा? जब मेरापन आया। 'मेरा' खत्म - तो नष्टो-मोह: अर्थात् स्मृति स्वरूप हो गए। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर - यह 'मेरा-मेरी' सहज को मुश्किल कर देता है। सहज मार्ग का साधन है - 'नष्टो-मोह: अर्थात् ट्रस्टी'।** इस स्मृति से स्वयं और सर्व को सहज योगी बनाओ। समझा?

AV, Original 06.01.1979
जब किसी तरफ लगाव अर्थात् झुकाव नहीं, तो माया से हार हो नहीं सकती। **ऐसे नष्टो-मोह: बनना अर्थात् सदा स्मृति-स्वरूप। सदैव अमृतवेले यह स्मृति में लाओ कि सर्व सम्बन्धों का सुख, हर रोज बाप दादा से लेकर औरों को भी दान देंगे।** हर सम्बन्ध का सुख लो। सर्व सुखों के अधिकारी बन, औरों को भी बनाओ। ऐसे अधिकारी समझने वाले, सदा बाप को अपना साथी बनाकर चलते हैं। **जो भी काम हो, तो साकार साथी न याद आवे, पहले बाप याद आवे। सच्चा मित्र भी तो बाप हैं ना, ऐसे सच्चे साथी का साथ लो, तो सहज ही सर्व से न्यारा और प्यारा बन जायेंगे। एक बाप से लगन है, तो नष्टो-मोह: हैं।**

AV, Original 08.01.1979 (पार्टियों से मुलाकात : 06-01-1979)
मोह का बीज है सम्बन्ध - उस बीज को कट (cut) करने से सब शिकायतें समाप्त - **मातायें सब नष्टो-मोह: हो ना? जब बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ लिए, तो और किसमें मोह हो सकता है क्या?** बिना सम्बन्ध के कोई में मोह नहीं हो सकता। सदा यह याद रखो जब सम्बन्ध नहीं तो मोह कहाँ से आया, मोह का बीज है सम्बन्ध। **जब बीज को ही कट कर दिया, तो बिना बीज के वृक्ष कैसे पैदा होगा? अगर अभी तक होता है, तो सिद्ध है कि 'कुछ तोड़ा है, कुछ जोड़ा है' - दो तरफ है। तो दो तरफ वाले को न मंजिल मिलती, न किनारा होता।** तो ऐसे तो नहीं हो ना? सब नष्टो-मोह: हो ना? फिर कभी शिकायत नहीं करना कि 'क्या करें, बन्धन हैं, कटता नहीं' .. **जहाँ मोह नष्ट हो गया तो स्मृति-स्वरूप स्वत: हो जाते - फिर 'कटता नहीं, मिटता नहीं' यह भाषा खत्म हो जाती। सर्व प्राप्ति स्वरूप हो जाते।** सदा मनमनाभव रहने वाले मन के बन्धन से भी मुक्त रहते हैं।

AV, Original 05.12.1979
सिर्फ सेवार्थ भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहे हुए हो। अगर सभी एक स्थान पर बैठ जाएं, तो चारों ओर की सेवा कैसे होगी? **जब सेवा समाप्त हो जायेगी, तब सभी मधुबन आ जायेंगे। लेकिन वह भी कौन आयेंगे? जो नष्टोमोहा होंगे। जिनकी बुद्धि की लाइन क्लीयर (line clear) होगी। उस समय टेलीफोन व टेलीग्राम से बुलावा नहीं होगा, लेकिन बुद्धि की लाइन क्लीयर होने से बुलावा पहुँच जायेगा। ऐसी हालतें बनेंगी, जो जिस ट्रेन से आपको पहुँचना होगा वही चलेगी, उसके बाद नहीं। अगर लाइन क्लीयर होगी तो साधन भी मिल जावेंगे। नहीं तो कहीं-न-कहीं अटक जायेंगे।** इसलिए बहुत काल का निरन्तर योग चाहिए।

AV, Original 20.01.1986
स्मृति स्वरूप बनो। स्मृति स्वरूप स्वत: ही नष्टोमोहा बना ही देगा। अभी तो मोह की लिस्ट (list) बड़ी लम्बी हो गई है। **एक स्व की प्रवृत्ति, एक दैवी परिवार की प्रवृत्ति, सेवा की प्रवृत्ति, हद के प्राप्तियों की प्रवृत्ति - इन सभी से नष्टोमोहा अर्थात् न्यारा बन, प्यारा बनो।** मैं-पन अर्थात् मोह। इससे नष्टोमोहा बनो।

AV, Original 16.03.1986
देह, देह के सम्बन्ध, देह-संस्कार, व्यक्ति या वैभव, वायब्रेशन, वायुमण्डल सब होते हुए भी आकर्षित न करे। इसी को ही कहते हैं - 'नष्टो-मोह: समर्थ स्वरूप'। तो ऐसी प्रैक्टिस है? लोग चिल्लाते रहें, और आप अचल रहो। प्रकृति भी, माया भी सब लास्ट दाँव लगाने लिए अपने तरफ कितना भी खींचे, लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। इसको कहा जाता - **'देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो'। ऐसा अभ्यास हो। इसी को ही 'स्वीट साइलेन्स' स्वरूप की स्थिति कहा जाता है।**

AV, Original 20.10.2008
बाप, समान को साथ लेके जायेंगे। बाप को भी अकेला जाना पसन्द नहीं है, बच्चों के साथ जाना है। तो साथ चलने के लिए तैयार हैं ना? कांध हिलाओ। हैं? सभी चलेंगे? अच्छा सभी चलने के लिए तैयार हैं? जब बाप जायेंगे, तब जायेंगे ना? अभी नहीं जायेंगे, अभी तो फॉरेन (foreign) में जाना है ना लौट के? **बाप आर्डर करेगा, 'नष्टो-मोह: स्मृति-लब्धा' का बेल (bell) बजायेगा, और साथ चल पड़ेंगे। तो तैयारी है ना? स्नेह की निशानी है, साथ चलना।**

सम्पूर्ण स्टेज की परख

60] सम्पूर्ण स्टेज की पिक्चर है – हल्कापन; सम्पूर्णता की परख यही है कि वह सभी बातों को, सभी रीति से, सभी रूपों से, परख सकेंगे; सम्पूर्णता की निशानियां - सर्व संकल्पों से भी त्यागी - हरेक के संकल्पों को रीड कर सकेंगे - स्वयं का हर कर्म कला के माफिक दिखाई देगा!

AV, Original 25.12.1969
संगमगुग की सम्पूर्ण स्टेज की पिक्चर (picture) क्या है? फरिश्ते में क्या विशेषता होती है? एक तो बिल्कुल हल्कापन होता है। हल्कापन होने के कारण, जैसी भी परिस्थिति हो, वैसी अपनी स्थिति बना सकेंगे। जो भारी होते हैं, वह कैसी भी परिस्थिति में, अपने को सैट (set) नहीं कर सकेंगे। **तो फरिश्तेपन की मुख्य विशेषता हुई कि वह सभी बातों में हल्के होंगे। संकल्पों में भी हल्के, वाणी में भी हल्के, और कर्म करने में भी हल्के, और सम्बन्ध में भी हल्के रहेंगे। इन चार बातों में हल्कापन है, तो फरिश्ते की अवस्था है। अब देखना है कहाँ तक इन 4 बातों में हल्कापन है।** जो हल्के होंगे, वे एक सेकेण्ड में कोई भी आत्मा के संस्कारों को परख सकेंगे। और जो भी परिस्थिति सामने आयेगी, उनको एक सेकेण्ड में निर्णय कर सकेंगे। यह है फरिश्तेपन की परख। **जब यह सभी गुण हर कर्म में प्रत्यक्ष दिखाई दे, तो समझना अब सम्पूर्ण स्टेज नजदीक है।** (ब्रह्मा बाप का) साकार रूप की सम्पूर्ण स्टेज, किन बातों में नजर आती थी? **मुख्य बात तो अपने सम्पूर्ण स्टेज की आपेही परख करनी है - इन बातों से।**

AV, Original 18.01.1970
हरेक सितारे की सम्पूर्णता की समीपता देख रहे हैं। आप सभी अपने को जानते हो कि कितना सम्पूर्णता के समीप पहुँचे हो? **सम्पूर्णता के समीप पहुँचने की परख क्या होती है? सम्पूर्णता की परख यही है कि वह सभी बातों को, सभी रीति से, सभी रूपों से, परख सकते हैं।**

AV, Original 02.04.1970
अपने को क्या कहलाते हो? मास्टर सर्वशक्तिमान। अब मास्टर सर्वशक्तिमान का नशा कम रहता है - इसलिए एक सेकंड में आवाज़ में आना, एक सेकंड में आवाज़ से परे हो जाना, इस शक्ति की प्रैक्टिकल झलक चेहरे पर नहीं देखते। **जब ऐसी अवस्था हो जाएगी - अभी-अभी आवाज़ में, अभी-अभी आवाज़ से परे - यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा, तब समझो सम्पूर्णता आई है। सम्पूर्ण स्टेज की निशानी यह है।**

AV, Original 02.04.1970 (continued)
सभी शक्तियां समान रूप में हो जाएँगी - फिर मास्टर सर्वशक्तिमान हो जायेंगे। बाप का इतना निश्चय है? निश्चयबुद्धि है, वह विजयी है ही। बाप और स्वयं में निश्चयबुद्धि हैं, तो विजय कहाँ जाएगी? निश्चयबुद्धि के पीछे-पीछे विजय आती है। वह विजय के पीछे नहीं दौड़ते, विजय उनके पीछे दौड़ती है! **'हम विजयी बनें' इस संकल्प का भी वह त्याग कर लेते। ऐसे सर्वस्व त्यागी हो? सर्वस्व त्यागी और सर्व संकल्पों के त्यागी। सिर्फ सर्व संबंधों का त्याग नहीं। सर्व संकल्पों से भी त्यागी। यही सम्पूर्ण स्थिति है।**

AV, Original 07.06.1970
संकल्पों को कैच (catch) करने की प्रैक्टिस (practice) होगी, तो संकल्प रहित भी सहज बन सकेंगे। ज्यादा संकल्प तब चलाना पड़ता है, जब किसके संकल्प को परख नहीं सकते हैं। लेकिन हरेक के संकल्पों को रीड (read) करने की प्रैक्टिस होगी, तो व्यर्थ संकल्प ज्यादा नहीं चलेंगे। **और सहज ही एक संकल्प में, एकरस स्थिति में, एक सेकंड में, स्थित हो जायेंगे। तो संकल्पों को रीड करना - यह भी एक सम्पूर्णता की निशानी है।** जितना-जितना अव्यक्त भाव में स्थित होंगे, उतना हरेक के भाव को सहज समझ जायेंगे।

AV, Original 18.06.1970
अव्यक्त स्थिति कितना समय रहती है? बापदादा सम्पूर्ण स्टेज को सामने रख, पूछते हैं - और आप अपने पास्ट के पुरुषार्थ को सामने रख, सोचते हो - कितना फ़र्क हो गया! वर्तमान समय पढ़ाई की मुख्य सब्जेक्ट्स कौन सी चल रही है? **मुख्य सब्जेक्ट यह पढ़ रहे हो कि ज्यादा से ज्यादा अव्यक्त स्थिति बने। तो मुख्य सब्जेक्ट में रिजल्ट तो कम है। निरंतर याद में रहने की सम्पूर्ण स्टेज के आगे, एक दो घंटा क्या है?**

AV, Original 09.04.1971
जैसे साकार स्वरूप में क्या अनुभव किया? एक ही समय सर्व गुण अनुभव में आते हैं। क्योंकि एक गुण में सर्व गुण समाये हुए होते हैं। जैसे अज्ञानता में, एक विकार के साथ सर्व विकारों का गहरा सम्बन्ध होता है - वैसे एक गुण के साथ मुख्य गुणों का भी गहरा सम्बन्ध है। अगर कोई कहे कि मेरी स्थिति ज्ञान-स्वरूप है - **तो ज्ञान-स्वरूप के साथ-साथ अन्य गुण भी उसमें सामये हुए जरूर हैं। जिसको एक शब्द में कौनसी स्टेज कहेंगे? मास्टर सर्वशक्तिवान। ऐसी स्थिति में सर्व शक्तियों की धारणा होती है। तो ऐसी स्थिति बनाना - यह है समानता, सम्पूर्णता की स्थिति।**

AV, Original 15.04.1971
सर्व धर्म की आत्मायें भी यह भीख मांगने के लिए आयेंगी। कहते हैं ना कि क्राइस्ट भी बेगर रूप में है। तो धर्म-पितायें भी आप लोगों के सामने बेगर रूप में आयेंगे। उनको क्या भिक्षा देंगे? यही सन्देश। **ऐसा पावरफुल सन्देश होगा, जो इसी सन्देश के पावरफुल संस्कारों से, धर्म स्थापन करने के निमित्त बनेंगे। वह संस्कार अविनाशी बन जायेंगे। क्योंकि आप लोगों के भी अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज के समय अविनाशी संस्कार होते हैं।** अभी संस्कार अविनाशी बना रहे हो। इसलिए अब जिन्हों को सन्देश देते हो, और मेहनत करते हो, तो अभी वह सदाकाल के लिए नहीं रहता है। कुछ समय रहता है, फिर ढीले हो जाते हैं। **लेकिन अन्त के समय आप लोगों के संस्कार ही अविनाशी हो जाते हैं। तो अविनाशी संस्कारों की शक्ति होने के कारण, उन्हों को भी ऐसी शिक्षा वा सन्देश देते हो, जो उनके संस्कार अविनाशी बन जाते हैं।**

AV, Original 05.10.1971
जो सम्पूर्ण स्टेज को प्राप्त हुई आत्माएं होती हैं, उनकी हर चलन कला के रूप में होती है, और चरित्र के रूप में भी हो जाती है। तो विशेषता हुई ना। जैसे साकार (ब्रह्मा बाप) के बोलने में, चलने में, सभी में विशेषता देखी ना? तो यह कला हुई ना? उठने-बैठने की कला, देखने की कला, चलने की कला थी। सभी में न्यारापन और विशेषता थी। हर कर्म कला के रूप में प्रैक्टिकल में देखा। **तो 16 कला अर्थात् हर चलन सम्पूर्ण कला के रूप में दिखाई दे - इसको कहते हैं 16 कला सम्पूर्ण। तो सम्पूर्ण स्टेज की निशानी यही होगी जो उनका हर कर्म कला के माफिक दिखाई देगा, अर्थात् उसमें विशेषता होगी। इसको कहते हैं सम्पूर्ण स्टेज।**

AV, Original 28.02.1972
जितना अपने सामने सम्पूर्ण स्टेज समीप होती जावेगी, उतनी विश्व की आत्माओं के आगे आपकी अन्तिम कर्मातीत स्टेज का साक्षात्कार स्पष्ट होता जयेगा।

AV, Original 08.06.1972
कौनसा विशेष गुण सम्पूर्ण स्टेज को वा स्थिति को प्रत्यक्ष करता है? **सम्पूर्ण स्टेज वा सम्पूर्ण स्थिति जब आत्मा की बन जाती है, तो इसका प्रैक्टिकल कर्म में क्या गायन है? समानता का। निन्दा स्तुति, जय-पराजय, सुख-दु:ख - सभी में समानता रहे, इसको कहा जाता है सम्पूर्णता की स्टेज।** दु:ख में भी, सूरत वा मस्तक पर दु:ख की लहर के बजाए, सुख वा हर्ष की लहर दिखाई दे। **निन्दा सुनते हुए भी ऐसे ही अनुभव हो कि यह निन्दा नहीं, सम्पूर्ण स्थिति को परिपक्व करने के लिये यह महिमा योग्य शब्द हैं, ऐसी समानता रहे। इसको ही बापदादा के समीपता की स्थिति कह सकते हैं।**

AV, Original 07.10.1975
अपने सम्पूर्ण स्टैज (stage) की निशानियाँ स्वयं में स्पष्ट नजर आयेंगी। **वह निशानियाँ क्या होंगी, वह जानते हो, व अनुभव करते हो?** (1) पहली निशानी-पुरानी दुनिया की किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्प-मात्र वा स्वप्न-मात्र भी लगाव नहीं होगा। सदा स्वयं को कलियुगी दुनिया से किनारा करने वाले संगमयुगी समझेंगे। (2) सारी सृष्टि की आसुरी आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे। (3) सदा स्वयं को बाप समान विश्व-सेवाधारी अनुभव करेंगे। (4) हर परिस्थिति वा परीक्षा में सदा स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे। विजय मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है। ऐसा अधिकारी स्वरूप समझ कर हर कर्म करेंगे। (5) सदा त्रिमूर्ति तख्त-नशीन अनुभव करेंगे। त्रिकालदर्शीपन के स्मृति स्वरूप होने के कारण, हर कर्म के तीनों कालों को जानने वाले, हर कर्म को श्रेष्ठ कर्म वा सुकर्मी बनायेंगे। (6) विकर्म का खाता समाप्त हुआ अनुभव होगा। **हर कार्य, हर संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है, ऐसा सदा अनुभव करेंगे, पुराने संस्कार और स्वभाव से उपराम अनुभव करेंगे, सदा साक्षीपन की सीट (seat) पर स्वयं को सैट (set) हुआ अनुभव करेंगे। यह है - निशानियाँ भी और निशाना भी।**

रूहानी नशा और निशाना (spiritual intoxication and aim)

61] निश्चय बुद्धि की परख है निशाना, और उनकी स्थिति नशे वाली होगी; जिसमें जितना खुद नशा होगा, उतना ही निशाना ठीक कर सकेंगे; निशाने पर स्थित होने की निशानी है नशा; जितना नशा होगा, उतना अपना कर्मातीत अवस्था का निशाना नज़दीक दिखाई देगा!

AV, Original 08.05.1969
वर्तमान समय बहुत प्रजा बढ़ती रहेगी। तो प्रजा - और नजदीक वाले - को परखने के लिए बहुत प्रैक्टिस चाहिए। परखने की मुख्य बात यह है कि उनके नयनों से ऐसा महसूस होगा - जैसे कोई निशाने तरफ किसका खास अटेन्शन होता है, तो उनके नयन कैसे होते हैं? **तीर लगाने वाले, वा निशाना लगाने वाले, जो मिलेट्री के होते हैं, वो पूरा निशाना रखते हैं। उनके नयन, उनकी वृत्ति, उस समय एक ही तरफ होगी। तो जो ऐसा निश्चय बुद्धि पक्का होगा, उनके चेहरे से ऐसे महसूस होगा, जैसेकि कोई निशान-बाज़ है।** आप लोगों को मुख्य शिक्षा मिलती है - एक निशान को देखो, अर्थात् बिन्दी को देखो। तो बिन्दी को देखना भी, निशान को देखना है। तो निश्चय बुद्धि की निशानी क्या होगी? पूरा निशाना होगा। **निशान जरा भी हिल जाता है, तो फिर हार हो जाती है। निश्चय बुद्धि के नयनों से ऐसे महसूस होगा, जैसे देखते हुए भी कुछ और देखते हैं। उनके बोल भी वही निकलेंगे।** यह है निश्चय बुद्धि की निशानी। निशान-बाज़ की स्थिति नशे वाली होती है - तो **निश्चय बुद्धि की परख है निशाना, और उनकी स्थिति नशे वाली होगी। यह प्रैक्टिस अभी करो।**

AV, Original 02.02.1970
जब निशाना ठीक होता है, तो एक धक से किसको मरजीवा बना सकते हो। जो निशाने-बाज़ होते हैं, वह एक ही गोली से ठीक निशाना करते हैं। जिनको निशाना नहीं आता, उनको ३-४ बारी गोली चलानी पड़ती है। अगर अपनी स्थिति का भी निशाना, और दूसरे की सर्विस करने का भी निशाना ठीक होगा, और साथ-साथ नशा भी सदैव एकरस रहता होगा, तो सर्विस में सफलता ज्यादा पा सकते हो। **कभी नशा उतर जाता, कभी निशाना छुट जाता - यह दोनों बातें ठीक होनी चाहिए। जिसमें जितना खुद नशा होगा, उतना ही निशाना ठीक कर सकेंगे।**

AV, Original 24.07.1970
बीच-बीच में एक दो मिनट भी निकाल कर, इस बिंदी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए। जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है, तो सारे चलते-फिरते हुए, ट्राफिक को भी रोक कर, तीन मिनट साइलेंस की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप (stop) कर लेते हैं। **आप भी कोई कार्य करते हो, वा बात करते हो, तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्राफिक (traffic) को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनिट के लिए भी मन के संकल्पों को - चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी, यह प्रैक्टिस करना चाहिए। अगर यह प्रैक्टिस नहीं करेंगे, तो बिंदु रूप की पावरफुल (powerful) स्टेज कैसे और कब ला सकेंगे?** इसलिए यह अभ्यास करना आवश्यक है। बीच-बीच में यह प्रैक्टिस में करते रहेंगे, तो जो आज यह बिंदु रूप की स्थिति मुश्किल लगती है, वह सरल हो जाएगी - जैसे अभी मैजारिटी को अव्यक्त स्थिति सहज लगती है। **पहले जब अभ्यास शुरू किया, तो व्यक्त में अव्यक्त स्थिति में रहना भी मुश्किल लगता था। अभी अव्यक्त स्थिति में रह कार्य करना जैसे सरल होता जा रहा है, वैसे ही यह बिन्दुरूप की स्थिति भी सहज हो जाएगी।** अभी महारथियों को यह प्रैक्टिस करनी चाहिए । समझा?

AV, Original 19.04.1971
जैसे स्थूल नशे में रहने वाले के नैन-चैन, चलन दिखाई देते हैं कि यह नशे में है। ऐसे ही आपके चलन और चेहरे से ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई पड़े। चेहरा ही आपका परिचय दे। जैसे कोई के पास मिलने जाते हैं, तो परिचय के लिए अपना कार्ड देते हैं ना। इसी रीति से आपका चेहरा परिचय कार्ड का कर्त्तव्य करे। समझा?

AV, Original 20.05.1971

जिसके पास खजाना जमा होगा उसकी सूरत से - एक तो वर्तमान और भविष्य अर्थात् ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई देगा, और उनके नयनों वा मस्तक से सर्व आत्माओं को स्पष्ट अपना नशा दिखाई देगा। यह जमा होने वाले की निशानी दिखाई देगी। उनकी सूरत ही सर्विसएबल होगी, सूरत ही सर्विस करती रहेगी। जिसके पास जास्ती अथवा कम जमा होता है, तो वह भी उनकी सूरत से दिखाई देता है। तो जमा किए हुए की सूरत वा मूरत से ही मालूम पड़ जाता है। जैसे जड़ चित्र बनाते हैं, तो उनमें भी कई ऐसे चिह्न दिखाते हैं जो **उन जड़ चित्रों से भी अनुभव होता है। वह बोलते तो नहीं है, लेकिन सूरत वा मूर्त से अनुभव होता है। वैसे ही आपकी यह सूरत हर संकल्प, हर कर्म को स्पष्ट करेगी।** तो अपने आप को ऐसा चेक करो कि मेरी सूरत से कोई भी आत्मा को नशा व निशाना दिखाई देता है?

AV, Original 30.05.1971

कहावत है ना - 'अपनी घोट तो नशा चढ़े'। अभी सिर्फ रिपीट (repeat) करने का अभ्यास है। मनन करने का अभ्यास कम है। जितना-जितना मनन करेंगे, अर्थात् प्रॉपर्टी (property) को अपना बनायेंगे तो नशा होगा। उस नशे से किसको भी सुनायेंगे, तो उनको भी नशा रहेगा। नहीं तो नशा नहीं चढ़ता है। सिर्फ भक्त बन, महिमा कर लेते हैं, नशा नहीं चढ़ता है। तो मनन करने का अभ्यास अपने में डालते जाओ। **फिर सदैव ऐसे नज़र आयेंगे जैसे अपनी मस्ती में मस्त रहने वाले हैं। फिर इस दुनिया की कोई भी चीज, उलझन आपको आकर्षण नहीं करेगी, क्योंकि आप अपने मनन की मस्ती में मस्त हो।** जिस दिन मनन में मस्त होंगे, उस दिन माया भी सामना नहीं करेगी, क्योंकि आप बिज़ी (busy) हो ना। अगर कोई बिज़ी होता है, तो दूसरा अगर आयेगा भी तो लौट जायेगा। **जैसे वह लोग अन्डरग्राउण्ड (underground) चले जाते हैं ना। आप भी मनन करने से अन्दर अर्थात् अन्डरग्राउण्ड चले जाते हो। अन्डरग्राउण्ड रहने से बाहर के बाम्बस् (bombs) आदि का असर नहीं होता है।** इसी रीति से मनन में रहने से, अन्तर्मुखी रहने से, बाहरमुखता की बातें डिस्टर्ब (disturb) नहीं करेगी।

AV, Original 20.08.1971

डबल निशाना कौनसा है? जो डबल नशा होगा वही डबल निशाना होगा। एक है निराकारी निशाना। सदैव अपने को निराकारी देश के निवासी समझना और निराकारी स्थिति में स्थित रहना। साकार में रहते हुए अपने को निराकारी समझकर चलना। **एक** - सोल-कान्सेस वा आत्म-अभिमानी बनने का निशाना; और **दूसरा** - निर्विकारी स्टेज, जिसमें मन्सा की भी निर्विकारीपन की स्टेज बनानी पड़ती है। **तो एक है निराकारी निशाना और दूसरा है साकारी। तो निराकारी और निर्विकारी - यह हैं दो निशानी।** सारा दिन पुरूषार्थ योगी और पवित्र बनने का करते हो ना? जब तक पूरी रीति आत्म-अभिमानी न बने हैं - तो निर्विकारी भी नहीं बन सकते। **तो निर्विकारीपन का निशाना और निराकारीपन का निशाना - जिसको फरिश्ता कहो, कर्मातीत स्टेज कहो।**

AV, Original 31.11.1971

विजयी अर्थात् स्वप्न में भी संकल्प रूप में हार न हो। जब स्वप्न में हार नहीं होगी, तो प्रैक्टिकल जीवन में तो होगी नहीं ना। ऐसे हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म विजयी हो - अर्थात् हार का नाम-निशान नहीं। **ऐसे सम्पूर्ण निशानी को एक सेकेण्ड में अपना निशाना बना सकते हो? जैसे जिस्मानी मिलिट्री वाले एक सेकेण्ड में अगर निशाना नहीं बना सकते तो हार खा लेते, निशाना ठीक होता है तो विजयी बन जाते हैं।**

AV, Original 03.02.1972

जैसे साकार में स्वयं के नशे में रहने के कारण अथॉरिटी (authority) से कह सकते थे - कि अगर साकार द्वारा उलटा भी कोई कर्म हो गया, तो उसको भी सुलटा कर देंगे। यह अथॉरिटी है ना। उतनी अथॉरिटी कैसे रही? स्वयं के नशे से। स्वयं के स्वरूप की स्मृति में रहने से यह नशा रहता है कि कोइ भी कर्म उलटा हो ही नहीं सकता।

AV, Original 05.02.1972

एक सेकेण्ड में अपने को अपने सम्पूर्ण निशाने और नशे में स्थित कर सकते हो? सम्पूर्ण निशाना क्या है, उसको तो जानते हो ना? **जब सम्पूर्ण निशाने पर स्थित हो जाते हैं, तो नशा तो रहता ही है। अगर निशाने पर बुद्धि नहीं टिकती तो नशा भी नहीं रहेगा।** निशाने पर स्थित होने की निशानी है नशा। तो ऐसा नशा सदैव रहता है? जो स्वयं नशे में रहते हैं वह दूसरों को भी नशे में टिका सकते हैं। **जैसे कोई हद का नशा पीते हैं, तो उनकी चलन से, उनके नैन-चैन से कोई भी जान लेता है - इसने नशा पिया हुआ है। इसी प्रकार, यह जो सभी से श्रेष्ठ नशा है, जिसको ईश्वरीय नशा कहा जाता है - इसी में स्थित रहने वाला भी दूर से दिखाई तो देगा ना।** दूर से ही वह अवस्था इतना महसूस करें - यह कोई ईश्वरीय लगन में रहने वाली आत्मायें हैं!

AV, Original 04.07.1974

क्या अपने सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचे हो? क्या निशाने पर पहुँचने की निशानियाँ दिखाई देती हैं? क्या सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने की निशानी का डबल नशा उत्पन्न होता है? पहला नशा है - कर्मातीत अर्थात् सर्व कर्म बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। ऐसे कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा। न्यारे बनने का पुरूषार्थ बार-बार नहीं करना पड़ेगा। सहज और स्वत: ही अनुभव होगा कि कराने वाला, और कराने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ, स्वयं से हैं ही अलग। **दूसरा नशा है** - विश्व का मालिक बनने का - कि ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि स्थूल चोला व वस्त्र तैयार हुआ सामने दिखाई दे रहा है, और निश्चय होगा कि वस्त्र तैयार है और थोड़े ही समय में उसे धारण करना है।

AV, Original 12.01.1979

जितना नशा होगा, उतना अपना कर्मातीत अवस्था का निशाना नज़दीक दिखाई देगा। अगर नशा कम होगा तो निशाना भी दूर दिखाई देगा। इस ईश्वरीय नशे में रहने से दुखों की दुनिया को सहज ही भूल जाते हैं - उस नशे में भी सब कुछ भूल जाता है ना? तो इस ईश्वरीय नशे में रहने से, सदाकाल के लिए पुरानी दुनिया भूल जाती। इस नशे में कोई नुकसान नहीं, जितना नशा चढ़ाओ उतना अच्छा - उस नशे को तो ज्यादा पिया तो खत्म हो जाते। यहाँ इस नशे से अविनाशी बन जाते। **जो नशे में रहते हैं, उनको देखने वाले भी अनुभव करते कि यह नशे में हैं - ऐसे आपको भी देख, यह अनुभव करें कि यह नशे में हैं। अभी-अभी नशा चढ़ा, अभी-अभी उतरा, तो जो मज़ा आना चाहिए वह नहीं आयेगा - इसलिए सदा नशे में मस्त रहो, इस नशे में सर्व प्राप्ति है।** 'एक बाप, दूसरा न कोई' - यह स्मृति ही नशा चढ़ाती है। इसी स्मृति से समर्थी आ जाती।

महादानी बन, भिखारियों को महादान वा वरदान देने वाले बनो

62] भल कैसी भी आत्मा हो, लेकिन सन्तुष्ट होकर जाये; सर्व धर्म की आत्मायें भी यह भीख मांगने के लिए आयेंगी; ऐसी प्यासी आत्माओं को ऐसा रूहानी धन दो, जिससे कभी भी आत्मा को धन मांगने की आवश्यकता ही न रहे; तो तुम्हारी लास्ट स्टेज है वरदानीमूर्त; स्वयं के लिए भी, औरों के लिए भी शान्ति के दाता बनो!

AV, Original 17.07.1969
ऐसा समय अभी आयेगा, जो सभी भिखारी रूप में आप लोगों से यह भीख माँगेंगे। तो उन्हों को नहीं देंगे? इतना जमा करना पड़ेगा ना? अपने लिए तो करना ही है, लेकिन साथ-साथ ऐसा दृश्य सभी के सामने होगा - जो आज अपने को भरपूर समझते हैं, वह भी भिखारी के रूप में आप सभी से भीख माँगेंगे। तो भीख कैसे दे सकेंगे? जब जमा होगा ना? दाता के बच्चे तो सभी देने वाले ठहरे। **आप सभी के एक सेकेण्ड की दृष्टि के, अमूल्य बोल के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा अन्तिम दृश्य अपने सामने रख पुरुषार्थ करो। ऐसा न हो कि दर पर आयी हुई कोई भूखी आत्मा खाली हाथ जाये।** साकार में (ब्रह्मा बाप ने) क्या करके दिखाया? कोई भी आत्मा असन्तुष्ट होकर न जाये। भल कैसी भी आत्मा हो, लेकिन सन्तुष्ट होकर जाये।

AV, Original 21.01.1971
दिन-प्रतिदिन देखेंगे - **जैसे धन के भिखारी भिक्षा लेने के लिए आते हैं, वैसे शान्ति के अनुभव के भिखारी आत्मायें भिक्षा लेने के लिए तड़पेंगी। अब सिर्फ एक दु:ख की लहर आयेगी, तो जैसे लहरों में लहराती हुई आत्मायें, वा लहरों में डूबती हुई आत्मा, एक तिनके का भी सहारा ढूँढ़ती है, ऐसे आप लोगों के सामने अनेक भिखारी आत्मायें यह भीख मांगने के लिए आयेंगी।** तो ऐसी तड़पती हुई या भिखारी प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख, वा सर्व शक्तियों से भरपूर किया हुआ अनुभव करते हो? **सर्व शक्तियों का खज़ाना, अतीन्द्रिय सुख का खज़ाना इतना इकठ्ठा किया है, जो अपनी स्थिति तो कायम रहे, लेकिन अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सको?** सर्व की झोली भरने वाले दाता के बच्चे हो ना? अब यह दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा।

AV, Original 15.04.1971
जैसे महादानियों के पास सदैव भिखारियों की भीड़ लगी हुई होती है, वैसे आप सभी के पास भी भिखारियों की भीड़ लगने वाली है। आपके पास प्रदर्शनी में जब भीड़ होती है, तो फिर क्या करते हो? क्यू-सिस्टम (queue system) में शार्ट (short) में सिर्फ संदेश देते हो। रचना की नॉलेज नहीं दे सकते हो, सिर्फ रचयिता बाप का परिचय और सन्देश दे सकते हो। **वैसे ही जब भिखारियों की भीड़ होगी तो सिर्फ यही सन्देश देंगे। लेकिन वह एक सेकेण्ड का सन्देश पावरफुल होता है, जो वह सन्देश उन आत्माओं में संस्कार के रूप में समा जाता है।** सर्व धर्म की आत्मायें भी यह भीख मांगने के लिए आयेंगी।

AV, Original 18.04.1971
जैसे आप के जड़ चित्रों के सामने कितना भी कोई आज कलियुग के महान् मर्तबे वाला जाये, तो क्या होगा? सिर झुकायेंगे। जब चित्रों के आगे सिर झुक जाता है, तो क्या चैतन्य चरित्रवान, सर्व गुणों में बाप समान चैतन्य मूर्त्त के सामने सिर नहीं झुकायेंगे?

AV, Original 18.10.1971 (दीपमाला वा दिवाली के दिन पर)
आज के दिन सर्व आत्माएं धन के प्यासी हैं। तो ऐसी प्यासी आत्माओं को ऐसा रूहानी धन दो, जिससे कभी भी आत्मा को धन मांगने की आवश्यकता ही न रहे। धन कौन मांगते हैं? भिखारी। आज के दिन आत्मा भिखारी बनती है। रॉयल (royal) भिखारी कहो। कितने भी करोड़पति हों, लेकिन आज के दिन भिखारी बनते हैं। **ऐसी भिखारी आत्मा को भिखारीपन से छुड़ाओ, यह है बेहद की सेवा। दाता के बच्चे हो ना? तो दाता के बच्चे, वरदाता के बच्चे, अपने वरदान की शक्ति से, ज्ञान-दान की शक्ति से भिखारियों को मालामाल बनाओ।** आज के दिन इन भिखारी आत्माओं के ऊपर विधाता और वरदाता के बच्चों को तरस पड़ना चाहिए। जिन आत्माओं को ऐसा तरस पड़ता है, उन्हों को ही माया और विश्व की ऐसी आत्माएं नमस्कार करती हैं।

AV, Original 01.11.1971
तो तुम्हारी लास्ट स्टेज है वरदानीमूर्त। **जैसे लक्ष्मी के हस्तों से स्थूल धन देते हुए दिखाते हैं। यह तुम्हारा लास्ट शक्ति-रूप का है, न कि लक्ष्मी का। शक्ति-रूप से सर्वशक्तिवान् का वरदान देते हुए का यह चित्र है, जिसको स्थूल धन के रूप में दिखाते हैं। तो ऐसा अपना स्वरूप, सदा वरदानी अपने आप को साक्षात्कार होता है?** इससे ही समय का अन्दाज़ लगा सकते हो। फिर वरदानीमूर्त शक्तियों के आगे सभी आयेंगे। इसके लिए एक तरफ वरदान का बीज़ पड़ेगा। तो अपने में सर्व शक्ति जमा करनी हैं। **ऐसे वरदानीमूर्त बनते और बनाते जाओ।** आवाज़ से परे जाना है।

AV, Original 07.03.1981
जैसे कहाँ आग लगती है, तो शीतल पानी से आग को बुझाकर, गर्म वायुमण्डल को शीतल बना देते हैं। वैसे आप सबका आजकल विशेष स्वरूप 'मास्टर शान्ति के सागर का' इमर्ज होना चाहिए। मंसा संकल्पों द्वारा, शान्त स्वरूप की स्टेज द्वारा चारों ओर शान्ति कि किरणों को फैलाओ। ऐसा पावरफुल स्वरूप बनाओ, जो अशान्त आत्माएं अनुभव करें कि सारे विश्व के कोने में यही थोड़ी सी आत्मायें शान्ति का दान देने वाली 'मास्टर शान्ति के सागर' हैं। **जैसे चारों ओर अंधकार हो, और एक कोने में रोशनी जग रही हो, तो सबका अटेन्शन स्वत: ही रोशनी की ओर जाता है। ऐसे सबको आकर्षण हो कि चारों ओर की अशान्ति के बीच, यहाँ से शान्ति प्राप्त हो सकती है। शान्ति स्वरूप के चुम्बक बनो। जो दूर से ही अशान्त आत्माओं को खींच सको।** नयनों द्वारा शान्ति का वरदान दो। मुख द्वारा शान्ति स्वरूप की स्मृति दिलाओ। संकल्प द्वारा अशान्ति के संकल्पों को मर्ज कर, शान्ति के वायब्रेशन को फैलाओ।

AV, Original 24.10.1981
विनाशकारियों के पास अभी तक आपके पीस (peace) की किरणें पहुँचती नहीं हैं, इसीलिए कशमकश (dilemma) में हैं। कभी शान्त, कभी अशान्त। तो उन्हों को शान्त करने के लिए पीस-पैलेस (peace palace) से पीस की किरणें जानी चाहिए, तब उन्हों की बुद्धि में ही एक फाइनल (final) फैसला होगा, खत्म करेंगे और शान्त हो शान्तिधाम में चले जायेंगे। तो ऐसे भिखारियों को अब महादानी बन, महादान वा वरदान देने वाले बनो।

AV, Original 06.11.1981
कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त स्वरूप होकर, शान्ति की किरणें दो, तो अशान्त भी शान्त हो जाए। शान्ति स्वरूप रहना अर्थात् शान्ति की किरणें सबको देना। यही काम है। विशेष शान्ति की शक्ति को बढ़ाओ। स्वयं के लिए भी, औरों के लिए भी शान्ति के दाता बनो। भक्त लोग 'शान्ति देवा' कहकर याद करते हैं ना? 'देव' यानी देने वाले। जैसे बाप की महिमा है 'शान्ति दाता', वैसे आप भी 'शान्ति देवा' हो। **यही सबसे बड़े ते बड़ा महादान है। जहाँ शान्ति होगी वहाँ सब बातें होंगी।** तो सभी शान्ति देवा हो, अशान्त के वातावरण में रहते, स्वयं भी शान्त स्वरूप और सबको शान्त बनाने वाले - जो बापदादा का काम है, वही बच्चों का काम है। बापदादा अशान्त आत्माओं को शान्ति देते हैं, तो बच्चों को भी फॉलो फादर (follow Father) करना है।

AV, Original 12.01.1984
जैसे धन के भिखारी को धन दे सम्पन्न बना देते हैं, ऐसे अवगुण वाले को गुण दान दे, गुणवान मूर्त्त बना दो। जैसे योग दान, शक्तियों का दान, सेवा का दान प्रसिद्ध है, तो गुण दान भी विशेष दान है। गुणदान द्वारा आत्मा में उमंग-उत्साह की झलक अनुभव करा सकते हो। तो ऐसे सर्व महादानी मूर्त्त, अर्थात् अनुभवी मूर्त्त बने हो?

AV, Original 18.02.1984
कहाँ एक सेकण्ड की सच्ची अविनाशी प्राप्ति के प्यासी आत्मायें, और कहां आप सभी प्राप्ति स्वरूप आत्मायें! वह गायन करने वाली, और आप सभी बाप की गोदी में बैठने वाले। वह चिल्लाने वाली, और आप हर कदम उनकी मत पर चलने वाले। वह दर्शन की प्यासी, और आप बाप द्वारा स्वयं दर्शनीयमूर्त्त बन गये। थोड़ा सा दु:ख दर्द का अनुभव और बढ़ने दो, फिर देखना आपके सेकण्ड (second) के दर्शन, सेकण्ड की दृष्टि के लिए कितना प्यासे बन आपके सामने आते हैं!

AV, Original 11.05.1984
बापदादा द्वारा सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार रूप में प्राप्त की है इसलिए सफलता का दान, वरदान आपके चित्रों से मांगते हैं। सिर्फ अल्प-बुद्धि होने के कारण, निर्बल आत्मायें होने के कारण, भिखारी आत्मायें होने के कारण, अल्पकाल की सफलता ही मांगते हैं। **जैसे भिखारी कभी भी यह नहीं कहेंगे कि हजार रूपया दो। इतना ही कहेंगे कुछ पैसे दे दो। रूपया, दो - दे दो। ऐसे यह आत्मायें भी सुख-शान्ति-पवित्रता की भिखारी अल्पकाल के लिए सफलता मांगेंगी। 'बस यह मेरा कार्य हो जाए, इसमें सफलता हो जाए'।**

AV, Original 26.11.1984
शान्ति और शक्ति से, औरों के दुख दर्द की अग्नि को शीतल जल के सदृश्य, सर्व के प्रति सहयोगी बनेंगे। ऐसे समय पर तड़पती हुई आत्माओं को सहयोग की आवश्यकता होती है। इसी सहयोग द्वारा ही श्रेष्ठ योग का अनुभव करेंगे। सभी आपके इस सच्चे सहयोग को ही सच्चे योगी मानेंगे। **और ऐसे ही हाहाकार के समय 'सच्चे सहयोगी, सो सच्चे योगी' - इस प्रत्यक्षता से, प्रत्यक्षफल की प्राप्ति से ही जय-जयकार होगी। ऐसे समय का ही गायन है – 'एक बूँद के प्यासे ..' - यह शान्ति की शक्ति की एक सेकण्ड की अनुभूति रूपी बूँद, तड़पती हुई आत्माओं को तृप्ती का अनुभव करायेगी।** ऐसे समय पर एक सेकण्ड की प्राप्ति उन्हें ऐसे अनुभव करायेगी - जैसे कि सेकण्ड में अनेक जन्मों की तृप्ती वा प्राप्ति हो गई। **लेकिन वह एक सेकण्ड की शक्तिशाली स्थिति की बहुत काल से अभ्यासी आत्मा, प्यासे की प्यास बुझा सकती है।** अब चेक करो - ऐसे दुख दर्द, दर्दनाक भयानक वायुमण्डल के बीच सेकण्ड में मास्टर विधाता, मास्टर वरदाता, मास्टर सागर बन, ऐसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करा सकते हो?

AV, Original 14.01.1990
सर्वशक्तियों का स्टॉक (stock) जमा है? या इतना ही है - कमाया और खाया - बस? बापदादा ने सुनाया है कि आगे चलकर आप मास्टर सर्वशक्तिवान के पास सब भिखारी बनकर आयेंगे। **पैसे या अनाज के भिखारी नहीं, लेकिन 'शक्तियों' के भिखारी आएंगे। तो जब स्टॉक होगा तब तो देंगे ना! दान वही दे सकता जिसके पास अपने से ज्यादा है। अगर अपने जितना ही होगा तो दान क्या करेंगे? तो इतना जमा करो।** संगम पर और काम ही क्या है? जमा करने का ही काम मिला है। सारे कल्प में और कोई युग नहीं है जिसमें जमा कर सको। फिर तो खर्च करना पड़ेगा, जमा नहीं कर सकेंगे। **तो जमा के समय अगर जमा नहीं, तो अन्त में क्या कहना पड़ेगा – 'अब नहीं, तो कब नहीं!'**

AV, Original 14.03.2006
अब स्व-उन्नति द्वारा भिन्न-भिन्न शक्तियों की सकाश दो। हिम्मत के पंख लगाओ। ***अपने दृष्टि द्वारा - दृष्टि ही आपकी पिचकारी है - तो अपनी दृष्टि की पिचकारी द्वारा सुख का रंग लगाओ, शान्ति का रंग लगाओ, प्रेम का रंग लगाओ, आनंद का रंग लगाओ। आप तो परमात्म संग के रंग में आ गये। और आत्माओं को भी थोड़ा सा आध्यात्मिक रंग का अनुभव कराओ।*** परमात्म मिलन का मंगल मेले का अनुभव कराओ। भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की राह बताओ।

अखण्ड ज्योति

63] जागती-ज्योति बनने के लिये मुख्य धारणा चाहिए 'अथक' बनने की; अखंड ज्योति अर्थात् कभी भी बुझने वाली नहीं - सदा स्मृति स्वरूप और समर्थी स्वरूप होगा; समर्थ के आगे माया के व्यर्थ रूप समाप्त हो जाते हैं!

AV, Original 18.10.1971
जब लाइट जलाते हैं, तो नमस्कार ज़रूर करते हैं। तो ऐसी ज्योति जगी हुई आत्माओं की यादगार, अभी तक भी कायम है। बुझे हुए दीपक को नमस्कार नहीं करते। तो सदा जागती ज्योति बनो। ऐसी आत्माओं को बापदादा भी नमस्ते करते हैं।

AV, Original 10.09.1975
सदा जागती-ज्योति बने हो? जागने की निशानी है - 'जागना' अर्थात् पाना। तो सर्व प्राप्ति करने वाले सदा जागती-ज्योति हो? **सदा जागती-ज्योति बनने के लिये मुख्य कौनसी धारणा है, जानते हो? जो साकार बाप में विशेष थी - वह बताओ? साकार (ब्रह्मा) बाप की विशेष धारणा क्या थी? जागती-ज्योति बनने के लिये मुख्य धारणा चाहिए 'अथक' बनने की।** जब थकावट होती है, तो नींद आती है - साकार बाप में अथक-पन की विशेषता सदा अनुभव की। **ऐसे फॉलो फादर (follow Father) करने वाले सदा जागती-ज्योति बनते हैं। यह भी चेक करो कि चलते-चलते कोई भी प्रकार की थकावट अज्ञान की नींद में सुला तो नहीं देती?**

AV, Original 24.10.1975
जैसे दीपावली पर घर के हर कोने को स्वच्छ करते हैं, कोई एक कोना भी न रह जाये, इतना अटेन्शन रखते हैं - ऐसे हर कर्म-इन्द्रिय को स्वच्छ बना कर, आत्मा का दीपक सदाकाल के लिये जगाया है? ऐसे रूहानी दीवाली मनाई है - अथवा अभी मनानी है? सबके दीपक अखण्ड जगमगा रहे है ना? जैसे गायन है कि घर-घर मन्दिर बनेंगे। **ऐसे अपने देह रूपी घर को मन्दिर बनाया है? जब घर-घर मन्दिर बनाओ, तब ही विश्व को भी चैतन्य देवताओं का निवास स्थान मन्दिर बनायेंगे।**

AV, Original 02.02.1977
कुल के दीपक अर्थात् सदा अपनी स्मृति की ज्योति से, ब्राह्मण कुल का नाम रोशन करता रहे। ऐसे अपने को कुल के दीपक समझते हो? **सदा स्मृति की ज्योति जगी हुई है? बुझ तो नहीं जाती? अखंड ज्योति अर्थात् कभी भी बुझने वाली नहीं। आपके जड़ चित्रों के आगे भी 'अखण्ड ज्योति' जगाते हैं। चैतन्य अखण्ड ज्योति का ही वह यादगार है** - तो चैतन्य दीपक बुझ सकते हैं? क्या बुझी हुई ज्योति अच्छी लगती है? तो स्वयं को भी चेक करो - **जब स्मृति की ज्योति बुझ जाती है, तो कैसा लगता होगा? क्या वह अखण्ड ज्योति हुई? ज्योति की निशानी है - सदा स्मृति स्वरूप और समर्थी स्वरूप होगा।**

AV, Original 30.01.1979
जैसी स्मृति होती है, वैसी स्थिति स्वत: बन जाती है। तो स्मृति रहती है कि हम महान श्रेष्ठ आत्मा हैं। स्मृति को सदा चैक (check) करो कि निरंतर विशेष आत्मा की रहती है - या चलते-चलते साधारण बन जाती है? सदा अपना आक्यूपेशन (occupation की स्मृति) कि मैं विश्व में ब्राह्मण चोटी हूँ। **सदा अपने मस्तक पर स्मृति का तिलक लगा हुआ हो। लौकिक रीति से भी ब्राह्मण तिलक लगाते हैं, तो यह निशानी अब संगमयुग की है, तो सदा तिलक कायम रहता है? माया मिटाती तो नहीं है? सदा अटेन्शन रहे, तो स्मृति का तिलक अमिट और अविनाशी रहेगा।**

AV, Original 21.11.1979
अखण्ड ज्योति। **भक्ति में भी आपके चित्रों के आगे अखण्ड ज्योति जलाते हैं। क्यों जलाते हैं? चेतन्य स्वरूप में अखण्ड ज्योति स्वरूप रहे हो, तब अखण्ड ज्योति का यादगार रहता है।** ज्योति के आगे कोई आवरण तो नहीं आता, तूफान हिलाता तो नहीं हैं? अपना भी स्वरूप ज्योति, बाप भी ज्योति, और घर भी ज्योति तत्व है। तो सिर्फ 'ज्योति' शब्द भी याद रखो, तो सारा ज्ञान आ जाता है। **यही एक 'ज्योति' शब्द की सौगात ले जाना, तो सहज ही विघ्न-विनाशक हो जायेंगे!**

AV, Original 26.12.1979

जब स्मृति-स्वरूप हो जाते हैं, तो अमिट तिलकधरी बन जाते हैं। नहीं तो बार-बार तिलक लगाना पड़ता है। अभी-अभी मिटता है, अभी-अभी लगता है। लेकिन संगमयुगी राजयोगियों को निरन्तर अविनाशी तिलक-धारी होना हैं। माया अविनाशी को विनाशी बना न सके। रोज़ अमृतबेले इस त्रि-स्मृति के अविनाशी तिलक को चेक करो, तो माया सारे दिन में मिटाने की हिम्मत नहीं रख सकेगी। तीन स्मृति-स्वरूप अर्थात् सर्व समर्थ स्वरूप। **यह समर्थ का तिलक है। समर्थ के आगे माया के व्यर्थ रूप समाप्त हो जाते हैं। माया के पाँच रूप पाँच दासियों के रूप में हो जायेंगे।**

AV, Original 08.11.1981

स्वयं को ऐसे सदा जगे हुए दीपक अनुभव करो। टिमटिमाने वाले नहीं। कितने भी तूफान आयें लेकिन सदा एकरस, अखण्ड ज्योति के समान जगे हुए दीपक। **ऐसे दीपकों को विश्व भी नमन करती है, और बाप भी ऐसे दीपकों के साथ रहते हैं। टिमटिमाते दीपकों के साथ नहीं रहते। बाप जैसे सदा जागती ज्योति है, अखण्ड ज्योति है, अमर ज्योति है, ऐसे बच्चे भी सदा 'अमर ज्योति'!** अमर ज्योति के रूप में भी आपका यादगार है। चैतन्य में बैठे अपने सभी जड़ यादगारों को देख रहे हो। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें हो।

AV, Original 27.03.1982

जैसे मन्दिर का वातावरण दूर से ही खींचता है, ऐसे याद की खुशबू का वातावरण ऐसा श्रेष्ठ हो, जो आत्माओं को दूर से ही आकर्षित करे कि यह कोई विशेष स्थान है। सदा याद की शक्ति द्वारा स्वयं को आगे बढ़ाओ और साथ-साथ वायुमंडल को भी शक्तिशाली बनाओ। सेवाकेन्द्र का वातावरण ऐसा हो, जो सभी आत्मायें खिंचती हुई आ जाएं। सेवा सिर्फ वाणी से ही नहीं होती, मंसा से भी सेवा करो। हरेक समझे मुझे वातावरण पावरफुल बनाना है, हम जिम्मेवार हैं। ऐसा जब लक्ष्य रखेंगे तो सेवा की वृद्धि के लक्षण दिखाई देंगे। आना तो सबको है, यह तो पक्का है। लेकिन कोई सीधे आ जाते हैं, कोई चक्कर लगाकर, भटकने के बाद आ जाते हैं। **इसलिए एक-एक समझे कि मैं जागती ज्योति बनकर ऐसा दीपक बनूँ जो परवाने आपेही आयें। आप जागती ज्योति बनकर बैठेंगे, तो परवाने आपेही आयेंगे।**

AV, Original 28.12.1982

जब चमकते हुए सितारे - सूर्य, चन्द्रमा समान, अपनी सम्पूर्ण स्टेज पर स्थित होंगे, फिर क्या होगा? **जैसे स्थूल रोशनी के ऊपर परवाने स्वत: ही आते हैं, शमा बुलाने नहीं जाती है, लेकिन प्यासे परवाने कहाँ से भी पहुँच जाते हैं। ऐसे आप चमकते हुए सितारों पर भटकती हुई आत्मायें, ढूंढने वाली आत्मायें, स्वत: ही पाने के लिए, मिलने के लिए, ऐसी फास्ट गति से आयेंगे, जो आप सबको सेकेण्ड में बाप द्वारा मुक्ति, जीवनमुक्ति का अधिकार दिलाने की तीव्रगति से सेवा करनी पड़ेगी।**

AV, Original 06.03.1985

अखण्ड ज्योति बाप के साथ, आप भी अखण्ड ज्योति अर्थात् सदा जगने वाले सितारे बन गये। ऐसे अनुभव करते हो? कभी वायु हिलाती तो नहीं है - दीपक वा सितारे को? जहाँ बाप की याद है, वह अविनाशी जगमगाता हुआ सितारा है। टिमटिमाता हुआ नहीं। **लाइट भी जब टिमटिम करती है तो बन्द कर देते हैं, किसी को अच्छी नहीं लगती। तो यह भी सदा जगमगाता हुआ सितारा।** सदा ज्ञान सूर्य बाप से रोशनी ले, औरों को भी रोशनी देने वाले।

AV, Original 11.11.1985

सम्पूर्णता अर्थात् सदा जगे हुए दीपक। बुझे हुए दीपकों की दीपमाला नहीं कही जाती। जगे हुए दीपक की दीपमाला कही जाती। तो सदा एक रस जगे हुए दीपकों की निशानी - सम्पूर्णता है।

AV, Original 25.11.1985

जैसे श्रीकृष्ण के लिए दिखाते हैं कि उसने साँप को भी जीता। उसके सिर पर पाँव रखकर नाचा। तो यह आपका चित्र है। कितने भी जहरीले साँप हों लेकिन आप उन पर भी विजय प्राप्त कर नाच करने वाले हो। यही श्रेष्ठ शक्तिशाली स्मृति सबको समर्थ बना देगी। और जहाँ समर्थता है, वहाँ व्यर्थ समाप्त हो जाता है। समर्थ बाप के साथ हैं, इसी स्मृति के वरदान से सदा आगे बढ़ते चलो।

'सन शोज फादर' – 'son shows Father'

64] फादर का शो, बच्चे प्रैक्टिकल में लाने से ही करेंगे; यह प्रैक्टिकल रूहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे; आप सबके रूप में बाप का रूप अनुभव करें - जिसको भी देखें तो परमात्म स्वरूप की अनुभूति हो!

AV, Original 23.01.1970

जो भी सेवाकेंद्र हैं, उन्हों के वायुमंडल को आकर्षणमय बनाना चाहिए - जो उन्हों को, अव्यक्त वतन देखने में आये। **कोई भी दूर से महसूस करे कि यह इस घर के बिच में कोई चिराग (lamp) है। चिराग दूर से ही रोशनी देता है। अपने तरफ आकर्षित करता है। तो चिराग माफिक चमकता हुआ नज़र आये - तब है सफलता।**

AV, Original 26.06.1970

ऐसे दर्शनीय मूर्त वा साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे, जब अव्यक्त आकृति रूप दिखायेंगे। कोई भी सामने आये तो उसे शरीर न दिखाई दे, लेकिन सूक्ष्मवतन में प्रकाशमय रूप दिखाई दे। सिर्फ मस्तक की लाइट नहीं, लेकिन सारे शरीर द्वारा लाइट के साक्षात्कार होंगे। जब लाइट ही लाइट देखेंगे, तो स्वयं भी लाइट (light) रूप हो जायेंगे।

AV, Original 15.04.1971

ऐसे महादानी बनने से फिर लाइट और माइट का गोला नज़र आयेगा। आपके मस्तष्क से लाइट (light) का गोला नज़र आयेगा; और चलन से, वाणी से नॉलेज रूपी माइट (might) का गोला नज़र आयेगा अर्थात् बीज नजर आयेगा। मास्टर बीजरूप हो ना? ऐसे लाइट और माइट का गोला नज़र आने वाले साक्षात् और साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगे। समझा?

AV, Original 11.07.1971

मान की इच्छा को छोड़ स्वमान में टिक जाओ, तो मान परछाई के समान आपके पिछाड़ी में आयेगा। **जैसे भक्त अपने देवताओं वा देवियों के पीछे अन्धश्रद्धा वश भी कितने भाग-दौड़ करते हैं। वैसे चैतन्य स्वरूप में, स्वमान में स्थित हुई आत्माओं के पीछे, सर्व आत्माएं मान देने के लिए आयेंगी, दौड़ेंगी।** भक्तों की भाग-दौड़ देखी है? आप लोगों के यादगार जड़ चित्र हैं। उनमें भी चित्रकार मुख्य यही धारणा भरते हैं - **एक तरफ शक्तियों का रूहाब भी फुल फोर्स में दिखाते हैं, और साथ-साथ रहम का भी दिखाते हैं। एक ही चित्र में दोनों ही भाव प्रकट करते हैं ना?** यह क्यों बना है? क्योंकि प्रैक्टिकल में आप रूहाब और रहमदिल-मूर्त बने हो। **तो जड़ चित्रों में भी यही मुख्य धारणाएं दिखाते हैं। तो आप लोग अभी जब सर्विस पर हो, तो सर्विस के प्रत्यक्षफल का आधार इन दो मुख्य धारणाओं के ऊपर है।** रहमदिल जरूर बनना है।

AV, Original 05.02.1972

'सन शोज फादर' गाया हुआ है। तो फादर का शो (show) बच्चे प्रैक्टिकल में लाने से ही करेंगे। 'अहो प्रभु' की पुकार जो आत्माओं की निकलेगी, वा पश्चाताप की लहर जो आत्माओं में आयेगी - वह कब, कैसे आयेगी? जिन्होंने साकार में अनुभव ही नहीं किया - उन्हों को भी बाप के परिचय से कि हम बाबा के बच्चे हैं - यह कब मानेंगे कि बरोबर बाप आये, लेकिन हम लोगों ने कुछ नहीं पाया? तो यह प्रैक्टिकल रूहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे। **अपने को, और आप निमित बनी हुई आत्माओं की स्टेज को देखते हुए, अनुभव करेंगे - बाप ने इन्हों को क्या बनाया! और फिर पश्चाताप करेंगे।**

AV, Original 12.07.1972

जैसे स्थूल ड्रेस को देख कर समझ लेते हैं कि यह हम लोगों से कोई न्यारे हैं। वैसे ही यह सूरत वा अव्यक्त मूर्त न्यारापन दिखावे, तब प्रभाव निकलेगा। चलते-फिरते ऐसी श्रेष्ठ स्थिति हो, ऐसी श्रेष्ठ स्मृति और वृति हो, जो चारों ओर की वृतियों को अपनी तरफ आकर्षण करे। जैसे कोई आकर्षण की चीज़ आस-पास वालों को अपनी तरफ आकर्षित करती है ना? सभी का अटेन्शन जाता

है। **वैसे यह रूहानियत वा अलौकिकता आस-पास वालों की वृतियों को अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकती है? क्या यह स्टेज अन्त में आनी है?**

AV, Original 15.09.1974

चक्रधारी बनने से ही चक्रवर्ती महाराजा बनेंगे। यहाँ चक्रधारी, वहाँ चक्रवर्ती। जिसमें लाइट का भी चक्र हो, और सेवा में प्रकाश फैलाने वाला चक्र भी हो, तब ही कहेंगे-'चक्रधारी'। ऐसा चक्रधारी ही चक्रवर्ती बन सकता है। **चलते-फिरते लाइट का चक्र हरेक को दिखाई देगा, जैसे इन आंखों से दिखाई पड़ रहा है। आश्चर्य खावेंगे कि यह सचमुच है, व मैं ही देख रहा हूँ? आपके लाइट का रूप और लाइट का क्राउन ऐसा कॉमन (common) हो जायेगा कि चलते-फिरते सबको दिखाई देगा - यह लाइट के ताजधारी हैं।**

AV, Original 26.01.1983

इस बेहद के कार्य द्वारा यह एडवरटाइज (advertise) विशाल रूप में होनी है, **जैसे धरती के अन्दर कोई छिपी हुई वा दबी हुई चीजें अचानक मिल जाती हैं, तो खुशी-खुशी से सब तरफ प्रचार करते हैं। ऐसे ही यह आध्यात्मिक खज़ानों की प्राप्ति का स्थान जो अभी गुप्त है, इसको अनुभव के नेत्र द्वारा देख, ऐसे ही समझेंगे जैसे गँवाया हुआ, खोया हुआ गुप्त खज़ाने का स्थान फिर से मिल गया है।** धीरे-धीरे सबके मन से, मुख से यही बोल निकलेंगे कि – 'ऐसे कोने में इतना श्रेष्ठ प्रापति का स्थान!' इसको तो खूब प्रसिद्ध करो। **तो विचित्र बाप, विचित्र लीला और विचित्र स्थान, यही देख-देख हर्षित होंगे। वन्डरफुल बात है, वन्डरफुल कार्य है - यही सबके मुख से सुनते रहेंगे।** ऐसे सदाकाल की अनुभूति कराने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की हैं?

AV, Original 01.01.1986

जैसे भक्ति में कहते हो ना कि यह सब परमात्मा के रूप हैं। वह उल्टी भावना से कह देते हैं। लेकिन ज्ञान के प्रभाव से आप सबके रूप में बाप का रूप अनुभव करें - जिसको भी देखें तो परमात्म स्वरूप की अनुभूति हो। तब नवयुग आयेगा। अभी पहले जन्म की प्रजा तैयार नहीं की है। पिछली प्रजा तो सहज बनेगी।

AV, Original 15.01.1986

जितनी समीपता उतनी समानता होगी। उनका मुखड़ा बापदादा का साक्षात्कार कराने वाला दर्पण होगा। उनको देखते ही बापदादा का परिचय प्राप्त होगा। भले देखेंगे आपको, लेकिन आकर्षण बापदादा की तरफ होगी। इसको कहा जाता है - 'सन शोज फादर'। स्नेही के हर कदम में, जिससे स्नेह है उसकी छाप देखने में आती है। जितना हर्षित मूर्त, उतना आकर्षण मूर्त बन जाते हैं।

AV, Original 23.03.1988

बाप को प्रत्यक्ष करने की सिद्धि आत्माओं को सद्गति की राह दिखाये। यह न्यारापन है। अगर आपकी महिमा कर ली कि बहुत अच्छा है, बोलने का आर्ट (art) है, या अथार्टी के बोल हैं - यह तो और आत्माओं की भी महिमा होती है। **लेकिन आपके बोल, बाप की महिमा अनुभव करायें। यही विशेषता प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का साधन है।** तो जिसकी दिल में सदा दिलाराम है, उनके मुख द्वारा भी दिल का आवाज दिलाराम को स्वत: ही प्रत्यक्ष करेगा। तो यह चेक करो कि हर कदम में, बोल में मेरे द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होती है - मेरा बोल बाप से सम्बन्ध जोड़ने वाला बोल है? **क्योंकि अभी लास्ट सेवा का पार्ट ही है - प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना। मेरा हर कर्म श्रेष्ठ कर्म की गति सुनाने वाले बाप को प्रत्यक्ष करने वाला है? जिसकी दिल में सदा बाप है, वह स्वत: ही 'सन शोज फादर' करने वाला समीप अर्थात् समान बच्चा है।**

AV, Original 19.02.2012

अभी से आपके चेहरे पर व्यर्थ की समाप्ति, और सदा स्मृति स्वरूप की झलक चेहरे और चलन में आनी चाहिए। यह माया के जो शब्द हैं ना! क्या, क्यों, कब, कैसे ... यह समाप्त हो जाएं, तब चेहरा और चलन सेवा करेंगे। अभी ज्यादा प्रभाव भाषणों का है। बापदादा खुश है भाषण बहुत अच्छे कर रहे हैं, लेकिन दिन प्रतिदिन अभी जैसे यह भाषणों द्वारा, वाणी द्वारा सेवा का उमंग अच्छा

रखा और सफलता भी पाई - **ऐसे ही अभी समय प्रमाण आपकी ज्यादा सेवा चेहरे और चलन से होगी।** उसका अभ्यास, जैसे भाषणों का अभ्यास करते-करते होशियार हो गये हो ना - **ऐसे अभी चेहरे और चलन से किसी को खुशी का वरदान दो, यह अभ्यास करो - क्योंकि समय कम मिलेगा, इसलिए समय और संकल्प का महत्व रखते हुए आगे बढ़ते जाओ।**

एकरस स्थिति - एकाग्रता

65] बिन्दु होकर बैठना कोई जड़ अवस्था नहीं है - ऐसे होकर बैठने से सब रसनायें आयेंगी; एक ठिकाने बुद्धि टिक जाने से एकरस अवस्था रहती है; चैतन्य रूप में एकाग्रचित की शक्ति को बढ़ाओ, तो रूहों की दुनिया में रूहानी सेवा होगी; जो सदा एक भरोसे में रहे हैं, वही सदा एकरस रहते हैं!

AV, Original 24.07.1969
मैं आत्मा बिन्दु रूप हूँ, क्या यह याद नहीं आता है? **बिन्दी रूप होकर बैठना नहीं आता? ऐसे ही अभ्यास को बढ़ाते जाओगे, तो एक सेकेण्ड तो क्या - कितने ही घंटों इसी अवस्था में स्थित होकर, इस अवस्था का रस ले सकते हो। इसी अवस्था में स्थित रहने से फिर बोलने की जरूरत ही नहीं रहेगी। बिन्दु होकर बैठना कोई जड़ अवस्था नहीं है।** जैसे बीज में सारा पेड़ समाया हुआ है, वैसे ही मुझ आत्मा में बाप की याद समाई हुई है? ऐसे होकर बैठने से सब रसनायें आयेंगी।

AV, Original 16.10.1969
आत्मिक स्थिति के साथ-साथ, यथार्थ रूप से वही परख सकता है, जिनकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प नहीं चलते होंगे। उनकी बुद्धि एक के ही याद में, एक के ही कार्य में, और एकरस स्थिति में होगी - वह दूसरे को जल्दी परख सकेंगे। जिनकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प उत्पन्न होंगे, तो उनकी बुद्धि दूसरों को परखने के लिए भी अपने व्यर्थ संकल्प की मिक्सचरिटी होगी।

AV, Original 21.01.1971
एक ठिकाने बुद्धि टिक जाने से एकरस अवस्था रहती है। इसलिए सदैव बुद्धि को एक ठिकाने में टिकाने की जो युक्ति मिली है, वह स्मृति में रखो। हिलने न दो। हिलना अर्थात् हलचल पैदा करना। फिर समय भी बहुत व्यर्थ जाता है। युद्ध में समय बहुत जाता है। शक्तियों के चित्र में शक्तियों की निशानी क्या दिखाते हैं? एक तो वह अलंकारी हैं, दूसरा संहारी भी हैं। अलंकार किसलिए हैं? संहार करने के लिए। ऐसे ही अलंकारी, संहारकारी मूर्त अपने को समझकर चलते चलो।

AV, Original 19.04.1971
जैसे तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं, वैसे अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो, तब सिंहासन मिलेगा। ऐसा प्रयत्न करो, जो देखते ही सब के मुख से एक ही आवाज़ निकले कि यह कुमार तो तपस्वी कुमार बनकर आये हैं। हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्माभिमानी की तपस्या, प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। …
जैसे अपने चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं - ऐसे एकरस स्थिति के आसन पर स्थित हो, तपस्वी रूप अपना प्रत्यक्ष दिखाओ।

AV, Original 04.07.1974
जितना-जितना स्व-स्थिति, श्रेष्ठ-स्थिति, ज्ञान-स्वरूप व आत्मा के सर्व-गुणों से सम्पन्न स्थिति - अचल, अडोल, निरन्तर और एकरस होती जायेगी - तो उतने ही संकल्पों की हलचल समाप्त होती जायेगी। जैसे साकार में मात-पिता को देखा कि दोनों के ही नशे में, संकल्प की भी हलचल नहीं थी। सम्पूर्ण अचल और अटल निश्चय था कि यह तो बना हुआ ही है, अथवा यह तो निश्चित ही है। **तो नशे की निशानी अटल निश्चय और निश्चिन्त अनुभव होगी। निशाने की निशानी नशा, और नशे की निशानी निश्चय और निश्चिन्त।**

AV, Original 26.01.1977
जैसे शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया है, हस्त भी एकाग्र रूप दिखाते हैं। वरदान का पोज (pose - स्थिति) हस्त, दृष्टि और संकल्प एकाग्र ही दिखाते हैं, ऐसे चैतन्य रूप में एकाग्रचित की शक्ति को बढ़ाओ, तो रूहों की दुनिया में रूहानी सेवा होगी। रूहानी दुनिया मूलवतन नहीं, लेकिन रूह, रूह को आह्वान करके रूहानी सेवा करे। यह रूहानी

लीला का अनुभव करो। **यह रूहानी सेवा फास्ट स्पीड़ (fast speed - तीव्र गति) में कर सकते हो।** तो वाचा और कर्मणा की सेवा में, जो तेरी-मेरी का टकराव होता है - नाम, मान, शान का टकराव होता है - स्वभाव, संस्कारों का टकराव होता है - समय व सम्पत्ति का अभाव होता है - इसी प्रकार के जो भी विघ्न पड़ते हैं, यह सर्व विघ्न समाप्त हो जायेंगे। **रूहानी सेवा का एक संस्कार बन जायेगा।**

AV, Original 03.02.1979

अगर अपनी सीट छोड़ते हो तो हार होती, सीट पर सेट होने वाले में शक्ति होती - सीट छोड़ी तो शक्तिहीन। **तो मास्टर रचता की सीट पर सेट रहना है - सीट के आधार पर शक्तियाँ स्वत: आयेगी। नीचे नहीं आना, नीचे है ही देह अभिमान रूपी माया की धूल। नीचे आयेंगे तो धूल लग जायेगी, अर्थात् शुद्ध आत्मा से अशुद्ध हो जायेंगे।** बच्चा भी अगर स्थान से नीचे आ जाता है तो मैला हो जाता है, बच्चे के लिए भी अटेन्शन रखते - मैला न हो जाए। **तो देहभान में आना अर्थात् मैला होना।**

AV, Original 26.11.1979

सदा 'एक बल एक भरोसा' इसी लगन में रहते हो? जो सदा एक भरोसे में रहे हैं, वही सदा एकरस रहते हैं। और कोई भी रस ऐसी आत्माओं को आकर्षित नहीं कर सकता। ऐसी आत्मायें सदा स्वयं भी लाइट हाऊस बन, निर्विघ्न होकर चलती हैं, और अनेकों के निमित्त रास्ता दिखाने वाली बनती हैं।

AV, Original 28.12.1979

एकाग्रता से सर्व शक्तियाँ सिद्धि स्वरूप में प्राप्त हो जाती हैं। क्योंकि स्परूप स्पष्ट होता है, तो स्वरूप की शक्तियाँ भी ऐसे ही स्पष्ट अनुभव होती हैं। समझा - एकाग्रता की महिमा? वैसे भी आजकल की दुनिया में हलचल से तंग आ गये हैं। चाहे राजनीति की हलचल, चाहे वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करैन्सी (currency) की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल - ऐसे सर्व प्रकार की हलचल में तंग आ गये हैं। जितने साइन्स के साधन पहले सुख के साधन अनुभव होते थे, आज वह साधन भी हलचल अनुभव कराने वाले हो गये हैं। यहाँ भी ब्राह्मण आत्मायें संकल्प में व सम्पर्क में, हलचल से ही थकती हैं। **इसलिए सहज विधि है - एकाग्रता को अपनाओ। इसके लिए सदा एकान्तवासी बनो। एकान्तवासी से एकाग्र सहज ही हो जायेंगे।**

AV, Original 27.03.1985

एकाग्रता अर्थात् एक बाप के साथ सदा लगन में मगन रहना। **एकाग्रता की निशानी सदा उड़ती कला के अनुभूति की एकरस स्थिति होगी। एकरस का अर्थ यह नहीं कि वही रफ्तार हो, तो एकरस है। एकरस अर्थात् सदा उड़ती कला की महसूसता रहे - इसमें एकरस।** जो कल था उससे आज परसेन्टेज में वृद्धि का अनुभव करें। इसको कहा जाता है - उड़ती कला।

AV, Original 31.12.2005

एकाग्रता की शक्ति विशेष संस्कार भस्म करने में आवश्यक है। जिस स्वरूप में एकाग्र होने चाहो, जितना समय एकाग्र होने चाहो, ऐसी एकाग्रता संकल्प किया और भस्म। इसको कहा जाता है योग अग्नि। नामनिशान समाप्त। मारने में फिर भी लाश तो रहता है ना। भस्म होने के बाद नामनिशान खत्म। तो इस वर्ष योग को पावरफुल स्टेज में लाओ। जिस स्वरूप में रहने चाहो - मास्टर सर्वशक्तिवान आर्डर करो, समाप्त करने की शक्ति - आपके आर्डर से नहीं माने, यह हो नहीं सकता।

AV, Original 15.12.2008

बापदादा ने शुरू-शुरू में बच्चों को दिखाया था कि कई बुरी दृष्टि वाले पीछे आते हैं, लेकिन उन्हों को लाइट ही दिखाई देती है। मनुष्य दिखाई नहीं देता, लाइट ही दिखाई देती, फरिश्ता रूप ही दिखाई देता। **ऐसे आपका एकाग्रता का अभ्यास होते भी आप ऐसे सामने बैठे हो, लेकिन उनको दिखाई नहीं देगा। लाइट लाइट ही दिखाई देगी। ऐसे होना है। लेकिन अभ्यास अब से करो - फरिश्ता।** अच्छा। अभी तीन मिनट मन की एकाग्रता का अभ्यास करो। यह ड्रिल करो।

संकल्प की शक्ति

66] मंसा सेवा कर्मणा से श्रेष्ठ है; एक समर्थ संकल्प का फल पद्मगुणा मिलता है; संकल्प शक्ति सबसे श्रेष्ठ शक्ति है, मूल शक्ति है; कितना भी कोई दूर हो, कोई साधन नहीं हो, लेकिन संकल्प की भाषा द्वारा किसी को भी मैसेज (message) दे सकते हो; श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार है!

AV, Original 19.06.1970
संकल्पों को ब्रेक लगाने का मुख्य साधन कौन सा है? मालूम है? जो भी कार्य करते हो, तो करने के पहले सोचकर फिर कार्य शुरू करो। जो कार्य करने जा रहा हूँ वह बापदादा का कार्य है, मैं निमित्त हूँ। जब कार्य समाप्त करते हो, तो जैसे यज्ञ रचा जाता है तो समाप्ति समय आहुति दी जाती है। इस रीति जो कर्तव्य किया और जो परिणाम निकला - वह बाप को समर्पण, स्वाहा कर दिया - फिर कोई संकल्प नहीं। **निमित्त बन कार्य किया और जब कार्य समाप्त हुआ, तो स्वाहा किया। फिर संकल्प क्या चलेगा? जैसे आग में चीज़ डाली जाती है तो फिर नाम निशान नहीं रहता, वैसे हर चीज़ की समाप्ति में सम्पूर्ण स्वाहा करना है। फिर आपकी जिम्मेवारी नहीं।** जिसके अर्पण हुए फिर जिम्मेवार वह हो जाते हैं। फिर संकल्प काहे का? जैसे घर में कोई बड़ा होता है, तो जो भी काम किया जाता है, तो बड़े को सुनाकर खाली हो जायेंगे। **वैसे ही जो कार्य किया, समाचार दिया, बस।**

AV, Original 07.03.1982
जो सदा स्मृति स्वरूप रहते, उनकी रेखायें सदा मस्तक में संकल्पों की गति धैर्यवत होगी। किसी भी प्रकार का बोझ नहीं होगा, प्रेशर (pressure) नहीं होगा। एक मिनट में एक संकल्प द्वारा अनेक संकल्पों को जन्म नहीं देंगे। जैसे शरीर में कोई भी बीमारी को नब्ज की गति से चेक करते हैं, ऐसे संकल्प की गति, यह मस्तक की रेखा की पहचान है। **अगर संकल्प की गति बहुत तीव्र गति में है - एक से एक, एक से एक संकल्प चलते ही रहते हैं - तो संकल्पों की गति अति तीव्र होना, यह भी भाग्य की एनर्जी (energy) को वेस्ट करना है।** जैसे मुख द्वारा अति तीव्र गति से और सदा ही बोलते रहने से, शरीर की शक्ति वा एनर्जी वेस्ट (waste) होती है। कोई सदा बोलते ही रहते हैं, ज्यादा बोलते हैं, जोर से बोलते - तो उसको क्या कहते हो? - धीरे बोलो, कम बोलो। **ऐसे ही संकल्पों की गति रूहानी एनर्जी को वेस्ट करती है।** सभी बच्चे अनुभवी हैं - जब व्यर्थ संकल्प चलते हैं, तो संकल्पों की गति क्या होती है - और जब ज्ञान का मनन चलता है, तो संकल्पों की गति क्या होती है? **वह एनर्जी वेस्ट करता है, वह एनर्जी बनाता है।**

AV, Original 19.03.1982
कर्म सबसे स्थूल चीज है। संकल्प सूक्ष्म शक्ति है। आजकल की आत्मायें स्थूल मोटे रूप को जल्दी जान सकती हैं। वैसे सूक्ष्म शक्ति स्थूल से बहुत श्रेष्ठ है - लेकिन लोगों के लिए सूक्ष्म शक्ति के वायब्रेशन (vibration) कैच करना अभी मुश्किल है। कर्म शक्ति द्वारा, आपकी संकल्प शक्ति को भी जानते जाएंगे। **मंसा सेवा कर्मणा से श्रेष्ठ है। वृत्ति द्वारा वृत्तियों को, वायुमण्डल को परिवर्तन करना यह सेवा भी अति श्रेष्ठ है।** लेकिन इससे सहज कर्म है। उसकी परिभाषा तो पहले भी सुनाई है, लेकिन आज इस बात को स्पष्ट कर रहे हैं कि कर्म द्वारा शक्ति स्वरूप का दर्शन अथवा साक्षात्कार कराओ - तो कर्म द्वारा संकल्प शक्ति तक पहुँचना सहज हो जायेगा। **नहीं तो कमजोर कर्म - सूक्ष्म शक्ति बुद्धि को भी, संकल्प को भी नीचे ले आयेंगे। जैसे धरनी की आकर्षण ऊपर की चीज को नीचे ले आती है।** इसलिए चित्र को चरित्र में लाओ।

AV, Original 09.01.1983
ज्यादा सोचने के अभ्यासी नहीं बनो। जो भी सोच आये उसको वहाँ ही खत्म करो। एक सोच के पीछे अनेक सोच चलने से, फिर स्थिति और शरीर दोनों पर असर आता है। इसलिए डबल विदेशी बच्चों को सोचने की बात पर डबल अटेन्शन देना चाहिए। क्योंकि अकेले रहकर सोचने के नैचरल (natural) अभ्यासी हो। तो वह अभ्यास जो पड़ा हुआ है, **इसलिए यहाँ भी छोटी-छोटी बात पर ज्यादा सोचते। तो सोचने में टाइम वेस्ट जाता और खुशी भी गायब हो जाती। और शरीर पर भी असर आता है, उसके कारण फिर सोच चलता है।** इसलिए तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए - सोचो कम। **अगर सोचना ही है, तो ज्ञान रत्नों को सोचो।** व्यर्थ संकल्प की भेंट में समर्थ संकल्प हर बात का होता है। **मानो अपनी स्थिति वा योग के लिये व्यर्थ संकल्प**

चलता है कि 'मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं, अशरीरी होते नहीं'। यह है - व्यर्थ संकल्प। उनकी भेंट में समर्थ संकल्प करो – 'याद तो मेरा स्वधर्म है। बच्चे का धर्म ही है, बाप को याद करना। क्यों नहीं होगा, जरूर होगा'।

AV, Original 24.03.1985

व्यर्थ संकल्प इतना फोर्स (force) से आते जो कण्ट्रोल (control) नहीं कर पाते। फिर उस समय कहते क्या करें, हो गया ना। रोक नहीं सकते। जो आया वह कर लिया, लेकिन व्यर्थ के लिए कण्ट्रोलिंग पावर चाहिए। एक समर्थ संकल्प का फल पद्मगुणा मिलता है। ऐसे ही एक व्यर्थ संकल्प का हिसाब-किताब - उदास होना, दिलशिकस्त होना, वा खुशी गायब होना, वा समझ नहीं आना कि मैं क्या हूँ, अपने को भी नहीं समझ सकते - यह भी एक का बहुत गुणा के हिसाब से अनुभव होता है। फिर सोचते हैं कि था तो कुछ नहीं। पता नहीं क्यों खुशी गुम हो गई? बात तो बड़ी नहीं थी लेकिन बहुत दिन हो गये हैं - खुशी कम हो गई है।

AV, Original 02.12.1985

मुख्य बन्धन है - मन्सा संकल्प की कण्ट्रोलिंग पावर नहीं। अपने ही संकल्पों के वश होने के कारण परवश का अनुभव करते हैं। जो स्वयं के संकल्पों के बन्धनों में है वह बहुत समय इसी में बिजी रहता है। …

जैसे भक्ति में पूजा कर, सजा-धजा करके फिर डुबो देते हैं ना, ऐसे संकल्प के बन्धन में बंधी हुई आत्मा, बहुत कुछ बनाती और बहुत कुछ बिगाड़ती है। स्वयं ही इस व्यर्थ कार्य से थक भी जाती है। दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। और कभी अभिमान में आकर, अपनी गलती दूसरे पर भी लगाते रहते। फिर भी समय बीतने पर अन्दर समझते हैं, सोचते हैं कि 'यह ठीक नहीं किया'। लेकिन अभिमान के परवश होने के कारण, अपने बचाव के कारण, दूसरे का ही दोष सोचते रहते हैं। सबसे बड़ा बन्धन यह मन्सा का बन्धन है। जो बुद्धि को ताला लग जाता है। इसलिए कितनी भी समझाने की कोशिश करो, लेकिन उनको समझ में नहीं आयेगा। **मन्सा बन्धन की विशेष निशानी है - महसूसता शक्ति समाप्त हो जाती है। इसलिए इस सूक्ष्म बन्धन को समाप्त करने के बिना, कभी भी आन्तरिक खुशी, सदा के लिए अतीन्द्रिय सुख अनुभव नहीं कर सकेंगे।**

AV, Original 04.12.1985

संकल्प की भाषा यह भी बहुत श्रेष्ठ भाषा है। क्योंकि संकल्प शक्ति सबसे श्रेष्ठ शक्ति है, मूल शक्ति है। और सबसे तीव्रगति की भाषा यह संकल्प की भाषा है। कितना भी कोई दूर हो, कोई साधन नहीं हो, लेकिन संकल्प की भाषा द्वारा किसी को भी मैसेज दे सकते हो। अन्त में यही संकल्प की भाषा काम में आयेगी। साइन्स के साधन जब फेल हो जाते हैं, तो यह साइलेन्स का साधन काम में आयेगा। लेकिन कोई भी कनेक्शन (connection) जोड़ने के लिए सदा लाइन क्लीयर चाहिए।

AV, Original 16.12.1985

संकल्प शक्तिशाली, दृष्टि, वृत्ति शक्तिशाली कहाँ तक बनी है? शक्तिशाली संकल्प, दृष्टि वा वृत्ति की निशानी है - वह शक्तिशाली होने के कारण किसी को भी परिवर्तन कर लेगा। संकल्प से श्रेष्ठ सृष्टि की रचना करेगा। वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन करेगा। दृष्टि से अशरीरी आत्म-स्वरूप का अनुभव करायेगा। **तो ऐसी शक्तिशाली भुजा हो? वा कमज़ोर हो? अगर कमज़ोरी है तो लेफ्ट(हैण्ड) हैं। अभी समझा राइट-हैण्ड (right-hand) किसको कहा जाता है?**

AV, Original 01.01.1986

संकल्प तो सब करते हैं, लेकिन संकल्प में बल भरना वह आवश्यकता है। तो जितना जो स्वयं शक्तिशाली है, उतना औरों में भी संकल्प में बल भर सकते हैं। जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमा कर कई कार्य सफल करते हैं ना। यह भी संकल्प की शक्ति इकट्ठी की हुई, उससे औरों को भी बल भर सकते हो। कार्य सफल कर सकते हो। वह साफ कहते हैं - हमारे में हिम्मत नहीं है। तो उन्हें हिम्मत देनी है। वाणी से भी हिम्मत आती है, लेकिन सदाकाल की नहीं। **वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति ज्यादा कार्य करती है। जितना जो सूक्ष्म चीज़ होती है, वह ज्यादा सफलता दिखाती है। वाणी से संकल्प सूक्ष्म हैं ना।** तो आज इसी की आवश्यकता है। यह संकल्प शक्ति बहुत सूक्ष्म है। **जैसे इन्जेक्शन के द्वारा ब्लड में शक्ति भर देते हैं ना। ऐसे संकल्प एक इन्जेक्शन का काम करता है - जो अन्दर वृत्ति में, संकल्प द्वारा संकल्प में शक्ति आ जाती है। अभी यह सेवा बहुत आवश्यक है।**

AV, Original 25.03.1995

सबसे श्रेष्ठ खज़ाना संकल्प का खज़ाना है, और आप सबका श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार है। संकल्प का खज़ाना बहुत शक्तिशाली है। संकल्प द्वारा सेकण्ड से भी कम समय में परमधाम तक पहुँच सकते हो। **संकल्प शक्ति एक ऑटोमेटिक (automatic) रॉकेट से भी तीव्र गति वाला रॉकेट (rocket) है। जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो।** चाहे बैठे हो, चाहे कोई कर्म कर रहे हो, लेकिन संकल्प के खज़ाने से वा शक्ति से, जिस आत्मा के पास पहुँचना चाहो, उसके समीप अपने को अनुभव कर सकते हो। जिस स्थान पर पहुँचना चाहो, वहाँ पहुँच सकते हो।

AV, Original 13.02.1999

बापदादा बच्चों को फिर से आगे के लिए इशारा दे रहे हैं कि अभी भी, पहला फाउण्डेशन संकल्प शक्ति - कभी-कभी वेस्ट (waste) ज्यादा - और निगेटिव (negative), वेस्ट से थोड़ा कम है। इस संकल्प शक्ति का उपयोग जितना स्व प्रति वा विश्व के प्रति करना है उतना और बढ़ाओ क्योंकि संकल्प के आधार पर, बोल और कर्म होता है, तो संकल्प शक्ति का परिवर्तन करो। **जो वेस्ट और निगेटिव जाता है, उसे परिवर्तन कर विश्व-कल्याण के प्रति कार्य में लगाओ। बापदादा संकल्प के खज़ाने को सर्व श्रेष्ठ मानते हैं, इसलिए इस संकल्प के खज़ाने प्रति एकानामी के अवतार बनो।**

AV, Original 15.12.1999

बापदादा फिर से अण्डरलाइन (underline) करा रहा है कि **अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट (fast) सेवा करायेगी। इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो।** बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी - इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे। …

अगर संकल्प शक्ति पावरफुल है, तो यह सब स्वत: ही कण्ट्रोल में आ जाते हैं। मेहनत से बच जायेंगे। तो संकल्प शक्ति का महत्त्व जानो।

AV, Original 15.03.2010

वर्तमान समय समीप आने के कारण **बापदादा अभी यही इशारा दे रहे हैं कि समय की समीपता अनुसार व्यर्थ संकल्प - यह भी अपवित्रता की निशानी है। सारे दिन में यह भी चेक करो कि कोई भी व्यर्थ संकल्प अभिमान का, वा अपमान का, अपने तरफ खींचता तो नहीं है? क्योंकि चलते-चलते अगर बाप की दी हुई विशेषताओं को अपनी विशेषता समझ अभिमान में आते हैं, तो यह भी व्यर्थ संकल्प हुआ;** और मेरेपन के अशुभ संकल्प - 'मैं कम नहीं हूँ, मैं भी सब जानता हूँ, यह मेरा संकल्प ही यथार्थ है, ऊंचा है' - यह मेरेपन का अभिमान का संकल्प, यह भी सूक्ष्म अपवित्रता का अंश है। **तो अपने को चेक करो किसी भी प्रकार का अपवित्रता के व्यर्थ संकल्प का कोई अंश तो नहीं रह गया है?**

AV, Original 16.03.2011

बापदादा ने पहले भी कहा है कि संगम समय का, समय और संकल्प, कभी भी व्यर्थ नहीं गंवाना है। अगर सदा प्रभु रंग में रंगे हुए हो, अर्थात् बाप को सदा का साथी बनाके रहते हो, तो संगमयुग के एक-एक संकल्प और समय, माना एक-एक मिनट को सफल कर सकते हो। **तो चेक करो अपने को कि एक-एक मिनट, एक-एक संकल्प सफल होता है? या व्यर्थ भी जाता है? क्योंकि एक मिनट नहीं - 21 जन्म का कनेक्शन हर मिनट, और हर संकल्प का है। इतनी वैल्यु (value) है।**

‘मन जीते जगतजीत’ – ‘साइलेन्स की शक्ति’

67] जितनी संकल्पों को समेटने की शक्ति होगी, उतना औरों के संकल्पों को समझने की भी शक्ति होगी; मन के मौन से नई इन्वेन्शन (invention) निकलेगी; ‘मनजीत’ अर्थात् मन के व्यर्थ संकल्प, विकल्प जीत!

AV, Original 25.12.1969
ऐसी भी स्थिति होगी, जो किसके मन में जो संकल्प उठेगा, वह आपके पास पहले ही पहुँच जायेगा। बोलने-सुनने की आवश्यकता नहीं। लेकिन यह तब होगा - जब औरों के संकल्पों को रीड (read) करने के लिये, अपने संकल्पों के ऊपर फुल ब्रेक (full brake) होगी। ब्रेक पावरफुल हो। अगर अपने संकल्पों को समेट न सकेंगे, तो दूसरों के संकल्पों को समझ नहीं सकेंगे। इसलिये सुनाया था कि संकल्पों का विस्तार बन्द करते चलो। **जितनी-जितनी संकल्पों को समेटने की शक्ति होगी, उतना-उतना औरों के संकल्पों को समझने की भी शक्ति होगी।**

AV, Original 22.01.1970
जैसे-जैसे रूहानी स्थिति में स्थित होते जायेंगे, वैसे-वैसे रूह, रूह की बात को ऐसे ही सहज और स्पष्ट जान लेंगे। जैसे इस दुनिया में मुख द्वारा वर्णन करने से, एक दो के भाव जानते हो। तो इसके लिए किस बात की धारणा की आवश्यकता है? विशेष इस बात की आवश्यकता है, जो सदैव बुद्धि की लाइन क्लियर हो। **कोई भी अपने बुद्धि में, व मन में डिस्टर्बेंस (disturbance) होगा, वा लाइन क्लियर न होगी, तो एक दो के संकल्प और भाव को जान नहीं सकेंगे। लाइन क्लियर न होने के कारण अपने संकल्पों की मिक्सचैरिटी हो सकती है।** इसलिए हरेक को देखना चाहिए कि हमारी बुद्धि की लाइन क्लियर है? बुद्धि में कोई भी किसी भी प्रकार का विघ्न तो नहीं सताता है? **अटूट, अटल, अथक - यह तीनों ही बातें जीवन में हैं? अगर इन तीनों में से एक बात में भी कमी है, तो समझना चाहिए कि बुद्धि की लाइन क्लियर नहीं है।**

AV, Original 07.06.1970
बिन्दु रूप में अगर ज्यादा नहीं टिक सकते, तो इसके पीछे समय न गंवाओ। बिन्दी रूप में तब टिक सकेंगे, जब पहले शुद्ध संकल्प का अभ्यास होगा। अशुद्ध संकल्पों को, शुद्ध संकल्पों से हटाओ। जैसे कोई एक्सीडेंट होने वाला होता है - ब्रेक नहीं लगती, तो मोड़ना होता है। बिन्दी रूप है ब्रेक। अगर वह नहीं लगता, तो व्यर्थ संकल्पों से बुद्धि को मोड़कर, शुद्ध संकल्पों में लगाओ। कभी-कभी ऐसा मौका होता है जब बचाव के लिए ब्रेक नहीं लगायी जाती है, मोड़ना होता है। कोशिश करो कि सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सिवाए, कोई व्यर्थ संकल्प न चले। जब यह सब्जेक्ट पास करेंगे, तो फिर बिन्दी रूप की स्थिति सहज रहेगी।

AV, Original 05.11.1970
जो बड़े आदमी होते हैं उन्हों के पास अपने हर समय की अपॉइन्टमेंट (appointment) की डायरी बनी हुई होती है। एक-एक घंटा उन्हों का फिक्स (fix) होता है। ऐसे आप भी बड़े ते बड़े हो ना। तो रोज़ अमृतवेले सारे दिन की अपनी अपॉइन्टमेंट की डायरी बनाओ। **अगर अपने मन को हर समय अपॉइन्टमेंट में बिज़ी रखेंगे, तो बीच में व्यर्थ संकल्प समय नहीं ले सकेंगे। अपॉइन्टमेंट से फ्री (free) रहते हो, तब व्यर्थ संकल्प समय ले लेते हैं। तो समय की बुकिंग (booking) करने का तरीका सीखो। अपने आप की अपॉइन्टमेंट खुद ही बनाओ कि आज सारे दिन में क्या-क्या करना है। फिर समय सफल हो जायेगा।**

AV, Original 13.04.1973
जैसे बहुत तेज बिजली होती है तो स्विच ऑन करने से, जहाँ भी बिजली लगाते हो उस स्थान के कीटाणु एक सेकेण्ड में भस्म हो जाते हैं। इसी प्रकार जब आप आत्माएं अपनी सम्पूर्ण पॉवरफुल स्टेज पर हों - और जैसे कोई आया और **एक सेकेण्ड में स्विच ऑन किया अर्थात् शुभ संकल्प किया, अथवा शुभ भावना रक्खी कि इस आत्मा का भी कल्याण हो - यह है संकल्प-रूपी स्विच - इनको ऑन करने, अर्थात् संकल्प को रचने से, फौरन ही उनकी भावना पूरी हो जायेगी, वे गद्गद हो जायेंगे - क्योंकि पीछे आने वाली आत्मायें थोड़े में ही ज्यादा राज़ी होंगी।** समझेंगी कि सर्व प्राप्तियाँ हुई। क्योंकि उनका है ही कना-दाना लेने का पार्ट।

AV, Original 12.10.1975

जैसे सोने को यन्त्र द्वारा चेक करते हैं कि सच्चा है या मिक्स है, रीयल है अथवा रोल्ड-गोल्ड है! ऐसे ही यह चेक करो कि संकल्प बापदादा समान हैं - या नहीं है? इस आधार से चेक करो, फिर वाणी और कर्म में लाओ। आधार को भूल जाते हो, तब शूद्र-पने के, और विष के संस्कार मिक्स हो जाते हैं। **जैसे भोजन में विष मिक्स हो जाय तो वह मूर्छित कर देता है, ऐसे ही संकल्प रूपी आहार व भोजन में पुराने शूद्र-पन का विष मिक्स हो जाता है, तो बाप की स्मृति और समर्थी स्वरूप से मूर्छित हो जाते हो।** तो अपने को विशेष आत्मायें समझते हुए, अपने आपका स्वयं ही चेकर बनो। समझा?

AV, Original 10.01.1979

जैसे पहले-पहले मौन व्रत रखा था तो सब फ्री हो गए थे, टाइम बच गया था - तो ऐसा कोई साधन निकालो जिससे सबका टाइम बच जाए - मन का मौन हो। व्यर्थ संकल्प आवे ही नहीं - यह भी मन का मौन है ना! जैसे मुख से आवाज़ न निकले, वैसे व्यर्थ संकल्प न आयें - यह भी मन का मौन है। तो व्यर्थ खत्म हो जावेगा। सब समय बच जावेगा, तब फिर सेवा आरम्भ होगी। **मन के मौन से नई इन्वेन्शन निकलेगी - जैसे शुरू के मौन से नई रंगत निकली, वैसे इस मन के मौन से नई रंगत होगी।**

AV, Original 21.02.1983

साइलेन्स की शक्ति का विशेष यंत्र है - 'शुभ संकल्प' - इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहो वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो। पहले स्व के प्रति प्रयोग करके देखो। तन की व्याधि के ऊपर प्रयोग करके देखो - तो शान्ति की शक्ति द्वारा कर्म बन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। बन्धन सदा कड़वा लगता है, सम्बन्ध मीठा लगता है। यह कर्मभोग - कर्म का कड़ा बन्धन - साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं – 'भोगना भोग रही हूँ', यह नहीं - लेकिन साक्षी दृष्टा हो, इस हिसाब-किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे। इसलिए तन के साथ-साथ मन की कमज़ोरी, डबल बीमारी होने के कारण, जो कड़े भोग के रूप में दिखाई देता है - वह अति न्यारा और बाप का प्यारा होने के कारण, डबल शक्ति अनुभव होने से, कर्मभोग के हिसाब की शक्ति के ऊपर, वह डबल शक्ति विजय प्राप्त कर लेगी। **बीमारी चाहे कितनी भी बड़ी हो लेकिन दुःख वा दर्द का अनुभव नहीं करेंगे। जिसको दूसरी भाषा में आप कहते हो कि 'सूली से कांटे के समान' अनुभव होगा। ऐसे टाइम में प्रयोग करके देखो।**

AV, Original 09.12.1985

आज बापदादा अपनी शक्ति सेना को देख रहे हैं कि यह रूहानी शक्ति सेना मनजीत जगतजीत हैं? **मनजीत अर्थात् मन के व्यर्थ संकल्प, विकल्प जीत है। ऐसे जीते हुए बच्चे विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं। इसलिए 'मन जीते जगतजीत' गाया हुआ है।** जितना इस समय संकल्प-शक्ति अर्थात् मन को, स्व के अधिकार में रखते हो, उतना ही विश्व के राज्य के अधिकारी बनते हो। अभी इस समय ईश्वरीय बालक हो, और अभी के बालक ही विश्व के मालिक बनेंगे।

AV, Original 15.12.1999

मनोबल की बड़ी महिमा है, यह रिद्धि-सिद्धि वाले भी मनोबल द्वारा अल्पकाल के चमत्कार दिखाते हैं। आप तो विधिपूर्वक - रिद्धि-सिद्धि नहीं - विधिपूर्वक कल्याण के चमत्कार दिखायेंगे, जो वरदान हो जायेंगे, आत्माओं के लिए यह संकल्प शक्ति का प्रयोग वरदान सिद्ध हो जायेगा। तो पहले यह चेक करो कि मन को कण्ट्रोल करने की कण्ट्रोलिंग पावर है? **सेकण्ड में जैसे साइन्स की शक्ति, स्विच के आधार से, स्विच आन करो, स्विच आफ करो - ऐसे सेकण्ड में मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो, उतना कण्ट्रोल कर सकते हैं?**

AV, Original 18.01.2011

जैसे कहावत है, 'मन जीते जगतजीत', मन को जो संकल्प दो वही करे। क्यों? जैसे और कर्मेन्द्रियां जब चाहो, जैसे चाहो, वैसे करती हैं ना! ऐसे ही मन को भी जो आर्डर करो, वही करे। अभ्यास करते हो - लेकिन कभी-कभी नहीं भी करते हैं। बापदादा अभी यही चाहते हैं कि मन को शक्तियों की लगाम से जैसे चलाने चाहो वैसे चलाओ। **जो गायन है, 'मन जीते जगतजीत', वह किसका**

गायन है? आप बच्चों का ही तो गायन है। हर कल्प किया है, तभी गायन है - क्योंकि जैसे और कर्मेन्द्रियों को 'मेरी' कहते हो, वैसे ही मन को भी 'मेरा' कहते हो। **'मेरा' कहना, अर्थात् मालिक बनो। मन में जो संकल्प करने चाहो, जितना समय वह संकल्प करने चाहो, वह बंधा हुआ है क्योंकि 'मेरा' है।**

AV, Original 02.02.2012
इस समय सभी स्वराज्य अधिकारी हैं, अर्थात् मन-बुद्धि, संस्कार, कर्मेन्द्रियों के राजा हैं। कर्मेन्द्रियों के वश नहीं हैं। मन के भी मालिक हैं। **तो ऐसे ही आप हर एक बच्चा अपने को मन के मालिक, संस्कारों के भी मालिक समझते हो? ऐसे तो नहीं कभी आप मन के मालिक होते, वा कभी मन आपका मालिक होता! क्योंकि कहते ही हो 'मेरा मन', 'मैं मन' नहीं कहते हो। तो 'मेरे' के आप मालिक हो। चेक करो कभी मन तो मालिक नहीं बन जाता?**

<u>'नज़र से निहाल' करने की विधि</u>

68] दृष्टि और वृत्ति की रूहानी सर्विस - 'नज़र से निहाल' - एक स्थान पर बैठे हुए, एक सेकंड में, अनेकों की कर सकते हैं; ऐसी रूहानी नज़र सदा नैचुरल (natural) रूप में हो जायेगी, तब विश्व की नज़र आप चमकते हुए धरती के सितारों पर जायेगी!

AV, Original 26.03.1970

अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है, 'नज़र से निहाल' - तो दृष्टि और वृत्ति की सर्विस, यह प्रैक्टिकल में लानी है। वाचा तो एक साधन है, लेकिन कोई को सम्पूर्ण स्नेह और सम्बन्ध में लाना, उसके लिए वृत्ति और दृष्टि की सर्विस हो। **यह सर्विस एक स्थान पर बैठे हुए, एक सेकंड में, अनेकों की कर सकते हैं। यह प्रत्यक्ष सबूत देखेंगे।**

AV, Original 20.05.1971

'दृष्टि से सृष्टि बदलती है' - यह भी अभी की कहावत है। कैसी भी तमोगुणी वा रजोगुणी आत्मायें आयें, लेकिन आपकी सतोगुणी दृष्टि से उनकी सृष्टि, उनकी स्थिति बदल जाये, उनकी वृत्ति बदल जाये। आगे चलकर यह अनुभव बहुत आत्मायें करेंगी। जैसे यादगार दिखाया हुआ है कि तीनों लोकों का साक्ष्त्कार कराया। यह भी अभी का गायन है। **आप लोगों के सामने आने से, दृष्टि द्वारा, उन्हों को तीन लोक तो क्या - अपनी पूरी जीवन कहानी का मालूम पड़ जाये।**

AV, Original 09.10.1971

यह जो गायन है, 'नज़र से निहाल' करने का, वह किसका गायन है? शक्तियों के चित्रों में सदैव नयनों की शोभा आप देखेंगे। और कोई इतनी आकर्षण वाली चीज़ नहीं होती है। नयनों द्वारा ही सब भाव प्रसिद्ध करते हैं। तो यह 'नज़र से निहाल' करना - यह सर्विस भी शक्तियों की गाई हुई है। **नयनों की आकर्षण हो, नयनों में रूहानियत हो, नयनों में रूहाब हो, नयनों में रहमदिली हो - ऐसा प्लैन (plan) बनाना है।**

AV, Original 03.05.1972

शक्तियों के आगे किसकी हिम्मत नहीं, जो अलबेलापन दिखा सके। अपने प्रति भी अब संहारी बनो। **ऐसी स्टेज बनाओ, जो आसुरी संस्कार संकल्प में भी ठहर न सकें। इसको कहते हैं - एक ही नजर से असुर संहारनी। संकल्पों को परिवर्तन करने में कितना समय लगता है? सेकेण्ड! और नजर से देखने में कितना समय लगता है? एक सेकेण्ड!** तो नजर से असुर संहार करने वाले अर्थात् एक सेकेण्ड में आसुरी संस्कारों को भस्म करने वाले, ऐसे बने हो? कि आसुरी संस्कारों के वशीभूत हो जाते हो?

AV, Original 24.12.1979

सारा विश्व, आप जहान के आँखों की एक सेकेण्ड की दृष्टि लेने के लिए इन्तज़ार में है, कि कब हमारे इष्ट देवों वा देवियों की हमारे ऊपर दृष्टि पड़ेगी - जो हम 'नज़र से निहाल' हो जायेंगे। **ऐसे 'नज़र से निहाल' करने वाले अगर स्वयं अपनी आँख मलते रहेंगे, तो 'नज़र से निहाल' कैसे करेंगे? 'नज़र से निहाल' होने वालों की लम्बी क्यू (queue) हैं। इसलिए सदा सम्पूर्णता की आँख खुली रहे।** बाप दादा जहान के नूरों का वन्डरफुल (wonderful) दृश्य देखते हैं। जहान के नूर भी अपने नयनों को एकाग्र नहीं रख सकते! **कोई निहाल करते-करते, हल्के से झुटके भी खा लेते हैं। अब झुटके वाले 'नज़र से निहाल' कैसे करेंगे? संकल्पों का घुटका ही झुटका है।** आपके भक्त आपको देख रहे हैं - और दर्शनीय मूर्त झुटके खा रहे हैं - तो भक्तों का क्या हाल होगा? **इसलिए आँखों का मलना, और झुटका खाना, बन्द करना पड़े, तब दर्शनीय मूर्त बन सकते हो।**

AV, Original 28.12.1982

ऐसा ही अभ्यास हो - सदा चमकते हुए सितारे को देखते रहें, इसी प्रैक्टिस को सदा बढ़ाते चलो। जहाँ देखो, जब भी किसको देखो, ऐसा नैचुरल (natural) अभ्यास हो, जो शरीर को देखते हुए न देखो। सदा नज़र चमकते हुए सितारे की तरफ जाये। जब ऐसी रूहानी नज़र सदा नैचुरल रूप में हो जायेगी, तब विश्व की नज़र आप चमकते हुए धरती के सितारों पर जायेगी।

AV, Original 23.01.1985

जैसे स्थूल नेत्र की शक्ति कम हो जाती है, तो स्पष्ट चीज़ भी जैसे पर्दे के अन्दर वा बादलों के बीच दिखाई देती है। ऐसे आपको भी देवता बनना तो है, बना तो था - लेकिन क्या था, कैसा था - इस 'था' के पर्दे के अन्दर तो नहीं दिखाई देता? स्पष्ट है? निश्चय का पर्दा, और स्मृति का मणका, दोनों शक्तिशाली हैं ना? वा मणका ठीक है, और पर्दा कमज़ोर है? एक भी कमज़ोर रहा तो स्पष्ट नहीं होगा! **तो चेक करो, वा चेक कराओ कि कहाँ नेत्र की शक्ति कम तो नहीं हुई है? अगर जन्म से श्रीमत रूपी परहेज करते आये हो, तो नेत्र सदा शक्तिशाली है। श्रीमत की परहेज में कमी है, तब शक्ति भी कम है।** फिर से श्रीमत की दुआ कहो, दवा कहो, परहेज कहो - वह करो, तो फिर शक्तिशाली हो जायेंगे। तो यह नेत्र है दिव्य दूरबीन।

AV, Original 06.03.1985 ('होली' का दिवस पर)

यह भाई-भाई की समान स्थिति का यादगार है। और बात - इस दिन भिन्न-भिन्न रंगों से खूब पिचकारियाँ भर, एक दो को रंगते हैं। यह भी इस समय की आपकी सेवा का यादगार है। **कोई भी आत्मा को आप दृष्टि की पिचकारी द्वारा - प्रेम स्वरूप बनाने का रंग, आनन्द स्वरूप बनाने का रंग, सुख का, शान्ति का, शक्तियों का - कितने रंग लगाते हो? ऐसा रंग लगाते हो जो सदा लगा रहे। मिटाना नहीं पड़ता।** मेहनत नहीं करनी पड़ती। और ही हर आत्मा यही चाहती कि सदा इन रंगों में रंगी रहूँ। तो सभी के पास रूहानी रंगों की रूहानी दृष्टि की पिचकारी है ना?

AV, Original 28.11.1997

आप सभी का फाउण्डेशन (foundation) वा सेकण्ड का परिवर्तन का मूल अनुभव यही है - कि ब्रह्मा बाप को देखा, और ब्राह्मण बन गये। सेवा का वरदान मिला, और सेवा में लग गये। बापदादा ने सभी के अनुभव भी सुने। अच्छे अनुभव सुनाये। तो जैसे आप लोगों का अनुभव है - ब्रह्मा बाप को देखा, और सोचना भी नहीं पड़ा। सहन करने का भी अनुभव नहीं हुआ कि सहन कर रहे हैं। बड़ी बात नहीं लगी। **ऐसे अभी हर श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा को देखें, और आत्मा में (ब्राह्मण में) ब्रह्मा बाप देखें। यह है सेवा का फास्ट (fast) साधन - क्या ब्रह्मा बाप ने आपको कोर्स कराया? कोर्स तो पीछे किया। लेकिन देखा और हो गये। तो जैसे ब्रह्मा बाप में (शिव) बाप समाया हुआ था, इसीलिए मेहनत नहीं लगी। ऐसे आप सभी भी बापदादा को अपने में समाते हुए, 'नज़र से निहाल' करो।**

ज्वालामुखी योग

69] मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ - चारों ओर अपना स्वरूप लाइट ही लाइट के बीच में, स्मृति में रहे, और दिखाई भी दे; जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्टेज पर, शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करें!

AV, Original 02.02.1969
अब तो ज्वाला रूप होना है। आपका ही ज्वाला रूप का यादगार है। **पता है ज्वाला देवी भी है - वह कौन है? यह सभी शक्तियों को ज्वाला रूप देवी बनना है। ऐसी ज्वाला प्रज्जवलित करनी है। जिस ज्वाला में यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जायेगा।**

AV, Original 03.02.1974
विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना - या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा, तब से स्थापना के साथ-साथ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्जवलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप, साथ-साथ है ना? **तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं, तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है - न कि शंकर को! शंकर समान, ज्वाला-रूप बन कर, प्रज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है।** जब कोई एक अर्थी को भी जलाते हैं, तो जलाने के बाद बीच-बीच में अग्नि को तेज़ किया जाता है, तो यह विनाश ज्वाला कितनी बड़ी अग्नि है। इनको भी सम्पन्न करने के लिए, निमित्त बनी हुई आत्माओं को - तेज करने के लिए, हिलाना पड़े - कैसे हिलावें? हाथ से व लाठी से? **संकल्प से इस विनाश ज्वाला को तेज़ करना पड़े - क्या ऐसा ज्वाला रूप बन, विनाश ज्वाला को तेज़ करने का संकल्प इमर्ज होता है** - या, यह अपना कार्य नहीं समझते हो?

AV, Original 15.09.1974
जैसे सूर्य देखते हो तो चारों ओर फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में, सूर्य का रूप दिखाई देता है। सूर्य की लाइट तो है, लेकिन उसके चारों ओर भी सूर्य की लाइट, परछाई के रूप में, फैली हुई दिखाई देती है। और लाइट में विशेष लाइट दिखाई देती है। **इसी प्रकार से, मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ - यह तो लक्ष्य है ही। लेकिन मैं आकार में भी कार्ब में हूँ। चारों ओर अपना स्वरूप लाइट ही लाइट के बीच में, स्मृति में रहे, और दिखाई भी दे - तो ऐसा अनुभव हो।**

AV, Original 15.09.1974 (continued)
आप लोगों का शुरू में था - शीतला देवी का पार्ट। अभी है - ज्वाला देवी का पार्ट। पहले स्नेह से, समीप सम्बन्ध में आये - और अब फिर, शक्ति स्वरूप बनना है। अभी सिर्फ गुण और स्नेह का प्रभाव है, या नॉलेज का प्रभाव है - लेकिन साक्षात्मूर्त अनुभव करें कि यह कोई साधारण शक्ति नहीं है। **जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्टेज पर, शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करें।** 'मैं विघ्न-विनाशक हूँ', इस स्मृति की सीट पर स्थित होकर कारोबार चलायेंगे, तो विघ्न सामने तक भी नहीं आवेंगे।

AV, Original 16.01.1975
जैसे यज्ञ रचने के निमित ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्जवलित हुई यह जो विनाश ज्वाला है, इसके लिए भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते, तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है। कारण? क्योंकि ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधारमूर्त्त आत्माएँ - अभी स्वयं ही सदा ज्वाला-रूप नहीं बनी हैं। ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प स्मृति में नहीं रहता है। **ज्वाला-रूप बनने का मुख्य और सहज पुरूषार्थ कौन-सा है? (मेरा तो एक शिव बाबा)।** यह स्मृति सदा रहे, इसके लिए भी कौन-सा पुरूषार्थ है? अब लास्ट विशेष पुरूषार्थ कौन-सा रह गया है? (उपराम अवस्था)। यह तो है रिजल्ट। **लेकिन उसका भी पुरूषार्थ क्या है? (न्यारापन) न्यारापन भी किससे आयेगा - कौन-सी धुन में रहने से? धुन यही रहे कि 'अब वापिस घर जाना है' - जाना है, अर्थात् उपराम।**

AV, Original 09.12.1975

संगठित रूप में, ऐसे विशेष पुरूषार्थ की लेन-देन और याद की यात्रा के प्रोग्राम होने चाहिए। विशेष पुरूषार्थ अथवा विशेष अनुभवों की आपस में लेन-देन हो। ऐसा संगठन पाण्डवों का होना चाहिए। ऐसे विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहे, तो फिर देखो विनाश ज्वाला को कैसे पंखा लगता है। **योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी। वह है विनाश-ज्वाला - यह है योग-ज्वाला, जो ज्वाला से ज्वाला प्रज्वलित होगी।**

AV, Original 07.01.1977

जैसे अज्ञानी आत्माओं को ज्ञान सुनने की फुर्सत नहीं - वैसे बहुत से ब्राह्मणों को भी इस पावरफुल (powerful) स्टेज पर स्थित होने की फुर्सत नहीं मिलती। इसलिए ज्वाला रूप बनने की आवश्यकता है।

AV, Original 21.12.1989

अंत में जब सब संपूर्ण हो जायेंगे, तो आपके श्रेष्ठ संकल्प में लगन की अग्नि से, यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। **योग ज्वाला हो। अंत में ऐसे धीरे-धीरे सेवा नहीं होगी। सोचा और हुआ - इसको कहते हैं, 'विहंग मार्ग की सेवा'।** अभी अपने में भर रहे हो, फिर कार्य में लगायेंगे। **जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों को भस्म कर दिया। असुर नहीं - लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म कर दिया। यह किस समय का यादगार है? अभी का है ना। तो ऐसे ज्वालामुखी बनो।** आप नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा? तो अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव - सब-कुछ भस्म करो। ...

सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अंदर जो तमोगुण है, उसे भस्म करने वाले बनो। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड (speed) से करेंगे तब पूरा होगा। अभी तो व्यक्तियों को ही संदेश नहीं पहुँचा है, प्रकृति की तो बात पीछे है। तो स्पीड तेज करो। गली-गली में सेंटर हों। क्योंकि सरकमस्टांस (circumstance) प्रमाण एक गली से दूसरी गली में जा नहीं सकेंगे, एक-दो को देख भी नहीं सकेंगे। तो घर-घर में, गली-गली में हो जायेगा ना!

AV, Original 30.03.1999

ज्वालामुखी बनो! समय प्रमाण रहे हुए जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब हैं, उसको ज्वाला स्वरूप से भस्म करो। लगन है, इसमें बापदादा भी पास (pass) करते हैं, लेकिन अभी लगन को अग्नि रूप में लाओ। **विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी - दूसरे तरफ, आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि, ज्वाला रूप में आवश्यक है। यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी, और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी।** आपकी लगन ज्वाला-रूप की हो, अर्थात् पावरफुल योग हो - तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी - और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित करायेगी। **एक तरफ भस्म करेगी, दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी।** बच्चे कहते हैं – 'मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं' - यह बहुत अच्छा है। **परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो।**

AV, Original 31.12.2005

अमृतवेला भी पावरफुल बनाओ। नियम अच्छा निभाते हो - लेकिन सुनाया ना, अभी योग सर्वशक्तियों से पावरफुल हो, योग अग्नि हो - ज्वालामुखी हो। तो यह तीन मास विशेष अमृतवेला भी नोट करना। **बातें बहुत अच्छी-अच्छी करते हैं, प्यार के स्वरूप में भी होते हैं, लेकिन ज्वालारूप कम होता है। अभी संस्कार का अंश मात्र भी नहीं रहे, तब कहेंगे 'ज्वाला रूप योगी तू आत्मा'।**

AV, Original 14.03.2006

बापदादा यही संकल्प देते हैं - तो आज देह-अभिमान और अपमान की जो 'मैं' आती है, दिलशिकस्त की 'मैं' आती है - इसको जला के ही जाना, साथ नहीं ले जाना। कुछ तो जलायेंगे ना। आग जलायेंगे क्या? ज्वालामुखी योग अग्नि जलाओ। जलाने आती है? **ज्वालामुखी योग आता है - कि साधारण योग आता है? ज्वालामुखी बनो। लाइट-माइट हाउस (Light-Might House)। तो यह पसन्द है? अटेन्शन प्लीज (attention please) - 'मैं' को जलाओ।**

AV, Original 30.11.2006

जैसे शास्त्रों में हनुमान को 'महावीर' भी कहा है, लेकिन पूंछ भी दिखाया है। यह पूंछ दिखाया है, मैंपन का। जब तक महावीर इस पूंछ को नहीं जलायेंगे, तो लंका अर्थात् पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। **तो अभी इस 'मैं-मैं' की पूंछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी। जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या - साधारण याद नहीं - ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है। इसीलिए ज्वाला देवी की भी यादगार है।**

AV, Original 18.02.2008

बच्चों ने कहा आना ही है - तो बाप ने कहा 'हाँ जी'। **ऐसे ही एक दो के बातों को, स्वभाव को, वृत्ति को समझते, 'हाँ जी', 'हाँ जी', करने से संगठन की शक्ति, साइलेन्स की ज्वाला प्रगट करेगी। ज्वालामुखी देखा है ना? तो यह संगठन की शक्ति शान्ति की ज्वाला प्रगट करेगी।**

AV, Original 13.04.2011

योग लगाते हो, अमृतवेले बैठते हो, लेकिन ज्वालामुखी योग उसकी कमी है। इसके कारण, एक तो जिन भक्तों को या आत्माओं को आप किरणें भेजते हो, वह इतनी स्पष्ट नहीं होती हैं। और दूसरा, ज्वालामुखी अग्नि स्वरूप योग की शक्ति न होने में, या कमी होने में, संस्कार जो बीच में विघ्न डालते हैं, वह संस्कार भी समाप्त नहीं होते हैं। पुरूषार्थ करते हो संस्कार परिवर्तन हो जाये, लेकिन मरते हैं, जलते नहीं हैं। जैसे रावण को सिर्फ मारते नहीं हैं, मारने के बाद जलाते हैं क्योंकि मारने के बाद शरीर तो रह जाता है ना! तो ऐसे ही आप अमृतवेले याद में बैठते हो, लेकिन योग अग्नि रूप में ज्वाला रूप में कम है। मिलन मनाते हो, रूहरिहान करते हो, अपने जीवन की बातें भी करते हो। **लगातार योग अग्नि रूप हो, संस्कार को मारते जरूर हो - लेकिन वह मरता है, लेकिन बीच-बीच में उठ जाता है। जल जायेगा, तो नाम रूप खत्म हो जायेगा।**

AV, Original 31.12.2011

अभी समय दिन-प्रतिदिन नाज़ुक आना ही है। तो ऐसे समय पर अभी ज्वालामुखी योग चाहिए। वह ज्वालामुखी योग की आवश्यकता अभी आवश्यक है। **ज्वालामुखी योग अर्थात् लाइट-माइट स्वरूप, शक्तिशाली - क्योंकि समय प्रमाण अभी दु:ख, अशान्ति, हलचल बढ़नी ही है, इसलिए अपने दु:खी, परेशान आत्माओं को विशेष ज्वालामुखी योग द्वारा शक्तियां देने की आवश्यकता पड़ेगी।** दु:ख अशान्ति के रिटर्न में, कुछ न कुछ शक्ति, शान्ति अपने मन्सा सेवा द्वारा देनी पड़ेगी। …
ज्वालामुखी योग द्वारा ही जो भी संस्कार रहे हुए हैं, वह भी भस्म होने हैं।

AV, Original 02.02.2012

समय की हालतों को देख पहले भी सुनाया, अब ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है, जिससे डबल काम होगा। **एक तो अपने पुराने संस्कार का संस्कार हो जायेगा - अभी संस्कारों को मारते हो लेकिन जलाते नहीं हो। मारने के बाद, फिर भी कभी-कभी वह जाग जाते हैं। जैसे रावण को सिर्फ मारा नहीं, जलाया। ऐसे आप भी अपने पुराने संस्कारों को - जो बीच-बीच में तीव्र पुरूषार्थ में कमी कर देते हैं, उसके लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है।** एक स्वयं के लिए - और दूसरा, ज्वालामुखी योग द्वारा औरों को भी लाइट-रूप होने के कारण, माइट-रूप होने के कारण, उन्हों को भी अपनी किरणों द्वारा सहयोग दे सकते हो।

ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता – Part 1

74] ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता सर्व शक्तियों सम्पन्न स्वरूप की है - सदा ताज, तख्त और तिलकधारी; फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट - जिसका पुरानी देह और पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं; देवता अर्थात् सर्व दिव्य गुणों से सजे-सजाये!

AV, Original 23.12.1994
आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के तीन रूप देख रहे हैं। **सबसे श्रेष्ठ स्वरूप है ब्राह्मण, और ब्राह्मण सो फरिश्ता, और फरिश्ता सो देवता। ब्राह्मण स्वरूप, फरिश्ता स्वरूप, और देवता स्वरूप।**

ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता सर्व शक्तियों सम्पन्न स्वरूप की है। क्योंकि ब्राह्मण अर्थात् मायाजीत। तो सर्व शक्ति सम्पन्न बनना ही मायाजीत बनना है। पहला स्वरूप ब्राह्मण - स्वयं को देखो कि ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता (सर्व शक्तियाँ) धारण हुई हैं? सर्व शक्तियाँ हैं वा कोई-कोई शक्ति है? अगर एक शक्ति भी कमज़ोर है, वा कम है, तो ब्राह्मण स्वरूप के बदले बार-बार क्षत्रिय अर्थात् युद्ध करने वाले बन जाते हैं। **क्षत्रिय का कर्तव्य है युद्ध करना, और ब्राह्मण का कर्तव्य है - सदा और सहज मायाजीत बनना। ब्राह्मण अर्थात् विजयी।** सदा सर्व शक्तियाँ अर्थात् सर्व शस्त्रों से सम्पन्न हैं। और क्षत्रिय अर्थात् कभी विजयी, और कभी हार खाने वाले। क्योंकि शक्तियाँ मिलते हुए भी धारण नहीं कर सकते, इसलिये समय और परिस्थिति प्रमाण सदा विजयी नहीं बन सकते।
ब्राह्मण स्वरूप अर्थात् सदा ताज, तख्त और तिलकधारी। विश्व कल्याण की जिम्मेदारी के ताजधारी, सदा स्वत: स्मृति के तिलकधारी, सदा बाप के दिलतख्तनशीन। क्षत्रिय एकरस, अचल, अडोल न होने के कारण कभी अचल, कभी हलचल, कभी अधिकारी और कभी बाप से शक्ति मांगने वाले रॉयल भिखारी।
ब्राह्मण अर्थात् सदा अलौकिक मौज के जीवन में रहने वाले। सदा रूहानी सीरत और सूरत वाले। क्षत्रिय अर्थात् कभी ऐसे, कभी कैसे। तो अपने से पूछो मैं कौन? कभी ब्राह्मण, कभी क्षत्रिय - या सदा ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं से सम्पन्न हैं? …
तो सारे दिन में, वा कितने बारी समय प्रति समय, ब्राह्मण के बजाय क्षत्रिय बन जाते हैं - ये चेक करो, और चेक करके चेंज करो। सिर्फ चेक नहीं करना। चेक किया जाता है चेंज करने के लिये। …
तो ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं को चेक करो। ब्राह्मण सो फरिश्ता बनेगा। क्षत्रिय सो फरिश्ता नहीं।

दूसरा स्वरूप है फरिश्ता। सभी को फरिश्ता बनना ही है ना? कि फरिश्ता बनना मुश्किल है? सहज है या मुश्किल? या कभी मुश्किल, कभी सहज? तो **फरिश्ता स्वरूप की विशेषता** सभी जानते भी हो कि फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट? तो डबल लाइट हैं? कि कभी बोझ उठाने को दिल करती और उठा लेते हो? वा उठाने नहीं चाहते हो, लेकिन माया सिर पर टोकरी रख देती है? माया अपनी आर्टीफिशियल टेम्परररी शक्ति ऐसी दिखाती है, जो मजबूरी से भी बोझ उठाना न चाहते भी उठा लेते हैं। …
तो फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। लाइट अर्थात् हल्कापन। हल्कापन का अर्थ है - सिर्फ परिस्थिति के समय हल्का नहीं, लेकिन सारे दिन में स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध, सम्पर्क में लाइट रहे? वैसे ठीक हैं - लेकिन स्वभाव-संस्कार में भी अगर हल्कापन नहीं है तो फरिश्ता कहेंगे? और हल्के की निशानी है - हल्की चीज़ सभी को प्यारी लगती है। कोई बोझ वाली चीज़ आपको देवे तो पसन्द करेंगे? और हल्की बढ़िया चीज़ हो तो पसन्द करेंगे ना? तो जो स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध, सम्पर्क में हल्का होगा, उसकी निशानी - वो सर्व के प्यारे और न्यारे होंगे। क्योंकि ब्राह्मण स्वभाव है, अलग स्वभाव नहीं। …
और फरिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी देह और पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं।

तीसरा है फरिश्ता सो देवता। अभी देवता बनना है या भविष्य में बनेंगे? देवता अर्थात् सर्व गुणों से सजे-सजाये। ये दिव्यगुण संगम के देवता जीवन के श्रृंगार हैं। इस समय दिव्य गुणों से सजे-सजाये होते हो, तब ही भविष्य में स्थूल श्रृंगार से सजे-सजाये रहते हो। **तो देवता अर्थात् दिव्य गुणों से सजे-सजाये। और दूसरा देवता अर्थात् देने वाला। लेवता नहीं, लेकिन देवता।** तो मास्टर दाता हो? वा कभी लेवता, कभी देवता? **चेक करो कि दिव्य गुणों का श्रृंगार सदा रहता है, वा कभी कोई श्रृंगार भूल जाता है, कभी कोई श्रृंगार भूल जाता है? सम्पूर्ण सर्व गुण सम्पन्न .. यही देवता जीवन की निशानी है।** ये गुण ही गहने हैं।

तो देखो कि ब्राह्मण स्वरूप की सर्व शक्तियाँ, फरिश्ते स्वरूप की डबल लाइट स्थिति, और देवता स्वरूप की दातापन की निशानी और दिव्य गुणों सम्पन्न बने हैं? तीनों स्वरूप अनुभव करते हो? जैसे बाप के तीन सम्बन्ध - बाप, शिक्षक, सद्गुरू सदा याद रहते, ऐसे ये तीन स्वरूप सदा याद रखो। समझा?

AV, Original 31.12.1994
हैं ही फरिश्ता। **ऊपर से नीचे आये, अपना कार्य किया और उड़ा। फरिश्ते यही करते हैं ना? उड़ती कला की निशानी - पंख दिखाये हैं। कोई आर्टीफिशियल पंख नहीं हैं। लेकिन ये फरिश्तों को जो पंख दिखाते हैं, उसका अर्थ है फरिश्ता अर्थात् उड़ती कला वाले।** तो फरिश्ते स्वरूप की बधाई स्वयं को भी दो, और दूसरों को भी। सदा फरिश्ते स्वरूप के स्मृति में भी रहो, और दूसरे को भी उसी स्वरूप से देखो। फलानी है, फलाना है – नहीं; फरिश्ता है। ये फरिश्ता संदेश देने के निमित्त है। समझा?

AV, Original 31.12.1995
बापदादा कहते हैं – चलो, बिन्दी खिसक जाती है, लेकिन फरिश्ता रूप तो लम्बा-चौड़ा शरीर है, वो तो बिन्दी नहीं है ना - फरिश्ता माना लाइट का आकार। तो फरिश्ते स्वरूप में स्थित होकर हर कर्म करो। ऐसा नहीं है कि फरिश्ता रूप में कर्म नहीं कर सकते हो। कर सकते हो कि साकार चाहिये? क्योंकि साकार शरीर से बहुत जन्मों का प्यार है। तो भूलना चाहते हैं, लेकिन भूल नहीं पाते। **तो बाप कहते हैं – अच्छा, अगर आपको शरीर को ही देखने की आदत पड़ गई है, तो कोई हर्जा नहीं - अभी लाइट का शरीर देखो। शरीर ही चाहिए - तो फरिश्ता भी शरीरधारी है। और आप सभी कहते भी हो कि शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा से बहुत प्यार है। तो प्यार का अर्थ है समान बनना।** तो जैसे ब्रह्मा बाबा फरिश्ता रूप है, ऐसे ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर हर कर्म करो।

AV, Original 31.12.1999
लक्ष्य रखो कि हमें फरिश्ता बनना ही है। अब पुरानी बातों को समाप्त करो। **अपने अनादि और आदि संस्कारों को इमर्ज (emerge) करो। स्मृति में रखो - चलते-फिरते मैं बाप समान फरिश्ता हूँ, मेरा पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से कोई रिश्ता नहीं। समझा? इस परिवर्तन के संकल्प को पानी देते रहना।** जैसे बीज को पानी भी चाहिए, धूप भी चाहिए - तब फल निकलता है। तो इस संकल्प को, बीज को स्मृति का पानी और धूप देते रहना।

AV, Original 15.11.2003
कहते हो ना कि ब्रह्मा बाबा बात करते-करते ऐसे लगता था, जैसे बात कर भी रहा है लेकिन यहाँ नहीं है, देख रहा है लेकिन दृष्टि अलौकिक है, यह स्थूल दृष्टि नहीं है। **देह-भान से न्यारा, दूसरे को भी देह का भान नहीं आये, न्यारा रूप दिखाई दे - इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्वरूप।** हर बात में, वृत्ति में, दृष्टि में, कर्म में न्यारापन अनुभव हो। यह बोल रहा है - लेकिन न्यारा-न्यारा, प्यारा-प्यारा लगता है। आत्मिक प्यारा। **ऐसे फरिश्तेपन की अनुभूति स्वयं भी करे, और औरों को भी कराये क्योंकि बिना फरिश्ता बने, देवता नहीं बन सकते हैं। फरिश्ता सो देवता है।**

AV, Original 21.10.2005
ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। यह तीन रूप बापदादा सभी बच्चों का देख रहे हैं। आप सभी को अपने तीन रूप सामने आ गये? आ गये? ब्राह्मण तो बन गये, अभी लक्ष्य है फरिश्ता बनने का। यही लक्ष्य है ना? है? फरिश्ता बनना ही है - **चेक करो फरिश्तेपन की विशेषतायें जीवन में कितनी दिखाई देती हैं?**
फरिश्ता अर्थात् जिसका पुराने संसार और पुराने संस्कार से कोई नाता नहीं।
फरिश्ता अर्थात् सिर्फ समस्या के समय डबल लाइट नहीं, लेकिन सदा मन्सा-वाचा, संबंध-सम्पर्क में डबल लाइट, हल्का। हल्की चीज़ अच्छी लगती है, वा बोझ वाली चीज़ अच्छी लगती है? क्या अच्छा लगता है? हल्का पसन्द है ना?
फरिश्ता अर्थात् जो सर्व का - थोड़ों का नहीं - सर्व का प्यारा और न्यारा हो। सिर्फ प्यारा नहीं, जितना प्यारा उतना ही न्यारा हो।

फरिश्ता की निशानी है, वह सर्व का प्रिय होगा। जो भी देखेंगे, जो भी मिलेंगे, जो भी संबंध में आयेंगे, सम्पर्क में आयेंगे वह अनुभव करेंगे कि यह मेरा है। जैसे बाप के लिए सभी अनुभव करते हैं, मेरा है। अनुभव करते हैं ना?
ऐसे **फरिश्ता अर्थात्** हर एक अनुभव करे यह मेरा है। अपनापन का अनुभव हो क्योंकि हल्का होगा ना - तो हल्कापन प्रिय बना देता है सबका। सारा ब्राह्मण परिवार अनुभव करे कि यह मेरा है। भारीपन नहीं हो क्योंकि फरिश्ते का अर्थ ही है डबल लाइट।
फरिश्ता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म, संबंध, सम्पर्क में बेहद हो। हद नहीं हो। सब अपने हैं - और मैं सबका हूँ। जहाँ ज्यादा अपनापन होता है ना वहाँ हल्कापन होता है। संस्कार में भी हल्कापन, तो चेक करो कितना परसेन्ट फरिश्ता स्टेज तक पहुंचे हैं? चेक करना आता है? चेकर भी बन गये हो, मेकर भी बन गये हो।

AV, Original 05.02.2009
संगमयुग का लक्ष्य क्या है? हम सब आत्माओं का बाप आ गया, वर्सा तो बाप द्वारा मिलेगा ना! वह प्रभाव फरिश्ता अवस्था से वायुमण्डल फैलेगा। इन्हों की दृष्टि से लाइट मिलती है, इन्हों की दृष्टि में रूहानियत की लाइट नज़र आती है, तो **अभी तीव्र पुरूषार्थ का यही लक्ष्य रखो, मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ - चलते फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ। अशरीरीपन के अनुभव को बढ़ाओ।** सेकण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार स्वभाव में डबल लाइट। कई बच्चे कहते हैं - हम तो हल्के रहते हैं, लेकिन हमको दूसरे जानते नहीं हैं। **लेकिन ऐसे डबल लाइट फरिश्ता, डबल लाइट उसकी लाइट छिप सकती है? छोटी सी स्थूल लाइट टार्च हो, या माचिस की तीली हो, लाइट कहाँ भी जलेगी, छिपेगी नहीं - और यह तो रूहानी लाइट है।**

फरिश्तेपन की निशानी - Part 2

75] फरिश्ते की मुख्य क्वालिफिकेशन हैं - लाइट और माइट; ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति है ही फरिश्ता जीवन; फरिश्ता अर्थात् जिसका देह के वा देह के दुनिया से, वा देह के पदार्थों के आकर्षण से कोई रिश्ता नहीं - मन के व्यर्थ संकल्पों से, पुराने संस्कारों से भी रिश्ता नहीं!

AV, Original 26.01.1971
ऐसा प्लैन बनाना चाहिए जो कोई भी महसूस करे - यह तो चलता-फिरता फरिश्ता है। जैसे साकार रूप में फरिश्तेपन का अनुभव किया ना। इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी होते भी, (ब्रह्मा बाप) आकारी और निराकारी स्थिति का अनुभव कराते रहे। **आप लोगों का भी अन्तिम स्टेज का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देना चाहिए। कोई कितना भी अशान्त वा बेचैन घबराया हुआ आवे - लेकिन आपकी एक दृष्टि, स्मृति और वृत्ति की शक्ति उनको बिल्कुल शान्त कर दे। भले कितना भी कोई व्यक्त भाव में हो - लेकिन आप लोगों के सामने आते ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव करे। आप लोगों की दृष्टि किरणों जैसा कार्य करे।**

AV, Original 29.06.1971
देव-पद की प्राप्ति तो भविष्य की है, लेकिन वर्तमान समय पुरूषार्थ की प्राप्ति का लक्ष्य कौनसा है? (फरिश्ता बनना) **फरिश्ते की मुख्य क्वालिफिकेशन क्या हैं?** फरिश्ता बनने के लिए दो क्वालिफिकेशन कौनसी हैं? **एक लाइट, दूसरी माइट चाहिए। दोनों ही जरूरी हैं। लाइट और माइट - दोनों ही फरिश्तेपन की लाइफ में स्पष्ट दिखाई देते हैं।** लाइट प्राप्त करने के लिए विशेष कौनसी शक्ति चाहिए? शक्तियां तो बहुत हैं ना। **लेकिन माइट रूप वा लाइट रूप बनने के लिए एक-एक अलग गुण बताओ। एक है मनन, और दूसरी है सहन शक्ति। जितनी सहन शक्ति होती है, उतनी सर्वशक्तिमान की सर्व शक्तियां स्वत: प्राप्त होती हैं।** नॉलेज को भी लाइट कहते हैं ना। तो पुरूषार्थ के मार्ग को सहज और स्पष्ट करने के लिए भी नॉलेज की लाइट चाहिए। इस लाइट के लिए फिर मनन शक्ति चाहिए। **तो एक मनन शक्ति, और दूसरी सहन शक्ति चाहिए। अगर यह दोनों ही शक्तियां हैं, तो फरिश्ते स्वरूप का चलते-फिरते किसको भी साक्षात्कार हो सकता है।**

AV, Original 15.09.1974
वह अन्तिम लक्ष्य पुरूषार्थ के लिये कौन-सा है? वह है - अव्यक्त फरिश्ता हो रहना। अव्यक्त-रूप क्या है?-फरिश्ता-पन। …
जैसे वतन में भी अव्यक्त-रूप देखते हो, तो अव्यक्त और व्यक्त में क्या अन्तर देखते हो? व्यक्त, पाँच तत्वों के कार्ब में हैं - और अव्यक्त, लाइट के कार्ब में हैं। लाइट का रूप तो है, लेकिन आसपास चारों ओर लाइट ही लाइट है, जैसे कि लाइट के कार्ब में यह आकार दिखाई देता है। **जैसे सूर्य देखते हो तो चारों ओर फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में, सूर्य का रूप दिखाई देता है। सूर्य की लाइट तो है, लेकिन उसके चारों ओर भी सूर्य की लाइट परछाई के रूप में, फैली हुई दिखाई देती है - और लाइट में विशेष लाइट दिखाई देती है। इसी प्रकार से, मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ - यह तो लक्ष्य है ही।** लेकिन मैं आकार में भी कार्ब में हूँ। चारों ओर अपना स्वरूप लाइट ही लाइट के बीच में स्मृति में रहे, और दिखाई भी दे, तो ऐसा अनुभव हो। **जैसे कि आइने में देखते हो तो स्पष्ट रूप दिखाई देता है, वैसे ही नॉलेज रूपी दर्पण में, अपना यह रूप स्पष्ट दिखाई दे - और अनुभव हो।** चलते-फिरते और बात करते, ऐसे महसूस हो कि 'मैं लाइट-रूप हूँ, मैं फरिश्ता चल रहा हूँ, और मैं फरिश्ता बात कर रहा हूँ।' तो ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा।

AV, Original 16.06.1977
सदा स्वयं को चलते-फिरते फरिश्ते अनुभव करते हो? **फरिश्ता अर्थात् जिसका देह के वा देह के दुनिया से, वा देह के पदार्थों के आकर्षण से कोई रिश्ता नहीं। सदा बाप की याद और सेवा - इसी में रहने वाले।** सदा बाप और सेवा - यही लगन रहती है। सिवाए बाप और सेवा के और क्या है - जहाँ बुद्धि जाए? ट्रस्टी सदा न्यारा रहता है। ट्रस्टी के लिए सिर्फ एक काम है - याद और सेवा। **अगर कर्मणा भी करते, तो भी सेवा के निमित्त। गृहस्थी स्वार्थ के निमित्त करता, और ट्रस्टी सेवा अर्थ।**

AV, Original 23.12.1983

करावनहार बाप है। निमित्त करने वाले आप हो। सर्वशक्तिवान बाप की शक्ति से, अर्थात् स्मृति के कनेक्शन से, अभी निमित्त मात्र कार्य करने वाले हो। **जैसे लाइट के कनेक्शन से बड़ी-बड़ी मशीनरी चलती है। तो आधार है लाइट। आप सभी हर कर्म करते कनेक्शन के आधार से, स्वयं भी डबल लाइट बन चलते रहते हो ना। जहां डबल लाइट की स्थिति है, वहाँ मेहनत और मुश्किल शब्द समाप्त हो जाता है।**

AV, Original 19.04.1984

सदा अपने को फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट अनुभव करते हो? इस संगमयुग का अन्तिम स्वरूप 'फरिश्ता' है ना। ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति है ही फरिश्ता जीवन! **फरिश्ता अर्थात् जिसका कोई देह और देह के सम्बन्ध में रिश्ता नहीं। देह और देह के सम्बन्ध, सबसे रिश्ता समाप्त हुआ - या थोड़ा-सा अटका हुआ है? अगर थोड़ी-सी सूक्ष्म लगाव की रस्सी होंगी तो उड़ नहीं सकेंगे। नीचे आ जायेंगे।** इसलिए फरिश्ता अर्थात् कोई भी पुराना रिश्ता नहीं। जब जीवन ही नया है, तो सब कुछ नया होगा। संकल्प नया, सम्बन्ध नया, आक्यूपेशन नया - सब नया होगा। अभी पुरानी जीवन स्वप्न में भी स्मृति में नहीं आ सकती। अगर थोड़ा भी देह भान में आते तो भी रिश्ता है तब आते हो। अगर रिश्ता नहीं है तो बुद्धि जा नहीं सकती। विश्व की इतनी आत्मायें हैं, उन्हों से रिश्ता नहीं, तो याद नहीं आती हैं ना। याद वह आते हैं जिससे रिश्ता है। तो देह का भान आना अर्थात् देह का रिश्ता है। अगर देह के साथ जरा-सा लगाव रहा, तो उड़ेंगे कैसे? बोझ वाली चीज़ को ऊपर कितना भी फेंको, नीचे आ जायेगी। **तो फरिश्ता माना हल्का, कोई बोझ नहीं। मरजीवा बनना अर्थात् बोझ से मुक्त होना। अगर थोड़ा भी कुछ रह गया तो जल्दी-जल्दी खत्म करो, नहीं तो जब समय की सीटी बजेगी तो सब उड़ने लगेंगे - और बोझ वाले नीचे रह जायेंगे। बोझ वाले - उड़ने वालों को देखने वाले हो जायेंगे।**

AV, Original 01.05.1984

प्रश्न:- **फरिश्ता बनने के लिए किस बन्धन से मुक्त होना पड़ेगा?**

उत्तर:- मन के बन्धनों से मुक्त बनो। मन के व्यर्थ संकल्प भी फरिश्ता नहीं बनने देंगे। इसलिए फरिश्ता अर्थात् जिसका मन के व्यर्थ संकल्पों से भी रिश्ता नहीं। सदा यह याद रहे कि हम फरिश्ते किसी रिश्ते में बंधने वाले नहीं।

AV, Original 08.04.1992

सिवाए फरिश्ता बने देवता नहीं बन सकते। ब्राह्मण से फरिश्ता बनना ही पड़े।

और **फरिश्ता का अर्थ** ही है जिसका पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार, पुरानी देह के प्रति कोई आकर्षण का रिश्ता नहीं। तीनों में पास चाहिए। तीनों से मुक्त। वैसे भी ड्रामा में पहले मुक्ति का वर्सा है फिर जीवनमुक्ति का। वाया मुक्ति धाम के आप जीवन-मुक्ति में नहीं जा सकते।

तो **फरिश्ता अर्थात्** मुक्त - और मुक्त् फरिश्ता सो जीवन-मुक्त देवता बनेगा। तो कितने परसेन्ट फरिश्ते बने हो? कि ब्राह्मण बनने में ही खुश हो?

फरिश्ता बनना अर्थात् अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाप से प्यार हो। जिसका फरिश्ते से प्यार नहीं तो ब्रह्मा बाप नहीं मानता है कि मेरे से प्यार है। प्यार का अर्थ ही है समान बनना। ब्रह्मा बाप फरिश्ता है ना! **फरिश्ता बन आप सबको फरिश्ता बनाने के लिए फरिश्तों की दुनिया में रूके हुए हैं।**

76] धर्मराजपुरी

AV, Original 02.02.1972

जैसे प्रीत बुद्धि चलते-फिरते बाप, बाप के चरित्र, और बाप के कर्त्तव्य की स्मृति में रहने से बाप के मिलने का प्रैक्टिकल अनुभव करते हैं, **वैसे विपरीत बुद्धि वाले विमुख होने से सूक्ष्म सजाओं का अनुभव करेंगे। इसलिए फिर भी बापदादा पहले से ही सुना रहे हैं कि उन सजाओं का अनुभव बहुत कड़ा है।** उनके सीरत से हरेक अनुभव कर सकेंगे कि इस समय यह आत्मा सजा भोग रही है। कितना भी अपने को छिपाने की कोशिश करेंगे लेकिन छिपा नहीं सकेंगे। वह एक सेकेण्ड की सजा अनेक जन्मों के दुःख का अनुभव कराने वाली है। **जैसे बाप के सम्मुख आने से एक सेकेण्ड का मिलन, आत्मा के अनेक जन्मों की प्यास बुझा देता है, ऐसे ही विमुख होने वाले को भी अनुभव होगा।** फिर उन सजाओं से छूटकर, अपनी उस स्टेज पर आने में बहुत मेहनत लगेगी। **इसलिए पहले से ही वार्निंग (warning) दे रहे हैं कि अब परीक्षा का समय चल रहा है। ऐसे फिर उल्हना नहीं देना कि हमें क्या मालूम कि इस कर्म की इतनी गुह्य गति है? इसलिए सूक्ष्म सजाओं से बचने के लिए अपने से ही अपने आप को सदा सावधान रखो। अब गफ़लत न करो।** अगर जरा भी गफलत की तो जैसे कहावत है - **एक का सौ गुणा लाभ भी मिलता है, और एक का सौ गुणा दण्ड भी मिलता है**, यह बोल अभी प्रैक्टिकल में अनुभव होने वाले हैं। इसलिए सदा बाप के सम्मुख, सदा प्रीत बुद्धि बनकर रहो।

AV, Original 26.10.1975

ज्ञान की ग्लानि कराने वालों को **बापदादा वार्निंग देते हैं कि आज से भी इस गलती को कड़ी भूल समझकर यदि मिटाया नहीं, तो बहुत कड़ी सज़ा के अधिकारी बनेंगे। बार-बार अवज्ञा के बोझ से ऊँची स्थिति तक पहुँच नहीं सकेंगे। प्राप्ति करने वालों की लाइन के बजाय पश्चाताप करने वालों की लाइन में खड़े होंगे। प्राप्ति करने वालों की जयजयकार होगी और अवज्ञा करने वालों के नैन और मुख 'हाय-हाय' का आवाज निकालेंगे - और सर्व प्राप्ति करने वाले ब्राह्मण ऐसी आत्माओं को कुलकलंकित की लाइन में देखेंगे।** अपने किये विकर्मों का कालापन चेहरे से स्पष्ट दिखाई देगा। इसलिये अब से यह विकराल भूल अर्थात् बड़ी-से-बड़ी भूल समझकर के, अभी ही अपनी पिछली भूलों का पश्चाताप दिल से करके, बाप से स्पष्ट कर अपना बोझ मिटाओ। अपने आप को कड़ी सजा दो ताकि आगे की सज़ाओं से भी छूट जायें।

AV, Original 03.05.1977

धर्मराजपुरी के पहले यहाँ ही कर्म और उसकी सज़ा का बहुत साक्षात्कार अभी भी होंगे - आगे चलकर भी। और सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन, जरा भी असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष दंड के साक्षात्कार अनेक वंडरफुल (wonderful - आश्चर्य) रूप के होंगे। ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पांव ठहर न सकेंगे, हर दाग स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेंगे। स्वयं अपने गलती के कारण मन उलझता हुआ टिका नहीं सकेगा। अपने आप को, अपने आप सजा के भागी बनावेंगे। इसलिए यह सब होना ही है। इसके नॉलेजफुल बन घबराओ मत। समझा? मास्टर सर्वशक्तिवान घबराते नहीं हैं।

AV, Original 11.04.1983

प्रश्न:- **धर्मराजपुरी क्या है - उसका अनुभव कब और कैसे होता है?**

उत्तर:- धर्मराजपुरी कोई अलग स्थान नहीं है। **सजाओं के अनुभव को ही धर्मराजपुरी कहते हैं। लास्ट में अपने पाप सामने आते हैं, और चैतन्य में जमदूत नहीं है, लेकिन अपने ही पाप डरावने रूप में सामने आते हैं। उस समय पश्चाताप और वैराग की घड़ी होती है।** उस समय छोटे-छोटे पाप भी भूत की तरह लगते हैं। जिसको ही कहते हैं - यमदूत आये, काले-काले आये, गोरे-गोरे आये ... ब्रह्मा बाप भी आफीशियल रूप में सामने दिखाई देते, और छोटा सा पाप भी बड़े विकराल रूप में दिखाई देता, **जैसे कई आइने होते हैं जिसमें छोटा आदमी भी मोटा या लम्बा दिखाई देता है, ऐसे अन्त समय में पश्चाताप की त्राहि-त्राहि होगी। अन्दर ही कष्ट होगा। जलन होगी। ऐसे लगेगा जैसे चमड़ी को कोई खींच रहा है। यह फीलिंग आयेगी।** ऐसे ही सब पापों के सजाओं की अनुभूति होगी, जो बहुत ही कड़ी है। इसको ही 'धर्मराज पुरी' कहा गया है।

AV, Original 02.11.1987
बापदादा के पास हर बच्चे के कर्म का, मन के संकल्पों का खाता हर समय का स्पष्ट रहता है। दिलों को जानने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन हर बच्चे के दिल की हर धड़कन का चित्र स्पष्ट ही है। इसलिए कहते हैं कि मैं हर एक के दिल को नहीं जानता क्योंकि जानने की आवश्यकता ही नहीं, स्पष्ट है ही। हर घड़ी के दिल की धड़कन वा मन के संकल्प का चार्ट बापदादा के सामने है। बता भी सकते हैं, ऐसे नहीं कि नहीं बता सकते हैं। **तिथि, स्थान, समय और क्या-क्या किया - सब बता सकते हैं। लेकिन जानते हुए भी अन्जान रहते हैं।**

AV, Original 31.03.2010
रोज़ रात को सोने के पहले बापदादा को गुडनाइट करने के पहले, अपने सारे दिन का पोतामेल देना। अच्छा किया या बुरा किया? **जो भी किया वह पोतामेल देके और अपने बुद्धि को खाली करके गुडनाइट करना। बाप से भी और बाप की याद में ही आप भी सो जाना। आपकी नींद बहुत अच्छी होगी। पहले खाली करना अपने को, बुद्धि में कोई बात नहीं रखना, बाप के रूप में सारा पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया, तो आपको धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।**

77] **अति सो अन्त**

AV, Original 03.05.1977

वर्तमान, 'अन्तिम समय' समीप के कारण - एक तरफ, अनेक प्रकार के रहे हुए हिसाब-किताब, स्वभाव-संस्कार, वा दूसरे के सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा, बाहर निकलेंगे अर्थात् अन्तिम विदाई लेंगे। तो बाहर निकलते हुए, अनेक प्रकार के मानसिक परीक्षाओं रूपी बीमारियों को देख घबराओ नहीं। **लेकिन यह अति - अन्त की निशानी समझो।**

AV, Original 25.06.1977

जैसे समाप्ति के समय, सब बीमारी निकलती - वैसे समाप्ति का समय होने के कारण, हरेक की वैरायटी कमज़ोरियाँ प्रत्यक्ष होंगी। अभी तो एक लहर देखी है - और भी कई लहरें देखेंगे। **अति में जाना जरूर है - अति हो, तब तो अन्त हो। जो भी अन्दर कमज़ोरियाँ हैं - अन्दर छिप नहीं सकती, किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष रूप में आएगी - लेकिन आपकी भावना रहे कि इन सबका भी कल्याण हो जाए।** आप वरदानी हो - तो आपका हर संकल्प, हर आत्मा के प्रति कल्याण का हो। **लहरें तो और भी आएंगी - एक खत्म होगी, दूसरी आएगी - यह सब मनोरंजन के बाइप्लॉट्स (bye plots) हैं। और पद भी स्पष्ट हो रहे हैं। यह होते रहेंगे। आश्चर्यवत् सीन (scene) होनी चाहिए। एक तरफ - नए-नए रेस (race) में आगे दिखाई देंगे। दूसरे तरफ - थकने वाले, रूकने वाले भी प्रसिद्ध होंगे। तीसरे तरफ - जो बहुत समय से कमज़ोरियाँ रही हुई हैं, वह भी प्रत्यक्ष होंगी।** नथिंग न्यू (nothing new) हैं - लेकिन रहम की दृष्टि और भावना, दोनों साथ हों।

AV, Original 26.11.1979

ऐसे नहीं कि सेवा ज्यादा है, इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो, 'मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है' - तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ'- ऐसी प्रैक्टिस करो। **अति के समय - अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो - तब कहेंगे तेरे को मेरे में नहीं लाया है, अमानत में ख्यानात नहीं की है।** समझा - अभी का अभ्यास क्या करना है? **जैसे बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक का कन्ट्रोल करते हो - वैसे अति के समय, अन्त की स्टेज का अनुभव करो, तब अन्त के समय 'पास विद् आनर' बन सकेंगे।**

AV, Original 26.11.1984

फाइनल में हाहाकार के बीच जय-जयकार होनी है। अति के बाद अन्त, और नये युग का आरम्भ हो जायेगा। ऐसे समय पर न चाहते भी सबके मन से यह प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेंगे। नजारा नाजुक होगा - लेकिन बजेंगे प्रत्यक्षता के नगाड़े।

80] शान्ति स्वरूप के चुम्बक

AV, Original 21.01.1971

दिन-प्रतिदिन देखेंगे - जैसे धन के भिखारी भिक्षा लेने के लिए आते हैं, वैसे शान्ति के अनुभव के भिखारी आत्मायें भिक्षा लेने के लिए तड़पेंगी। अब सिर्फ एक दु:ख की लहर आयेगी - तो जैसे लहरों में लहराती हुई आत्मायें, वा लहरों में डूबती हुई आत्मा, एक तिनके का भी सहारा ढूँढ़ती है, ऐसे आप लोगों के सामने अनेक भिखारी आत्मायें यह भीख मांगने के लिए आयेंगी। तो ऐसी तड़पती हुई, या भिखारी प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख वा सर्व शक्तियों से भरपूर किया हुआ अनुभव करते हो? सर्व शक्तियों का खज़ाना, अतीन्द्रिय सुख का खज़ाना इतना इकट्ठा किया है - जो अपनी स्थिति तो कायम रहे, लेकिन अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सको? सर्व की झोली भरने वाले दाता के बच्चे हो ना! अब यह दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा।

AV, Original 07.03.1981

वर्त्तमान समय विश्व की मैजारिटी आत्माओं को सबसे ज्यादा आवश्यकता है - सच्ची शान्ति की। अशान्ति के अनेक कारण दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं, और बढ़ते जायेंगे। अगर स्वयं अशान्त न भी होंगे, तो औरों के अशान्ति का वायुमण्डल अशान्ति के वायब्रेशन्स उन्हों को भी अपने तरफ खीचेंगे। चलने में, रहने में, खाने में, कार्य करने में, सबसे अशान्ति का वातावरण शान्त अवस्था में बैठने नहीं देगा - अर्थात् औरों की अशान्ति का प्रभाव भी आत्मा पर पड़ेगा। अशान्ति के तनाव का अनुभव बढ़ेगा। **ऐसे समय पर आप शान्ति के सागर के बच्चों की सेवा क्या है? जैसे कहाँ आग लगती है, तो शीतल पानी से आग को बुझाकर, गर्म वायुमण्डल को शीतल बना देते हैं। वैसे आप सबका आजकल विशेष स्वरूप 'मास्टर शान्ति के सागर का' इमर्ज होना चाहिए। मंसा संकल्पों द्वारा, शान्त स्वरूप की स्टेज द्वारा चारों ओर शान्ति कि किरणों को फैलाओ।** ऐसा पावरफुल स्वरूप बनाओ, जो अशान्त आत्माएं अनुभव करें कि सारे विश्व के कोने में यही थोड़ी सी आत्मायें शान्ति का दान देने वाली मास्टर शान्ति के सागर हैं। **जैसे चारों ओर अंधकार हो, और एक कोने में रोशनी जग रही हो, तो सबका अटेन्शन स्वत: ही रोशनी की ओर जाता है। ऐसे सबको आकर्षण हो कि चारों ओर की अशान्ति के बीच यहाँ से शान्ति प्राप्त हो सकती है। शान्ति स्वरूप के चुम्बक बनो।** जो दूर से ही अशान्त आत्माओं को खींच सको। नयनों द्वारा शान्ति का वरदान दो। मुख द्वारा शान्ति स्वरूप की स्मृति दिलाओ। संकल्प द्वारा अशान्ति के संकल्पों को मर्ज कर, शान्ति के वायब्रेशन को फैलाओ।

AV, Original 21.02.1983

विश्व की आत्माओं वा सम्बन्ध, सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को महसूस हो कि शान्ति की किरणें इन विशेष आत्मा वा विशेष आत्माओं द्वारा मिल रही है। हरेक से चलता फिरता 'शान्ति यज्ञ कुण्ड' का अनुभव हो। जैसे आपकी रचना में छोटा-सा फायरफ्लाई (firefly) दूर से ही अपनी रोशनी का अनुभव कराता है। दूर से ही देखते, सब कहेंगे यह फायरफ्लाई आ रहा है, जा रहा है। ऐसे इस बुद्धि द्वारा अनुभव करें कि यह शान्ति का अवतार शान्ति देने आ गया है। **चारों ओर की अशान्त आत्मायें, शान्ति की किरणों के आधार पर शान्ति कुण्ड की तरफ खिंची हुई आवें। जैसे प्यासा पानी की तरफ स्वत: ही खिंचता हुआ जाता है। ऐसे आप शान्ति के अवतार आत्माओं की तरफ खिंचे हुए आवें। इसी शान्ति की शक्ति का अभी और अधिक प्रयोग करो।** शान्ति की शक्ति वायरलेस (wireless) से भी तेज आपका संकल्प किसी भी आत्मा प्रति पहुँचा सकती है।

81] होली हंस बुद्धि, वृत्ति, दृष्टि और मुख

AV, Original 01.03.1986

‘होली हंस बुद्धि’

‘हंस बुद्धि’ अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ और शुभ सोचने वाले। ‘होली हंस’ अर्थात् कंकर और रत्न को अच्छी तरह परखने वाले, और फिर धारण करने वाले। पहले हर आत्मा के भाव को परखने वाले, और फिर धारण करने वाले। कभी भी बुद्धि में, किसी भी आत्मा के प्रति, अशुभ वा साधारण भाव धारण करने वाले न हो। सदा शुभ भाव और शुभ भावना धारण करना। भाव जानने से, कभी भी किसी के साधारण स्वभाव, या व्यर्थ स्वभाव का प्रभाव नहीं पड़ेगा।

‘होली हंस वृत्ति’

ऐसे ही ‘हंस वृत्ति’ अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ कल्याण की वृत्ति। हर आत्मा के अकल्याण की बातें सुनते, देखते भी, अकल्याण को कल्याण की वृत्ति से बदल लेना - इसको कहते हैं ‘होली हंस वृत्ति’। अपने कल्याण की वृत्ति से औरों को भी बदल सकते हो। उनके अकल्याण की वृत्ति को अपने कल्याण की वृत्ति से बदल लेना - यही ‘होली हंस का कर्तव्य’ है।

‘होली हंस दृष्टि’

इसी प्रमाण दृष्टि में सदा हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ शुद्ध स्नेह की दृष्टि हो। कैसा भी हो लेकिन अपनी तरफ से सबके प्रति रूहानी आत्मिक स्नेह की दृष्टि धारण करना। इसको कहते हैं ‘होली हंस दृष्टि’।

‘होली हंस मुख’

इसी प्रकार बोल में भी पहले सुनाया है - बुरा बोल अलग चीज है, वह तो ब्राह्मणों का बदल गया है, लेकिन व्यर्थ बोल को भी ‘होली हंस मुख’ नहीं कहेंगे। मुख भी ‘होली हंस मुख’ हो! जिसके मुख से कभी व्यर्थ न निकले, इसको कहेंगे ‘हंस मुख स्थिति’।

‘होली हंस की स्थिति’

तो होली हंस बुद्धि, वृत्ति, दृष्टि और मुख - जब यह पवित्र अर्थात् श्रेष्ठ बन जाते हैं, तो स्वत: ही ‘होली हंस की स्थिति’ का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है।

पहले-पहले मुख्य है ‘होली हंस बुद्धि’।

उसमें स्वत: ही परखने की शक्ति आ ही जाती है, क्योंकि व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय तब जाता, जब उसकी परख नहीं रहती कि यह राइट है या रांग है। **अपने व्यर्थ को, रांग को, राइट समझ लेते हैं, तब ही ज्यादा व्यर्थ समय जाता है।** है व्यर्थ, लेकिन समझते हैं कि ‘मैं समर्थ, राइट सोच रही हूँ। जो मैंने कहा वही राइट है’। इसी में परखने की शक्ति न होने के कारण मन की शक्ति, समय की शक्ति, वाणी की शक्ति सब चली जाती है। और दूसरे से मेहनत लेने का बोझ भी चढ़ता है। कारण? क्योंकि ‘होली हंस बुद्धि’ नहीं बने हैं। तो बापदादा सभी ‘होली हंसों’ को फिर से यही इशारा दे रहे हैं कि उल्टे को उल्टा नहीं करो। यह है ही उल्टा, यह नहीं सोचो - लेकिन उल्टे को सुल्टा कैसे करूं यह सोचो। इसको कहा जाता है, कल्याण की भावना। श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से, अपने व्यर्थ भाव-स्वभाव और दूसरे के भाव-स्वभाव को परिवर्तन करने की विजय प्राप्त करेंगे! समझा? पहले स्व पर विजयी, फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। यह तीनों विजय आपको विजय माला का मणका बनायेंगी। प्रकृति में वायुमण्डल, वायब्रेशन, या स्थूल प्रकृति की समस्यायें सब आ जाती हैं। तो तीनों पर विजय हो? इसी आधार से विजय माला का नम्बर अपना देख सकते हो, इसलिए नाम ही वैजयन्ती माला रखा है। तो सभी विजयी हो?

82] अंगद समान अचल स्थिति

AV, Original 21.12.1978

सभी अंगद के समान अचल हो? माया के किसी भी प्रकार की हलचल में भी अचल। माया का कोई भी वार स्थिति को हिला न सके। **हिलने का कारण क्या होता है? निश्चय का फाउन्डेशन (foundation) मज़बूत न होने के कारण ही हिलते हैं। अगर निश्चय हो कि कल्याणकारी समय है, हर बात में कल्याण है, तो कितने भी तुफान क्यों न आयें, लेकिन हिला नहीं सकते।** अब निश्चय के फाउन्डेशन को तीव्र पुरूषार्थ का पानी देकर मज़बूत करो, तो सदा अंगद के समान रहेंगे। माया के वार को वार नहीं समझेंगे। **अभी हिलने का समय गया - यदि अभी भी हिलते रहे, तो लास्ट पेपर में भी हिल जायेंगे - तो फिर जन्म-जन्म के लिए फेल (fail) हो जायेंगे।** इसलिए स्मृति के संस्करण मज़बूत करो। सदा याद रखो कि यह अंगद का यादगार हमारा ही यादगार है, तो शक्ति आयेगी।

AV, Original 23.01.1980

सभी अंगद के समान अचल अडोल रहने वाले हो ना? रावण राज्य की कोई भी परिस्थिति, व व्यक्ति, जरा भी संकल्प रूप में भी हिला न सके, नाखुन को भी न हिला सके। संकल्प में हिलना अर्थात् नाखुन हिलना। तो संकल्प रूप में भी न व्यक्ति, न परिस्थिति हिला सके - कभी कोई सम्बन्धी, या दैवी परिवार का भी ऐसा निमित्त बन जाता है, जो विघ्न रूप बन जाता है। **लेकिन अंगद के समान सदा अचल रहने वाला व्यक्ति तो विघ्न को और परिस्थितियों को पार कर लेगा क्योंकि नॉलेजफुल है। वह जानता है कि यह विघ्न क्यों आया। ये विघ्न गिराने के लिए नहीं हैं, लेकिन और ही मजबूत बनाने के लिए हैं।** वह कन्फ्यूज (confuse) नहीं होगा। जैसे इम्तिहान के हाल (hall) में जब पेपर आता है, तो कमज़ोर स्टूडेन्ट कन्फ्यूज हो जाते हैं - **अच्छे स्टूडेन्ट देखकर खुश होते हैं क्योंकि बुद्धि में रहता है कि यह पेपर देकर, वह क्लास आगे बढ़ेगा। उन्हें मुश्किल नहीं लगता।** कमज़ोर, क्वेश्चन ही गिनती करते रहेंगे। 'ऐसा क्वेश्चन क्यों आया, ये किसने निकाला, क्यों निकाला' - तो यहाँ भी कोई निमित्त पेपर बनकर आता है, तो यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए कि 'यह क्यों करता है, ऐसा नहीं करना चाहिए'। **जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, अच्छी बात उठा लो। जैसे हँस, मोती चुगता है ना, कंकड़ को अलग कर देता है। दूध और पानी को अलग कर देता है। दूध ले लेता है, पानी छोड़ देता है। ऐसे कोई भी बात सामने आये, तो पानी समझकर छोड़ दो। 'किसने मिक्स किया, क्यों किया' - यह नहीं, इसमें भी टाइम वेस्ट हो जाता है।** अगर क्यों, क्या करते इम्तिहान की अन्तिम घड़ी हो गई, तो फेल हो जायेंगे। **वेस्ट (waste) किया माना फेल हुआ। क्यों-क्या में श्वास निकल जाए, तो फेल।** कोई भी बात फील (feel) करना माना फेल (fail) होना। **माया शेर के रूप में भी आये, तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो - अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती।** सदा योगाग्नि जगती रहे, तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती। सब विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

83] अन्त:वाहक स्थिति

AV, Original 11.10.1975

बाप के साथ-साथ शक्तियों को भी पार्ट बजाना है - **जैसे शक्तियों का गायन है कि 'अन्त:वाहक शरीर द्वारा चक्कर लगाती थीं', वैसे बाप भी अव्यक्त रूप में चक्कर लगाते हैं। अन्त:वाहक अर्थात् अव्यक्त फरिश्ते रूप में सैर करना।** यह भी प्रैक्टिस चाहिए - और यह अनुभव होंगे। जैसे साइन्स के यन्त्र दूरबीन द्वारा, दूर की सीन (scene) को नजदीक में देखते हैं - **ऐसे ही याद के नेत्र द्वारा, अपने फरिश्तेपन की स्टेज द्वारा, दूर का दृश्य भी ऐसे ही अनुभव करेंगे, जैसे साकार नेत्रों द्वारा कोई दृश्य देख आये। बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देंगे - अर्थात् अनुभव होगा।**

AV, Original 13.03.1981

जैसे आजकल फ़्लाइंग सॉसर (flying saucer) देखते हैं - वैसे आप सबका फरिश्ता स्वरूप चारों ओर देखने में आयेगा - और आवाज निकलेगा कि यह कौन हैं, जो चक्र लगाते हैं? इस पर भी रिसर्च (research) करेंगे। लेकिन आप सबका साक्षात्कार ऊपर से नीचे आते ही हो जायेगा - और समझेंगे यह वही ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं, जो फरिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं। अभी यह धूम मचाओ। **अन्त: वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। ऐसा समय आयेगा जो प्लेन (plane) भी नहीं मिल सकेगा। ऐसा समय नाजुक होगा - तो आप लोग पहले पहुँच जायेंगे।** अन्त: वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास जरूरी है। **ऐसा अभ्यास करो, जैस प्रैक्टिकल (practical) में सब देखकर, मिलकर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें – 'हाँ, यह हमारे पास वही फरिश्ता आया था'। फिर ढूंढने निकलेंगे फरिश्तों को।** अगर इतने सब फरिश्ते चक्र लगायें तो क्या हो जाये? ऑटोमेटिकली (automatically) सबका अटेन्शन जायेगा। तो अभी साकारी के साथ-साथ आकारी सेवा भी जरूर चाहिए।

84] देवता के 5 डिग्री

AV, Original 15.10.1975

महान् स्टेज है - **सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह (16) कला सम्पन्न, मर्यादा पुरूषोत्तम और सम्पूर्ण अहिंसक - इस महानता को कहाँ तक जीवन में लाया है?** ...

सर्वगुण सम्पन्न की अवस्था में यदि एक भी गुण की कमी है, तो उन्हें फुल महिमा के योग्य नहीं कहेंगे। तो अपने आप को चेक करो कि सर्व गुणों में से कितने गुणों में, और कितने परसेन्टेज में स्वयं में गुणों की कमी है।

सोलह (16) कला अर्थात् सर्व विशेषताओं में सम्पन्न, अर्थात् जैसा समय वैसा स्वरूप बना सकें, और जैसा संकल्प वैसा स्वरूप में ला सकें। बाप द्वारा प्राप्त हुए पुरूषार्थ की विधि द्वारा, सर्व सिद्धियाँ समय पर, स्वयं के प्रति व सर्व-आत्माओं की सेवा के प्रति कार्य में लगा सकें। सर्व-शक्तियों को अनुभव में लाते हुए, सर्व आत्माओं के प्रति उन्हों की आवश्यकता प्रमाण, वरदानी रूप में दे सकें। सर्व बातों में बैलेन्स (balance) रख सकें अर्थात् अभी-अभी लवफुल, और अभी-अभी लॉफुल बन सकें। अभी-अभी महाकाली रूप, और अभी-अभी शीतला रूप बन सकें। ऐसी सर्व विशेषताएं अर्थात् सोलह (16) कला सम्पन्न। इसके लिये सर्व-कर्मेन्द्रियों और सर्व-आत्मिक शक्तियों - मन, बुद्धि और संस्कार - इन सर्व पर अधिकार चाहिए। ऐसा अधिकारी ही सोलह कला सम्पन्न बन सकता है। कोई भी कमज़ोरी वाला कला नहीं दिखा सकता, अर्थात् विशेषतायें नहीं दिखा सकता - और न ही अनुभव करा सकता है। इसी रीति से अपने को चेक करो कि सर्व विशेषतायें धारण की हैं - अर्थात् सोलह कला सम्पन्न बने हैं?

सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् सर्व विकार सर्व वंश-सहित, अंश-मात्र भी अर्थात् संकल्प व स्वप्न-मात्र में भी न हो। उसको कहते हैं सम्पूर्ण निर्विकारी।

मर्यादा पुरूषोत्तम अर्थात् हर संकल्प, हर सेकेण्ड और हर कदम - श्रीमत् अनुसार अर्थात् मर्यादा के प्रमाण हो। संकल्प भी वा एक कदम भी ईश्वरीय मर्यादा की लकीर के बाहर न हो। अमृतवेले से रात के सोने तक हर कदम मर्यादा अनुकूल - स्मृति, वृत्ति, और दृष्टि भी सदा ही मर्यादा प्रमाण हो। ऐसे मर्यादा पुरूषोत्तम कहाँ तक बने हो?

डबल अहिंसक अर्थात् अपवित्रता, अर्थात् 'काम महाशत्रु' स्वप्न में भी वार न करें। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वत: अर्थात् स्मृति स्वरूप में हो। ऐसे डबल अहिंसक, आत्मघात का महापाप भी नहीं करते। आत्मघात अर्थात् अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्टेज से नीचे गिर कर अपना घात नहीं करते। ऊंचाई से नीचे गिरना ही घात है। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति-स्वरूप स्थिति से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना, यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिये कहा जाता है – 'आत्मघाती महापापी'। साथ-साथ अहिंसक आत्मा कभी खून नहीं करती। खून करना अर्थात् हिंसा करना। तो आप में से कोई खून करते हैं? जो बाप द्वारा दिव्य-बुद्धि व दिव्य-विवेक व ईश्वरीय-विवेक मिला है, वह माया वश, परमत वश, कुसंग वश, या परिस्थिति के वश अगर ईश्वरीय विवेक को दबाते हो, तो समझो कि ईश्वरीय विवेक का खून करते हो, या दिव्य-बुद्धि का खून करते हो। बाद में फिर चिल्लाते हो कि चाहता तो नहीं हूँ लेकिन कर लिया, न चाहते हुए भी हो गया। गोया यह है ईश्वरीय विवेक का खून करना। झूठ बोलना, चोरी करना, ठगी करना व धोखा देना - इसको भी हिंसा व महापाप कहा जाता है।

85] शीतलता की शक्ति

AV, Original 21.02.1985

जैसे चारों ओर बहुत तेज धूप हो, तो छाया का स्थान ढूँढेंगे ना? ऐसे आत्माओं की नजर वा आकर्षण, ऐसी आत्माओं तरफ जाती है। **अभी विश्व में और भी विकारों की आग तेज होनी है - जैसे आग लगने पर मनुष्य चिल्लाता है ना? शीतलता का सहारा ढूँढता है। ऐसे यह मनुष्य आत्मायें, आप शीतल आत्माओं के पास तड़पती हुई आयेंगी।** 'जरा-सा शीतलता के छींटे भी लगाओ' - ऐसे चिल्लायेंगी। **एक तरफ** विनाश की आग, **दूसरे तरफ** विकारों की आग, **तीसरे तरफ** देह और देह के संबंध, पदार्थ के लगाव की आग, **चौथे तरफ** पश्चाताप की आग। चारों ओर आग ही आग दिखाई देगी। **तो ऐसे समय पर आप शीतलता की शक्ति वाली शीतलाओं के पास भागते हुए आयेंगे – 'सेकण्ड के लिए भी शीतल करो'।** ऐसे समय पर इतनी शीतलता की शक्ति स्वयं में जमा हो, जो चारों ओर की आग का स्वयं में सेक न लग जाए। चारों तरफ की आग मिटाने वाले, शीतलता का वरदान देने वाले, शीतला बन जाओ। **अगर जरा भी चारों प्रकार की आग में से किसी का भी अंश मात्र रहा हुआ होगा, तो चारों ओर की आग, अंश मात्र रही हुई आग को पकड़ लेगी। जैसे आग, आग को पकड़ लेती है ना। तो यह चेक करो।**

(1) **विनाश ज्वाला की आग्नि से बचने का साधन - निर्भयता की शक्ति है** -
निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। **निर्भयता के आधार से, विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच, शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी।** विनाश देखते भी, स्थापना के नजारे देखेंगे। उनके नयनों में एक आँख में मुक्ति, स्वीट होम (sweet Home), दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। **लोग चिल्लायेंगे 'हाय गया, हाय मरा' - और आप कहेंगे 'अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू (nothing new)!'**

(2) **ऐसे ही - विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है - अपने आदि-अनादि वंश को याद करो** -
अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदि वंश को याद करो, तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा।

(3) **ऐसे ही, तीसरी - देह, देह के सम्बन्ध और पदार्थ के ममता की आग - इस अग्नि से बचने का साधन है - बाप को संसार बनाओ** -
बाप ही संसार है तो बाकी सब असार हो जायेगा। लेकिन करते क्या हैं, वह फिर दूसरे दिन सुनायेंगे। **बाप ही संसार है, यह याद है - तो न देह, न सम्बन्ध, न पदार्थ रहेगा। सब समाप्त।**

(4) **चौथी बात - पश्चाताप की आग - इसका सहज साधन है - सर्व प्राप्ति स्वरूप बनना** -
अप्राप्ति पश्चाताप कराती है। प्राप्ति पश्चाताप को मिटाती है। अब हर प्राप्ति को सामने रख चेक करो। किसी भी प्राप्ति का अनुभव करने में रह तो नहीं गये हैं। प्राप्तियों की लिस्ट तो आती हैं ना। **अप्राप्ति समाप्त अर्थात् पश्चाताप समाप्त।**

अब इन चारों बातों को चेक करो, तब ही शीतलता स्वरूप बन जायेंगे। औरों की तपत को बुझाने वाले 'शीतल योगी व शीतला देवी' बन जायेंगे।

86] नष्टो-मोह: - चार बातों से न्यारे बनो

AV, Original 25.10.1987

(1) **अपने देह भान से न्यारा** -
जैसे साधारण दुनियावी आत्माओं को चलते-फिरते, हर कर्म करते, स्वत: और सदा देह का भान रहता ही है - मेहनत नहीं करते कि मैं देह हूँ, न चाहते भी सहज स्मृति रहती ही है। ऐसे कमल-आसनधारी ब्राह्मण आत्मायें भी इस देहभान से स्वत: ही ऐसे न्यारे रहें - जैसे अज्ञानी आत्म-अभिमान से न्यारे हैं। हैं ही आत्म-अभिमानी। शरीर का भान अपने तरफ आकर्षित न करे। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, चलते-फिरते फरिश्ता-रूप वा देवता-रूप स्वत: स्मृति में रहा। ऐसे नैचुरल देही-अभिमानी स्थिति सदा रहे - इसको कहते हैं, देहभान से न्यारे। देहभान से न्यारा ही परमात्म-प्यारा बन जाता है।

(2) **इस देह के जो सर्व सम्बन्ध हैं, दृष्टि से, वृत्ति से, कृति से - उन सबसे न्यारा** -
देह का सम्बन्ध देखते हुए भी स्वत: ही आत्मिक, देही सम्बन्ध स्मृति में रहे। इसलिए दीपावली के बाद, भैया-दूज मनाया ना? जब चमकता हुआ सितारा वा जगमगाता अविनाशी दीपक बन जाते हो, तो भाई-भाई का सम्बन्ध हो जाता है। आत्मा के नाते भाई-भाई का सम्बन्ध, और साकार ब्रह्मावंशी ब्राह्मण बनने के नाते से बहन-भाई का श्रेष्ठ शुद्ध सम्बन्ध स्वत: ही स्मृति में रहता है। तो न्यारापन अर्थात् देह और देह के सम्बन्ध से न्यारा।

(3) **देह के विनाशी पदार्थों में भी न्यारापन** -
अगर कोई पदार्थ किसी भी कर्मेन्द्रिय को विचलित करता है, अर्थात् आसक्ति-भाव उत्पन्न होता है, तो वह न्यारापन नहीं रहता। सम्बन्ध से न्यारा फिर भी सहज हो जाते - लेकिन सर्व पदार्थों की आसक्ति से न्यारा 'अनासक्त' बनने में, रॉयल (royal) रूप की आसक्ति रह जाती है। …
इसलिए, देह के पदार्थों की आसक्ति वा आधार से भी निराधार 'अनासक्त' होना है। अभी तो सब साधन अच्छी तरह से प्राप्त हैं, कोई कमी नहीं है। लेकिन साधनों के होते, साधनों को प्रयोग में लाते, योग की स्थिति डगमग न हो। योगी बन प्रयोग करना - इसको कहते हैं न्यारा। है ही कुछ नहीं, तो उसको न्यारा नहीं कहेंगे। **होते हुए निमित्त-मात्र अनासक्त रूप से प्रयोग करना - इच्छा वा अच्छा होने के कारण नहीं यूज करना - यह चेकिंग जरूर करो।**

(4) **पुराने स्वभाव, संस्कार से न्यारा बनना** -
पुरानी देह के स्वभाव और संस्कार भी बहुत कड़े हैं। मायाजीत बनने में यह भी बड़ा विघ्न-रूप बनते हैं। **कई बार बापदादा देखते हैं - पुराने स्वभाव, संस्कार रूपी सांप खत्म भी हो जाता, लेकिन लकीर रह जाती, जो समय आने पर बार-बार धोखा दे देती। यह कड़े स्वभाव और संस्कार कई बार इतना माया के वशीभूत बना देते हैं, जो रांग (wrong) को रांग (wrong) समझते ही नहीं। 'महसूसता-शक्ति' समाप्त हो जाती है। इससे न्यारा होना - इसकी भी चेकिंग अच्छी तरह चाहिए।**

इन चार ही बातों से न्यारा जो है - उसको कहेंगे बाप का प्यारा, परिवार का प्यारा।

97] अव्यक्त स्थिति स्वरूप द्वारा अव्यक्त मिलन का अनुभव

AV Original 21.01.1969
अव्यक्त स्थिति में जो होंगे, उन्होंने अव्यक्त मूर्त को जाना, पहचाना। **जो खुद नहीं अव्यक्त अवस्था में रहते थे, उन्हों ने अमूल्य रतन को पूरी रीति नहीं पहचाना।** अभी भी स्थापना का कार्य ब्रह्मा का है, न कि हमारा (शिव का)। **अभी भी आप बच्चों की पालना ब्रह्मा द्वारा ही होगी। स्थापना के अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है।**

शरीर छूटा परन्तु हाथ-साथ नहीं छूटा। बुद्धि का साथ-हाथ नहीं छूटा। वह तो अविनाशी कायम रहेगा।

AV Original 23.01.1969
आज मैं (ब्रह्मा बाप) आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। **जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वही इसको समझ सकेंगे।** आप सभी बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित हो किसको देख रहे हो? व्यक्त रूप में या अव्यक्त रूप में? आप व्यक्त हो या अव्यक्त? **अगर व्यक्त में देखेंगे, तो बाप को नहीं देख सकेंगे।**

अब जहाँ तक बच्चों की जितनी बुद्धि क्लीयर होगी, उसी अनुसार ही अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सकेंगे।

जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे, उतना उस अव्यक्त स्थिति से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म ऐसा होगा, जैसे श्रीमत राय दे रही है। यह अनुभव बच्चे पायेंगे।

AV Original 25.01.1969
अब साकार (ब्रह्मा बाप) तो अव्यक्त स्थिति स्वरूप में स्थित है। लेकिन **आप बच्चे भी अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे, तो अव्यक्त मुलाकात का अलौकिक अनुभव कर सकते हो।**

वैसे तो आप जब साकार (ब्रह्मा बाप) से साकार रीति से मिलते थे, तो आप की आकारी स्थिति बन जाती थी। **अब जितना-जितना अव्यक्त आकारी स्थिति में स्थित होंगे, उतना ही अलौकिक अनुभव करेंगे।**

AV Original 02.02.1969
इसलिए जो भी बच्चे चाहते हैं कि अव्यक्त बाप से मुलाकात करें, वह कर सकते हैं। कैसे कर सकते हैं? इसका तरीका सिर्फ यही है कि **अमृत-वेले याद में बैठो, और यही संकल्प रखो कि अब हम अव्यक्त बापदादा से मुलाकात करें।**

अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो। तो अनुभव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। और इसी रूह-रूहान में जैसे सन्देशियों को कई दृश्य दिखाते हैं, वैसे ही बहुत गुह्य, गोपनीय रहस्य बुद्धियोग से अनुभव करेंगे।

अमृतवेले भी अव्क्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे। वही अमृतवेले यह अनुभव कर सकेंगे। इसलिए अगर स्नेह है और मिलने की आशा है तो यह तरीका बहुत सहज है। **करने वाले कर सकते हैं, और मुलाकात का अनोखा अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।**

इस साकार वतन में रहते हुए भी फरिश्ते बन सकते हो। आप फिर कहेंगे आप वतन में जाकर फरिश्ता क्यों बनें? यहाँ ही बनते। लेकिन नहीं! जो बच्चों का काम वह बच्चों को साजे। जो (ब्रह्मा) बाप का कार्य है, वह बाप ही करते हैं।

तो यह भी संकल्प आता है कि ड्रामा का सीन जल्दी पूरा कर, सभी अव्यक्तवतन वासी बन जायें। बनना तो है। लेकिन **आप बच्चों में इतनी शक्ति है जो अव्यक्त वतन को भी व्यक्त में खींचकर ला सकते हो। अव्यक्त वतन का नक्शा व्यक्त वतन में बना सकते हो!**

याद हरेक की पहुँचती है, **उसका रेसपोंड लेने के लिए अवस्था चाहिए।** रेसपान्ड फौरन मिलता है। जैसे साकार में बच्चे 'बाबा' कहते थे, तो बच्चों को रेसपांड मिलता था। **तो रेसपान्ड अब भी फौरन मिलता है, लेकिन बीच में व्यक्त भाव को छोड़ना पड़ेगा, तब ही उस रेसपान्ड को सुन सकेंगे।**

102] ज्वालामुखी योग - संगठित स्वरूप की तपस्या

Avyakt Vani 07.04.1986, Revised on 18.10.2020

अपने संगठित स्वरूप के तपस्या की रूहानी ज्वाला से, सर्व आत्माओं को दु:ख अशान्ति से मुक्त करने का महान कार्य करने का समय है। जैसे एक तरफ, खूने-नाहक खेल की लहर बढ़ती जा रही है, सर्व आत्मायें अपने को बेसहारे अनुभव कर रहीं हैं, ऐसे समय पर सभी सहारे की अनुभूति कराने के निमित्त आप महातपस्वी आत्मायें हो। **चारों ओर इस तपस्वी स्वरूप द्वारा आत्माओं को रूहानी चैन अनुभव कराना है।**

“**It is NOW the TIME, to carry out the GREAT task of liberating ALL souls from sorrow and peacelessness, with the Spiritual FIRE of ‘tapasya’ - in your COLLECTIVE form.** Just as, on the one hand, the wave of ‘bloodshed without cause’ is CONTINUALLY increasing, and all souls are experiencing themselves to be without support – so also, at such a time, it is you GREAT ‘tapaswi’ souls, who are instrumental to give them the experience of COMPLETE support. **Through this ‘tapaswi’ form, you have to enable souls everywhere to experience Spiritual SOLACE (SUCCOUR, SUPPORT & SUSTENANCE).**”

अप्राप्त आत्मायें, प्राप्ति के बूँद की प्यासी बहुत हैं, इसलिए अभी संगठन में विधातापन की लहर फैलाओ। जो खजाने जमा किये हैं, वह जितना मास्टर विधाता बन देते जायेंगे, उतना भरता जायेगा। कितना सुना है; अभी करने का समय है! तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आवें। सिर्फ स्वयं के प्रति याद स्वरूप बन, शक्ति लेना वा मिलन मनाना, वह अलग बात है। लेकिन तपस्वी स्वरूप औरों को देने का स्वरूप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की, और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है - **ऐसे महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ। इसके लिए पहले जमा का खाता बढ़ाओ।**

“**Souls who have no attainment are VERY thirsty for a DROP of attainment. So, NOW spread the wave of being bestowers of fortune - COLLECTIVELY. The more that you, as Master bestowers of fortune, continue to give the treasures which you have accumulated, the more they will continue to increase.** You have heard so much; it is NOW the time to PERFORM! An image of ‘tapasya’ means that, through ‘tapasya’, rays of the ‘Power of Peace’ are experienced to be spreading everywhere (by everyone). Just to be an embodiment of remembrance for oneself, and to receive that Power, or to celebrate a Meeting, is a different matter. However, the form of ‘tapasya’ is the form of GIVING to others. Just as the sun gives the world the experience of light, and also of innumerable, perishable attainments - **similarly, with your GREAT form of ‘tapasya’, give the experience of the rays of (imperishable) attainment (to everyone). To do this, you first have to increase your (OWN) account of accumulation.**”

स्व कल्याण करने का समय बहुत बीत चुका। **अभी विधाता बनने का समय आ गया है, इसलिए बापदादा फिर से समय का इशारा दे रहे हैं।** अगर अब तक भी विधातापन की स्थिति का अनुभव नहीं किया, तो अनेक जन्म विश्व राज्य अधिकारी बनने के पद्मापदम भाग्य को प्राप्त नहीं कर सकेंगे, क्योंकि विश्वराजन विश्व के मात-पिता अर्थात् विधाता हैं - **अब के विधातापन का संस्कार अनेक जन्म प्राप्ति कराता रहेगा।** अगर अभी तक लेने के संस्कार, कोई भी रूप में हैं - नाम लेवता, शान लेवता वा किसी भी प्रकार के लेवता के संस्कार विधाता नहीं बनायेंगे।

"A lot of time has been spent in bringing benefit to yourselves. **The time to become bestowers of fortune (for others) has NOW come. This is why BapDada are once again giving you the signal of TIME.** If, even UNTIL now, you do not experience the stage of being a bestower of fortune (for others), you will not be able to attain the multi-million-fold fortune of having the right to World Sovereignty, for many births (during RamRajya) - because the World Sovereigns are like parents of the World, that is, they are bestowers of fortune (for others) - **the sanskars of being a bestower of fortune NOW, will enable you to have attainments for MANY births.** If, EVEN now, you have the sanskar of TAKING in any form - such as receiving any type of name or honour; or ANY type of sanskar of TAKING (or RECEIVING) – then, that will not enable you become a bestower of fortune."

अभी यह चार्ट रखो कि खुशी का खजाना, शान्ति का खजाना, शक्तियों का खजाना, ज्ञान का खजाना, गुणों का खजाना, सहयोग देने का खजाना कितना बांटा अर्थात् कितना बढ़ाया; इससे वह कामन चार्ट जो रखते हो, वह स्वत: ही श्रेष्ठ हो जायेगा। **पर-उपकारी बनने से, स्व-उपकारी स्वत: ही बन जाते।**

"**Now, keep a Chart of how many treasures of Happiness, treasures of Peace, treasures of Powers, treasures of Knowledge, treasures of Virtues, and treasures of giving Co-operation, you have distributed - and that you have, therefore, increased**; by doing this, the common Chart that you keep, will automatically become ELEVATED. **By becoming those who uplift others, you will AUTOMATICALLY uplift your (OWN) selves.**"

111] **स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी**

AV, Original 04.01.1980
जैसे राजा स्वयं कोई कार्य नहीं करता, कराता है। करने वाले राज्य कारोबारी अलग होते हैं। अगर राज्य कारोबारी ठीक नहीं होते, तो राज्य डगमग हो जाता है। **ऐसे आत्मा भी करावनहार है, करनहार ये विशेष त्रिमूर्ति शक्तियाँ हैं।** पहले इनके ऊपर रूलिंग पावर है, तो यह साकार कर्मेन्द्रियाँ उनके आधार पर स्वत: ही सही रास्ते पर चलेंगी। कर्मेन्द्रियों को चलाने वाली भी विशेष यह तीन शक्तियाँ हैं। **अब रूलिंग पावर कहाँ तक आई है - यह चेक करो।** …

जैसे सतयुगी सृष्टि के लिए कहते हैं – 'एक राज्य, एक धर्म है'। **ऐसे ही अब स्वराज्य में भी एक राज्य अर्थात् स्व के ईशारे पर सर्व चलने वाले हैं। एक धर्म अर्थात् एक ही धारणा सब की है कि सदा श्रेष्ठाचारी चढ़ती कला में चलना है।** मन अपनी मनमत पर चलावे, बुद्धि अपनी निर्णय शक्ति की हलचल करे, मिलावट करे, संस्कार आत्मा को भी नाच नचाने वाले हो जाएँ - तो इसको एक धर्म नहीं कहेंगे, एक राज्य नहीं कहेंगे। **तो आपके राज्य का क्या हाल है? त्रिमूर्ति शक्तियाँ ठीक हैं? कभी संस्कार बन्दर का नाच तो नहीं नचाते हैं? बन्दर क्या करता है - नीचे ऊपर छलांग मारता है ना? संस्कार की भी अभी-अभी चढ़ती कला, अभी-अभी गिरती कला!**

AV, Original 16.01.1984
स्वराज्य आप सभी का अनेक बार का बर्थ-राइट है। अब का नहीं। लेकिन बहुत-बहुत पुराना अनेक बार प्राप्त किया हुआ अधिकार याद है? याद है ना? अनेक बार स्वराज्य द्वारा विश्व का राज्य प्राप्त किया है। डबल राज्य अधिकारी हो। स्वराज्य और विश्व का राज्य।
स्वराज्य सदा के लिए राजयोगी सो राज्य अधिकारी बना देता है।
स्वराज्य त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के नॉलेजफुल अर्थात् त्रिलोकीनाथ बना देता है।
स्वराज्य सारे विश्व में कोटों में कोई, कोई में भी कोई विशेष आत्मा बना देता है।
स्वराज्य बाप के गले का हार बना देता है। भक्तों के सिमरण की माला बना देता है।
स्वराज्य बाप के तख्तनशीन बना देता है।
स्वराज्य सर्व प्राप्तियों के खज़ाने का मालिक बना देता है। अटल, अचल, अखण्ड सर्व अधिकार प्राप्त करा देता है।
ऐसे स्वराज्य अधिकारी श्रेष्ठ आत्मायें हो ना?

AV, Original 30.01.1985
हर एक स्वराज्य अधिकारी के आगे कितने दास-दासियाँ हैं? प्रकृति जीत और विकारों जीत। विकार भी 5 हैं, प्रकृति के तत्व भी 5 हैं। तो प्रकृति ही दासी बन गई है ना! दुश्मन सेवाधारी बन गये हैं। ऐसे रूहानी फखर (pride) में रहने वाले, विकारों को भी परिवर्तित कर **काम** विकार को शुभ कामना, श्रेष्ठ कामना के स्वरूप में बदल, सेवा में लगाने वाले, ऐसे दुश्मन को सेवाधारी बनाने वाले, प्रकृति के किसी भी तत्व की तरफ वशीभूत नहीं होते हैं। …

स्वराज्य अधिकारी आत्माओं के सेवाधारी बनेंगे। **तो अभी अपने को देखो 5 ही विकार दुश्मन से बदल सेवाधारी बने हैं? तब ही स्वराज्य अधिकारी कहलायेंगे।**
क्रोध अग्नि, योग अग्नि में बदल जाए।
ऐसे **लोभ** विकार, लोभ अर्थात् चाहना। हद की चाहना बदल शुभ चाहना हो जाए कि मैं सदा हर संकल्प से, बोल से, कर्म से निस्वार्थ बेहद सेवाधारी बन जाऊँ। मैं बाप समान बन जाऊँ - ऐसे शुभ चाहना अर्थात् लोभ का परिवर्तन स्वरूप। दुश्मन के बजाए, सेवा के कार्य में लगाओ।

मोह तो सभी को बहुत है ना। बापदादा में तो मोह है ना? एक सेकेण्ड भी दूर न हों - यह मोह हुआ ना! लेकिन यह मोह सेवा कराता है। जो भी आपके नयनों में देखे तो नयनों में समाये हुए बाप को देखे। जो भी बोलेंगे मुख द्वारा बाप के अमूल्य बोल सुनायेंगे। तो मोह विकार भी सेवा में लग गया ना? बदल गया ना?
ऐसे ही **अहंकार**। देह-अभिमान से देही-अभिमानी बन जाते। शुभ अहंकार अर्थात् ईश्वरीय नशा सेवा के निमित्त बन जाता है।
तो ऐसे पाँचों ही विकार बदल सेवा का साधन बन जाए, तो दुश्मन से सेवाधारी हो गये ना! तो ऐसे चेक करो मायाजीत, प्रकृति जीत कहाँ तक बने हैं? राजा तब बनेंगे जब पहले दास-दासियाँ तैयार हों। जो स्वयं दास के अधीन होगा, वह राज्य अधिकारी कैसे बनेगा?

AV, Original 21.01.1987
कई बच्चे रूह-रूहान करते हुए बाप से पूछते हैं कि 'हम भविष्य में क्या बनेंगे, राजा बनेंगे या प्रजा बनेंगे?' **बापदादा बच्चों को रेसपाण्ड करते हैं कि अपने आपको एक दिन भी चेक करो तो मालूम पड़ जायेगा कि मैं राजा बनूँगा वा साहूकार बनूँगा वा प्रजा बनूँगा।** पहले अमृतवेले से अपने मुख्य तीन कारोबार के अधिकारी, अपने सहयोगी, साथियों को चेक करो। वह कौन?
1. मन अर्थात् संकल्प शक्ति।
2. बुद्धि अर्थात् निर्णय शक्ति।
3. पिछले वा वर्तमान श्रेष्ठ संस्कार।
यह तीनों विशेष कारोबारी हैं।
जैसे आजकल के जमाने में राजा के साथ महामन्त्री वा विशेष मन्त्री होते हैं, उन्हीं के सहयोग से राज्य कारोबार चलती है। सतयुग में मन्त्री नहीं होंगे लेकिन समीप के सम्बन्धी, साथी होंगे। किसी भी रूप में, साथी समझो वा मन्त्री समझो। लेकिन **यह चेक करो - यह तीनों स्व के अधिकार से चलते हैं? इन तीनों पर स्व का राज्य है, वा इन्हों के अधिकार से आप चलते हो? मन आपको चलाता है, या आप मन को चलाते हैं? जो चाहो, जब चाहो वैसा ही संकल्प कर सकते हो? जहाँ बुद्धि लगाने चाहो, वहाँ लगा सकते हो - वा बुद्धि आप राजा को भटकाती है? संस्कार आपके वश हैं, या आप संस्कारों के वश हो? राज्य अर्थात् अधिकार। राज्य-अधिकारी जिस शक्ति को जिस समय जो आर्डर करे, वह उसी विधिपूर्वक कार्य करते - वा आप कहो एक बात, वह करें दूसरी बात? क्योंकि निरन्तर योगी अर्थात् स्वराज्य अधिकारी बनने का विशेष साधन ही मन और बुद्धि है। मन्त्र ही 'मन्मनाभव' का है।**

AV, Original 12.11.1992
स्वराज्य अधिकारी आत्माओं की विशेष नीति है - जैसे राजा अपने सेवा के साथियों को, प्रजा को जैसा, जो ऑर्डर करते हैं, उस ऑर्डर से, उसी नीति प्रमाण साथी वा प्रजा कार्य करते हैं। **ऐसे आप स्वराज्य अधिकारी आत्माएं अपनी योग की शक्ति द्वारा हर कर्मेन्द्रिय को जैसा ऑर्डर करती हो, वैसे हर कर्मेन्द्रिय आपके ऑर्डर के अन्दर चलती है? न सिर्फ यह स्थूल शरीर की सर्व कर्मेन्द्रियां लेकिन मन, बुद्धि, संस्कार भी आप राज्य-अधिकारी आत्मा के डायरेक्शन प्रमाण चलते हैं?** जब चाहो, जैसे चाहो - वैसे मन अर्थात् संकल्प शक्ति को वहाँ स्थित कर सकते हो? अर्थात् मन, बुद्धि, संस्कार के भी राज्य-अधिकारी। संस्कारों के वश नहीं, लेकिन संस्कार को अपने वश में कर श्रेष्ठ नीति से कार्य में लगाते हो - श्रेष्ठ संस्कार प्रमाण सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो? **तो स्वराज्य की नीति है - मन, बुद्धि, संस्कार और सर्व कर्मेन्द्रियों के ऊपर स्व अर्थात् आत्मा का अधिकार। अगर कोई कर्मेन्द्रियां - कभी आंख धोखा देती, कभी बोल धोखा देता, वाणी अर्थात् मुख धोखा देता, संस्कार अपने कन्ट्रोल में नहीं रहते - तो उसको स्वराज्य अधिकारी नहीं कहेंगे, उसको कहेंगे-स्वराज्य अधिकार के पुरुषार्थी। अधिकारी नहीं लेकिन पुरुषार्थी।** वास्तव में राज्य-अधिकारी आत्मा को स्वप्न में भी कोई कर्मेन्द्रिय वा मन, बुद्धि, संस्कार धोखा नहीं दे सकते। क्योंकि अधिकारी हैं, **अधिकारी कभी अधीन नहीं हो सकता।** …

देखो, आजकल के राज्य में भी अगर कोई कुर्सी पर है तो उसका अधिकार है - और कल कुर्सी से उतर आता तो उसका अधिकार रहता है? साधारण बन जाता है। तो आप भी स्वराज्य के नशे में रहते हो, अकाल तख्तनशीन रहते हो। सभी के पास तख्त है ना? तो तख्त को छोड़ते क्यों हो? सदा तख्तनशीन रहो, रूहानी नशे में रहो। …

स्व पर राज्य, हर कर्मेन्द्रिय के ऊपर अधिकार हो। **ऐसे नहीं कि देखने तो नहीं चाहते थे लेकिन देख लिया। आंखें खुली थीं ना, इसलिए देखने में आ गया। कान को दरवाजा नहीं है, इसलिए कान में बात पड़ गई।** लेकिन दो कान हैं। अगर ऐसी बात सुन भी ली तो निकालने का भी रास्ता है। इसलिए इस भारत में ही विशेष यह चित्र बापू की याद में बना हुआ है – 'बुरा न देखो, बुरा न सुनो, बुरा न बोलो'। यह तीन दिखाते हैं, आप चार दिखाते हो। बुरा सोचो भी नहीं। क्योंकि पहले सोचना होता, फिर बोलना होता, फिर देखना होता है। तो इसलिए कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर रखो। राजा अर्थात् रूलिंग पॉवर। राजा हो और रूलिंग पॉवर हो ही नहीं, तो कौन राजा मानेगा? तो स्वराज्य अर्थात् रूलिंग पॉवर, कन्ट्रोलिंग पॉवर। …

तो कन्ट्रोलिंग पॉवर का, वा ब्रेक लगाने का अर्थ यह नहीं कि लगाओ यहाँ और ब्रेक लगे वहाँ। कोई व्यर्थ को कन्ट्रोल करने चाहते हैं, समझते हैं - यह रांग है। तो उसी समय रांग को राइट में परिवर्तन होना चाहिए। इसको कहा जाता है कन्ट्रोलिंग पॉवर। **ऐसे नहीं कि सोच भी रहे हैं, लेकिन आधा घण्टा व्यर्थ चला जाये, पीछे कन्ट्रोल में आये। बहुत पुरूषार्थ करके आधे घण्टे के बाद परिवर्तन हुआ तो उसको कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं, रूलिंग पॉवर नहीं कहा जाता। यह हुआ थोड़ा-थोड़ा अधीन और थोड़ा-थोड़ा अधिकारी- मिक्स। तो उसको राज्य-अधिकारी कहेंगे या पुरुषार्थी कहेंगे? तो अब पुरुषार्थी नहीं, राज्य-अधिकारी बनो।** यह स्वराज्य अधिकार का श्रेष्ठ मज़ा है। …

इसलिए कहा - नम्बरवन राज्य है स्वराज्य, फिर है विश्व-राज्य और तीसरा है द्वापर-कलियुग का अलग-अलग स्टेट (state) का राज्य। …

अगर विश्व-सेवाधारी नहीं बनेंगे तो न स्वराज्य, न विश्व-राज्य, फिर द्वापर-कलियुग में स्टेट का राजा बनना पड़ेगा। लेकिन विश्व-राज्य अधिकारी के लिए सदा अपना ताज, तिलक और तख्त - सदा इस पर स्थित रहो। शरीर से तख्त पर नहीं बैठना है - लेकिन बुद्धि द्वारा स्मृति की स्थिति से स्थित रहना है।